हिन्दी अंक 17 : मार्च, 2018
चौ-मासिक, बेंगलूरु

Azim Premji University

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी

लर्निंग कर्व

कक्षा-कक्ष अनुभव : भाग दो

सम्पादन समिति

प्रेमा रघुनाथ, मुख्य सम्पादक
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
पी.ई.एस. कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग कैम्पस,
इलेक्ट्रॉनिक सिटी, बेंगलूरु
prema.raghunath@azimpremjifoundation.org

चन्द्रिका मुरलीधर
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
पी.ई.एस. कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग कैम्पस,
इलेक्ट्रॉनिक सिटी, बेंगलूरु
chandrika@azimpremjifoundation.org

मधुमिता सुधाकर
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
पी.ई.एस. कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग कैम्पस,
इलेक्ट्रॉनिक सिटी, बेंगलूरु
madhumita@azimpremjifoundation.org

सम्पादकीय कार्यालय
सम्पादक
अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
पी.ई.एस. कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग कैम्पस,
इलेक्ट्रॉनिक सिटी, बेंगलूरु 560 100
Phone: 080-66145136 / 5272
Fax: 080-66145230
Email: publications@apu.edu.in
Website: www.azimpremjiuniversity.edu.in.in

सलाहकार
सचिन मुले
एस. गिरिधर
उमाशंकर पेरिओडी

इस अंक के विशेष सलाहकार
निमरत खण्डपुर
शोभा लोकनाथ कवूरी

हिन्दी अनुवाद
नलिनी रावल
सुजाता

कॉपी एडिटर (हिन्दी)
कविता तिवारी
स्वाति भदौरिया

हिन्दी अंक सम्पादन
राजेश उत्साही

आवरण चित्र सौजन्य
जगजोत सेठी

डिज़ाइन
Banyan Tree
98458 64765

हिन्दी अंक लेआउट
आदर्श प्रा.लि. भोपाल
+91-755-2555442

कृपया ध्यान दें :
इस अंक में प्रकाशित लेख मूलत: अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व (अँग्रेज़ी) अंक 29, मार्च 2018 के लेखों के हिन्दी अनुवाद हैं। यह अनुवाद अप्रैल,2022 में ई-कॉपी के रूप में तैयार एवं ऑनलाइन प्रकाशित हुआ है। लेखों में व्यक्त विचार और दृष्टिकोण लेखकों के अपने हैं, उनसे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन या अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

'' अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का एक प्रकाशन है। इसका उद्देश्य शिक्षकों, शिक्षक-अध्यापकों, स्कूल प्रमुख, शिक्षा अधिकारियों, अभिभावकों और ग़ैर-सरकारी संगठनों तक ऐसे प्रासंगिक और विषयगत मुद्दों में पहुँच बनाना है जो उनके रोजमर्रा के काम से सम्बन्धित हैं। लर्निंग कर्व शैक्षिक जगत के विभिन्न दृष्टिकोणों, अभिव्यक्तियों, परिप्रेक्ष्यों, नई जानकारियों और नवाचार की कहानियाँ प्रस्तुत करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इसका मूल विचार 'शैक्षणिक' और 'अभ्यासकर्ता' के मध्य सन्तुलन हेतु उन्मुख पत्रिका के रूप में स्थापित होना है।''

सम्पादक की ओर से

कक्षा का अनुभव अद्भुत होता है— हममें से प्रत्येक के लिए यह अलग होता है। यही वजह है कि जब लोग अपने स्कूल को याद करते हैं तो एक ही विषय या शिक्षक के बारे में उनकी राय अलग-अलग हो सकती है। शिक्षकों की बात करें तो जिस कक्षा को वह पढ़ाते हैं उसके साथ उनका रिश्ता भी अनूठा होता है। यह एक गतिशील और बुनियादी प्रक्रिया है।

जब हमने तय किया था कि यह अंक कक्षा में होने वाले आदान-प्रदान और कक्षा की जीवन्तता पर केन्द्रित होगा तो हमने नहीं सोचा था कि हमें इतने अधिक लेख मिलेंगे। यह लेख इतने शानदार थे कि वास्तव में इनमें से एक भी लेख को छोड़ना सम्भव नहीं था। इसीलिए हमने इस विषय को दो अंकों में देने का विचार किया।

इस अंक के लेखों में भी वही चिन्ताएँ, भागीदारी और विचारशीलता देखने को मिलती है जो पहले भाग के लेखों में थी। इस अंक में कई तरह के लेख हैं— भाषा-शिक्षण पर, गणित के ज़रिए भाषा-शिक्षण पर और कक्षा में बैठने की व्यवस्था व सीखने पर इसके प्रभाव पर भी एक बहुत ही दिलचस्प लेख है। विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के शिक्षण पर एक बहुत ही जानकारीपूर्ण लेख भी इस अंक में शामिल है।

चूँकि बच्चों के जीवन में शिक्षकों का स्थाई महत्त्व होता है, इसलिए आदान-प्रदान— जानकारियों, अनुभवों और विचारों का आदान-प्रदान —बुनियादी आवश्यकता है। हम उम्मीद करते हैं कि हमारे पाठक इसे उपयोगी पाएँगे और अपनी खोजों के बारे में हमें लिखेंगे। कौन-सा विचार काम आया, कौन-सा नहीं काम आया और कौन-सा विचार सोचे गए तरीक़े से पूरी तरह से अलग ढंग से काम आया— इन लेखों में इन्हीं बातों पर ज़ोर है।

एक बार फिर हम राजेश उत्साही और उनकी टीम के शुक्रगुज़ार हैं जिन्होंने अनुवाद के कार्य में हमारी बेशक़ीमती मदद की।

इस अंक के बारे में आपके विचारों का स्वागत है और हम चाहते हैं कि आप अपनी रचनाएँ भी हमें भेजें।

प्रेमा रघुनाथ
सम्पादक
prema.raghunath@azimpremjifoundation.org

अनुवाद : कविता तिवारी

इस अंक में

कैसे करें अनुशासित? 04
रजनी द्विवेदी

बच्चों के साथ मेरे अनुभव 08
बासुदेव भट्ट

भाषा-शिक्षण : एक अनुभव 09
छोटे लाल तंवर

मेरी पहली कक्षा 12
दीपा बिष्ट

अब इन्हें कैसे बैठाऊँ? 14
गजेन्द्र कुमार देवांगन

बातचीत : एक मज़ेदार टीएलएम 16
जनक राम

नज़रिया अपना-अपना 19
ललिता यदुवंशी

स्कूल असेम्बली का उपयोग और उद्देश्य 21
मोनिका भण्डारी

समग्र भाषा पद्धति : मेरा अनुभव 24
मोनू कुमार शास्त्री

सीखना द्वन्द से आनन्द तक 26
नरेन्द्र कोठियाल

मैंने बच्चों से क्या सीखा? 28
नेहा मिश्रा

मैं बड़ा हूँ या छोटा, या कुछ भी नहीं? 31
नेमाराम चौधरी

एक नया अध्याय 34
पूर्णिमा हेगड़े

सामाजिक विज्ञान की कक्षा में समानुभूति की झलक 36
प्रकाश चन्द्र गौतम

मेला : जिसमें गणित का नया रूप मिला 40
प्रमोद चन्द्र पाण्डेय

मिठाई में गणित 43
प्रमोद काण्डपाल

गणित में भाषा का विकास 45
राहुल सिंह राठौर

पाठ-योजना तैयार करना 48
रमेश एस.राठौड़

एक पन्ना मेरी डायरी से 53
रवि प्रताप सिंह

बच्चों के अनुभव एवं सामाजिक मुद्दों के साथ जुड़ाव 55
साहबुद्दीन अंसारी

बच्चों के व्यवहार पर चिन्तन 58
शिप्रा अग्रवाल

जब प्रश्न, उत्तर बन जाते हैं 61
श्री सिंह कुरियल

सीखने में कठिनाई महसूस करने वाले विद्यार्थियों को समझ के साथ पढ़ने में सहायता देने के लिए पाठ का अनुकूलन 63
वीना वेंकटरामू, श्वेता चन्द्रशेखर, नेहा पन्त

कैसे करें अनुशासित?

रजनी द्विवेदी

परिचय

स्कूल की बात हो, कक्षा की बात हो या बच्चों की बात हो अनुशासन का जिक्र आ ही जाता है। बच्चों को स्कूल भेजने का एक उद्देश्य यह भी होता है कि बच्चे अनुशासित होना सीखेंगे। समाज के विभिन्न कार्यों में उनकी भूमिका के बारे में सोचते हुए उन्हें किसी-न-किसी तरह स्कूल में अनुशासन सिखाने का प्रयास किया ही जाएगा व किसी हद तक यह सिखा ही दिया जाएगा। यहाँ यह तर्क नहीं दिया जा रहा कि किसी भी तरह का कार्य ढंग व कार्य पद्धति ही नहीं होनी चाहिए, पर उसका स्वरूप, ढंग व मात्रा सभी विश्लेषण की माँग करते हैं। वैसे तो कुछ हद तक हर स्कूल की अनुशासन की अपनी समझ होती है लेकिन जो सबसे प्रचलित और अधिकांश स्कूलों में मौजूद समझ है उसके अनुसार अनुशासन में रहना और दण्ड दिया जाना दो अलग-अलग बातें नहीं बल्कि लगभग एक ही बात है। इनका अलग-अलग कोई अस्तित्व नहीं है। अतः दण्ड के सिद्धान्त पर तो कोई मतभेद नहीं है किन्तु इसकी मात्रा व क़िस्म के बारे में कभी-कभी चिन्ता व्यक्त की जाती है। शिक्षक ही नहीं बल्कि अधिकांश माता-पिता भी यही मानते हैं कि अनुशासन बच्चे मार-पिटाई अथवा डाँट-फटकार से ही सीख सकते हैं। हालाँकि कुछेक परिवारों के माता-पिता को बच्चों की पिटाई का विचार ठीक नहीं लगता पर वे भी बच्चों को अनुशासित करने के लिए पुरस्कार या लालच की भावना में विश्वास करते हैं। लेकिन सवाल यह है कि क्या अनुशासन को समझने का कोई और ढंग भी हो सकता है जो मूलतः इस सबसे अलग हो। और दूसरा यह कि अनुशासन में लाने व बाँधकर सिखाने के ये ही कुछ दो-चार हथकण्डे हैं अथवा और भी हैं और आख़िर में यह भी समझने का प्रयास करेंगे कि क्या ऐसा भी हो सकता है कि ये बात कुछ और ही है। इस लेख में मैं आपसे एक स्कूल में बच्चों के साथ कार्य करने का अपना अनुभव साझा करते हुए स्कूल व कक्षा के सन्दर्भ में अनुशासन पर बात करूँगी।

कक्षा और बच्चे

इस पड़ताल की शुरुआत एक अन्य प्रयास के सन्दर्भ में उभरी। यह प्रयास इस बात को पता करने का था कि बच्चे नई बनी पाठ्यपुस्तकों से कैसे अन्तःक्रिया करते हैं। ये पाठ्यपुस्तकें उनके लिए कितनी उपयुक्त हैं व कुछ ऐसे ही और सवाल। इन सवालों को लेकर मैंने और मेरे साथियों ने कुछ कक्षाओं के साथ काम करने का निश्चय किया। प्रधान शिक्षक, शिक्षक इत्यादि सभी से बातचीत करने के बाद हम सभी ने अपने-अपने लिए स्कूल और फिर उस स्कूल में कक्षाओं का चयन किया। मैंने भी एक स्कूल और उस स्कूल में एक कक्षा, कक्षा तीन को अपने कार्य के लिए चुना। हमारी योजना के अनुसार हमें पहले तीन दिन कक्षा का अवलोकन करना था ताकि हम कक्षा को व उसमें बच्चों को समझ सकें। और साथ ही यह भी देखें कि पुस्तकों को लेकर बच्चों के साथ क्या काम करेंगे और कैसे? अवलोकन के तीनों दिन ठीक-ठाक गुजरे। शायद इसलिए कि मुझे कुछ ख़ास करने की ज़रूरत नहीं थी। शिक्षक पढ़ा रहे थे और मुझे अवलोकन कर रिपोर्ट लिखनी थी। चौथे दिन शिक्षक ने कक्षा मुझे सौंप दी। उनको किसी प्रशिक्षण में जाना था।

बच्चों को शायद पता चल गया था कि आज उनके शिक्षक नहीं हैं, और आज से मैं ही उन्हें पढ़ाऊँगी। दूर से ही मुझे पता चल गया कि कक्षा में बहुत शोरगुल हो रहा था। बच्चे खेल रहे थे। यहाँ से वहाँ भाग रहे थे। एक-दूसरे से दरियों के लिए छीना-झपटी कर रहे थे (क्योंकि दरियों की कमी थी)। शोरगुल की वज़ह से उनको एक-दूसरे से चीख-चीखकर बात करनी पड़ रही थी, और जब मैंने कक्षा में प्रवेश किया तो मुझे भी बच्चों को चीख-चीखकर निर्देश देने पड़े। "बैठ जाओ, बैठ जाओ, शोर नहीं, कृपया बैठ जाओ।" कुछ शान्ति हुई। मैंने सोचा अब काम शुरू करते हैं। बच्चों को अपनी हिन्दी की पुस्तक निकालने को कहा। जो पाठ मैंने चुना था उसे निकालने के लिए कहा। पाठ की तस्वीर दिखाई। कुछ बच्चे निकाल पाए। कुछ अन्य की मैंने मदद करनी शुरू की। बमुश्किल दो मिनट ही हुए होंगे कि आवाज़ आई, "मैडम, क्या मैं पानी पी आऊँ?" मैंने भी "हाँ" कह दिया। कुछ बोलने वाली थी कि दूसरी आवाज़ सुनाई दी, "मैं भी जाऊँ?" हर दूसरे मिनट कोई-न-कोई बच्चा मुझसे कभी पानी पीने तो कभी टॉयलेट जाने की अनुमति माँग रहा था। और तब तो हद हो गई जब एक घण्टा होने पर छोटी छुट्टी की घण्टी बजी और कक्षा में से बच्चे बाहर की ओर ऐसे निकले जैसे मुम्बई की किसी खचाखच भरी रेल से लोग बाहर निकलते हैं। बड़ी धक्का-मुक्की थी, शोर था और जब वापस आने की घण्टी लगी तो बहुत से बच्चे नहीं आए। तब मुझे ही कुछ बच्चों को भेजकर उनको बुलाना पड़ा। मुझे लगा आज पहला दिन है शायद इसलिए ऐसा हो रहा है। लेकिन दूसरे दिन, तीसरे दिन भी ऐसा

ही हुआ। मैं यह समझ ही नहीं पा रही थी कि कक्षा में हो क्या रहा है? मैं थोड़ी चिन्तित भी थी कि क्योंकि कुछ बच्चे ज़रूर मेरी बात सुन लेते थे लेकिन पूरी कक्षा के साथ कुछ ख़ास काम मैं नहीं कर पा रही थी। बड़ी उलझन थी। बच्चों को मारना तो अनुचित है, अतः यह तो नहीं किया जा सकता। फिर क्या किया जाए? सोचा उनसे कम-से-कम अपनी परेशानी तो साझा करूँ। अतः मैंने उनसे कहा कि देखो अगर तुम ऐसे ही शोर मचाते रहोगे तो मैं पढ़ा ही नहीं सकती, क्योंकि कौन क्या बोल रहा है कुछ समझ ही नहीं आता। ज़ोर-ज़ोर से बोलना पड़ता है और इससे मेरा गला भी दर्द करने लगता है। इसलिए शोर नहीं, बात करने की मनाही नहीं है लेकिन ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर बात करना बिलकुल मना है। और बहुत ज़रूरी हो, कुछ पूछना है, बताना है तभी बात करो बाक़ी नहीं। दूसरी बात, प्रार्थना के बाद सब कक्षा में पानी पीकर, टॉयलेट जाकर आएँगे और फिर छोटी छुट्टी से पहले कोई छुट्टी नहीं माँगेगा। (चूँकि कक्षा में कोई घड़ी नहीं थी इसलिए मैंने बोर्ड पर ही एक घड़ी बना दी थी। कक्षा शुरू होती तो काँटा 10:15 पर होता। मैंने बच्चों से कह दिया था कि जब 11 बजेंगे तब मैं भी काँटों को आगे बढ़ाकर घड़ी में 11 बजा दूँगी और तब वे बाहर जा सकते हैं।) दरियों की खींचतान, बैग फेंकना, एक-दूसरे को मारना सब बन्द। दरी बिछाओ और एक-एक करके सब बैठो, ऐसे तो जो दरियाँ हैं वे भी फट जाएँगी।

धीरे-धीरे मुझे लगने लगा कि बच्चों को कुछ बात समझ आई है। अब शोर थोड़ा कम हुआ और बार-बार बाहर जाने के लिए अनुमति माँगना भी। कक्षा में कुछ काम हुआ। यद्यपि कभी-कभार बच्चे भूल भी जाते थे और ज़ोर-ज़ोर से बात करने लगते थे, या छुट्टी भी माँगने आ जाते थे लेकिन लग रहा था कि वे बात समझ रहे हैं। स्थिति पहले से बेहतर थी यह जाहिर था। हम कुछ काम भी कर पा रहे थे। लेकिन हर दो-तीन दिन में कुछ-न-कुछ ऐसा नया हो ही जाता था कि मुझे लगता इस बारे में क्या किया जाए? जैसे, कक्षा में ही खाना लेकिन खाना खाने के बाद कक्षा की सफ़ाई न करना, जूतों को इधर-उधर फेंक देना, कक्षा के फर्नीचर को ज़ोर-ज़ोर से इधर-उधर खिसकाना, उन पर लिखना, दरियों को ठीक से न बिछाना, कक्षा में कॉपी चैक करवाने के लिए, कुछ पूछने के लिए, अथवा दिया गया कार्य करने के लिए अपनी बारी का इन्तज़ार न करना, कभी-कभार एक-दूसरे को मारना-पीटना, कक्षा में समय पर न आना आदि-आदि...। इन सभी बातों से मुझे लगता था कि बच्चों को कुछ नियमों को समझने की ज़रूरत है ताकि न केवल कक्षा का कामकाज सुचारू रूप से चल सके बल्कि बच्चे यह भी समझें कि यह कक्षा, यह स्कूल जिसमें वे पढ़ रहे हैं उनके अपने हैं और इनका ध्यान रखना उनकी भी ज़िम्मेदारी है। इन सबके सन्दर्भ में बच्चे स्वयं समझें। इस दिशा में कुछ काम किए गए जैसे, बच्चों के साथ इन मुद्दों पर बात करना। क्या ऐसा करना ठीक है, नहीं है, क्यों नहीं है, उन्हें अपनी परेशानी, सीमाएँ बताना, उनकी परेशानियों, अपेक्षाओं को सुनना-समझना। उनके साथ मिल-जुलकर काम करना जैसे मिलकर कक्षा की सफ़ाई करना, दरियाँ बिछाना, जूतों को जमाना आदि-आदि। धीरे-धीरे बहुत-सी चीज़ें ठीक हुईं। यह नहीं था कि कक्षा में बच्चों की बातचीत बन्द हो गई, या उन्होंने कॉपी चैक करवाना बन्द कर दिया या एक-दूसरे से लड़ाई होने पर प्रतिक्रिया देना बन्द कर दिया। बस इन चीज़ों को करने के तरीक़ों में कुछ बदलाव हुआ जिससे कक्षा का कामकाज सुचारू रूप से चलने लगा।

एक बात और इस सन्दर्भ में रेखांकित करना चाहूँगी। इन शुरुआती दिनों में, जब मैं कक्षा को बिलकुल नहीं सम्भाल पा रही थी, कुछ और बातें भी हुईं। कक्षा के कुछ बच्चों ने कहा, "आप सबसे कहो कि आप इनकी शिकायत फलाँ गुरुजी से कर दोगे। देखना, सब चुप हो जाएँगे।" कक्षा पाँच के एक-दो बच्चे मेरी कक्षा में आए और उन्होंने मुझसे कहा, "मैडम आपको हमारी मदद चाहिए तो कहो, एक बार में इन सबको चुप करा देंगे। आपको नहीं आता चुप कराना, हमें आता है।" दूसरे शब्दों में, आप यदि इन बच्चों को नहीं मारना चाहतीं तो ठीक है, हमें मारने की अनुमति दे दीजिए। ये एकदम ठीक हो जाएँगे। यानी एक ही तरीक़ा है बच्चों को तौर-तरीक़े सिखाने यानी अनुशासित करने का – दो-चार डण्डे लगाइए और बस। उन बच्चों ने भी स्कूल में पाँच साल पढ़ते हुए यह समझ लिया था कि स्कूल के तौर-तरीक़े यानी कि अनुशासन, या कहें कि नियमों का पालन करना, निर्देशों का पालना करना डण्डे की मार से ही समझ आ सकता है और कोई तरीक़ा नहीं है। पुनः बच्चों की ही बात नहीं अधिकांश लोग चाहे माता-पिता हों या शिक्षक सभी यही मानते हैं कि बिना दण्ड के बच्चे अनुशासन नहीं सीख सकते अथवा नियम और तौर-तरीक़े, उपयुक्त व्यवहार करना नहीं सीख सकते।

अनुशासन की समझ

इस सन्दर्भ में एक बिन्दु तो यह है कि 3-4 साल की उम्र तक आते-आते बच्चे बहुत कुछ सीख जाते हैं। यह भी कि बच्चों में सीखने की असीम क्षमता होती है और वे विभिन्न चीज़ों को ऐसे सोख लेते हैं जैसे कि एक स्पंज पानी को। भाषा के सन्दर्भ में यह बात अक्सर कही जाती है लेकिन यह भाषा ही नहीं बल्कि आदतों, दूसरों के साथ अन्तःक्रिया करने के तरीक़ों यथा बातचीत, उनकी बात को सुनना, उसकी प्रतिक्रिया कैसे देनी है, देनी है या नहीं, किस स्थिति में कैसे व्यवहार करना है यह सब भी सीख लेते हैं और दिन-ब-दिन इस सन्दर्भ में अपनी समझ को बढ़ाते भी रहते हैं। और यह सब वे हम वयस्कों के साथ रहते हुए, हमसे बातचीत करते हुए ही सीखते हैं। अतः बच्चे क्या सीखते हैं और कैसे सीखते हैं यह बहुत कुछ हमारे

ऊपर भी निर्भर करता है। यदि हम उन्हें निर्देश ही देते रहें जैसा कि घरों में और स्कूलों में आम तौर पर होता है, यह नहीं करो, यह ऐसे करो, चलो चुपचाप बैठ जाओ, मिट्टी से नहीं खेलो, कतार में खड़े हो जाओ, चुपचाप बिना कोई हरकत करे प्रार्थना करो, बातें नहीं करो, लाइन बनाकर चलो वग़ैरह-वग़ैरह। कभी भी बच्चों से इस बारे में बात नहीं की जाती कि ये सारे निर्देश क्यों हैं उनके लिए? मुझे यह भी महसूस हुआ कि बच्चों को हम कैसे देखते हैं, उनके बारे में, उनकी क्षमताओं के बारे में हमारा क्या दृष्टिकोण है इसका अनुशासन क्या होगा, कैसे होगा इस पर फर्क़ पड़ता है – बच्चों को बच्चे समझना यानी ये तो अभी छोटे हैं, इन्हें कुछ समझ नहीं आता, या इस बारे में इनसे बात नहीं की जा सकती क्योंकि इन्हें तो समझ ही नहीं आएगी ये सब ग़लत विश्वास हैं।

दूसरा बिन्दु यह है कि वर्षों पहले (आज से 90 साल पहले) गाँधीजी ने नई तालीम की पाठ्यचर्या में स्व-अनुशासन के बारे में बहुत कुछ कहा और लिखा भी। उसमें सबसे मुख्य बात यही थी कि शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य यह है कि बच्चे स्व-अनुशासन सीखें, और यह कि अनुशासन बच्चों पर थोपा नहीं जा सकता, जैसा कि शर्मा अपने पर्चे में कहती हैं ," यह (नई तालीम) ज्ञान और कर्म का एकीकरण है जिसके परिणामस्वरूप आनन्द मिलता है। यह अहिंसा की शिक्षा है। यह स्वतंत्रता और आपसी सहयोग पर आधारित है। और उद्देश्य भय से मुक्त होना है। यह शरीर की ज़रूरतों की आत्मनिर्भरता और स्वतंत्र और आलोचनात्मक सोच और ज्ञान के लिए है। यह मानता है कि शिक्षा से विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना का विकास होना चाहिए, साथ ही दूसरों के सहयोग से काम करने की प्रवृत्ति और आदतों का विकास होना चाहिए। नई तालीम का सामाजिक सिद्धान्त यह है कि सभी मनुष्यों का समान रूप से सम्मान किया जाना चाहिए और शिक्षा को जीवन से घनिष्ठ और सामंजस्यपूर्ण रूप से जोड़ा जाना चाहिए। शिक्षा का लक्ष्य आत्म-अनुशासन प्राप्त करना और चरित्र का निर्माण करना है और व्यक्ति को बाहरी रूप से थोपे गए अनुशासन पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। नई तालीम सीखने की एक सतत प्रक्रिया है।'' (शर्मा, 2017)

बच्चे अनुशासन तब सीखेंगे जब उन्हें भी ज़िम्मेदारियाँ दी जाएँगी। उनको अपनी बात कहने की, जो कार्य वे करना चाहते हैं उसकी स्वतंत्रता दी जाएगी, उनकी बात को समझा जाएगा, उसको तवज्जो दी जाएगी, तभी उन्हें यह महसूस होगा कि कक्षा में, स्कूल में, समाज में उनकी भी कोई भूमिका है। और यह सब कुछ अगर शिक्षक के साथ हो, उसके व उसको सहयोग के लिए हो, तो उसका वास्तविक गहरा असर होगा। स्कूल बढ़िया चले इसमें बच्चों की भूमिका चूँकि परिस्थिति अनुरूप बदलती रहती है, अतः उन्हें यह एहसास भी स्वतः होता रहता है कि कब, किससे, किस तरह का व्यवहार करना उचित है व किस तरह का नहीं। यह उन्हें अपनी उपयोगिता व महत्त्व का एहसास दिलाने में भी मददगार होती है। इन विभिन्न भूमिकाओं में रहना उन्हें विभिन्न परिस्थितियों के अलग-अलग पहलुओं को ध्यान में रखते हुए अपने-आप से लगातार संवाद करने की माँग करता है, ऐसा संवाद जिसमें उन्हें श्रोता और वक्ता दोनों की ही भूमिका निभानी है और निर्णय भी लेना है। और जैसा कि विनोबा भावे बुनियादी तालीम के बारे में कहते हैं, "शिक्षा के लिए हमारी योजना अनुशासन की योजना है, इसका मुख्य स्रोत है, अर्थात् आत्म-भोग नहीं बल्कि आत्म-नियंत्रण है। हमारा मुख्य उद्देश्य यह होना चाहिए कि हमारे बच्चे अपने शुरुआती वर्षों से अपनी इन्द्रियों, मन और बुद्धि को नियंत्रण में रखने के लिए सीखें। उनकी वाणी में सत्यता का भाव होना चाहिए; हमें उन्हें अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए, और उनकी फिटनेस के लिए शब्दों का चयन करना चाहिए, न कि फैशन के लिए, मैं आपका ध्यान फिटनेस और फैशन के बीच के अन्तर की ओर आकर्षित करना चाहूँगा। मुझे एक और बात कहनी है कि अगर हमें अनुशासन और आत्म-नियंत्रण की भावना पैदा करने के इस कार्य को अंजाम देना है, तो बुनियादी शिक्षा जहाँ तक हो सके सौंपी जानी चाहिए।"

आज बुनियादी शिक्षा की बात तो होती है लेकिन ऐसे स्कूलों को उँगलियों पर गिना जा सकता है जहाँ बुनियादी शिक्षा के पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षा दी जाती है। यदि हम चाहते हैं कि बच्चे अनुशासन को समझें, सीखें उसके लिए मौजूदा पाठ्यचर्या में बुनियादी शिक्षा के नियमों को सम्मिलित करना और ये कक्षा में, स्कूल में कैसे क्रियान्वित हो पाएँगे इस दिशा में क़दम उठाने की सख़्त ज़रूरत है।

सारांश

यदि हम बच्चों को एक वयस्क इंसान की तरह समझेंगे तो हमारे उनके साथ अन्तःक्रिया करने के तरीक़े स्वयमेव ही बदल जाएँगे। तब हम अपनी बात, अपनी परेशानियाँ भी उनसे साझा करेंगे, उनकी बात को तवज्जो देंगे, उनकी बात को सुनेंगे, उन्हें कुछ करने, न करने के लिए सिर्फ निर्देश ही नहीं देते रहेंगे बल्कि उनके साथ बातचीत करेंगे कि क्यों हम ऐसा करना चाहते हैं, और यदि हम यह काम नहीं करें तो क्या परिणाम हो सकते हैं। और ऐसा करने के पीछे यह समझ है कि बच्चे भी सम्माननीय हैं, वे भी चीज़ों को देखते-समझते हैं और निर्णय लेने की क्षमता रखते हैं। जब बच्चों को महसूस होता है कि उनकी भी कक्षा में, स्कूल में, समाज में कोई भूमिका है, जो कि अवश्य है तब वे भी अपने-आप ही अपने-आप को ज़िम्मेदार महसूस करने लगते हैं और धीरे-धीरे अपनी ज़िम्मेदारियों को समझने भी लगते हैं और उनको निभाने के लिए उनको क्या-

क्या करना होगा यह भी सीखते हैं व इस ज़िम्मेदारी को निभाते भी हैं। और नई तालीम के विचार में भी यह साफ़ परिलक्षित होता है कि बच्चे अपनी ज़िम्मेदारियों को शिक्षा की शुरुआत से ही समझें। हम बच्चों से यह अपेक्षा तो रखते हैं कि वे आगे चलकर समाज में योगदान देंगे लेकिन जब कक्षा व स्कूल में हम उनके साथ काम करते हैं तो हम इन अपेक्षाओं को भूल जाते हैं। आखिर कक्षा व स्कूल, समाज के ही तो हिस्से हैं।

References:

1 Drawing Inspiration from Gandhi's Nai Talim: Anand Niketan, Wardha Part II – Retrieved from http://www.theeducationist.info/drawing-inspiration-gandhis-nai-talim-anand-niketan-wardha-part-ii 16/08/17 11:54 pm

2 Nai Taleem and More - Vinoba's Thoughts on Education - Retrieved from http://www.adharshilalearningcentre.org /2016/06/ nai-taleem-and-morevinobas-thoughts-on.html 08/17 11:56 pm

3 Dewan H.K. Capability of the Child. Learning Curve, October, 2010. Azim Premji Foundation, Bengaluru.

रजनी द्विवेदी वर्तमान में शिक्षकों और शिक्षक-शिक्षकों के लिए क्षमता निर्माण के प्रयासों, विकास और उसके लिए सामग्री के सम्पादन एवं अनुवाद के काम में व्यस्त हैं। उन्होंने कॉलेज ऑफ़ होम साइंस, उदयपुर से बाल विकास में और प्राथमिक शिक्षा में TISS, मुम्बई से स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। उनसे ritudwi@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

बच्चों के साथ मेरे अनुभव

बासुदेव भट्ट

मेरे कक्षा में कुछ अनुभव एक यात्रा की तरह हैं। मैं हमेशा की तरह कक्षा में जाते ही कुछ माहौल बनाने की कोशिश करता हूँ। इसके लिए मैं कुछ गतिविधियों व कविता को लेकर नए पाठ को आगे शुरू करता हूँ। कुछ बच्चे पाठ से सम्बन्धित प्रश्न पूछते हैं तथा कुछ बच्चे अलग प्रश्न करते हैं। मेरे कक्षा में जाते ही बच्चे अपने को ख़ुश व स्वतंत्र महसूस करते हैं। कुछ बच्चे शोर मचाते हुए 'भट्ट सर आ गए, भट्ट सर आ गए' कहते हैं। बच्चों के बीच मुझे बहुत कुछ सुनने व समझने को मिला। कक्षा में मुझे बच्चों की नई उमंग व शक्ति को एक दिशा देकर मन प्रसन्न हो जाता है। हर बच्चा अपनी गति से सीखता है।

कुछ बच्चों को समझ बनाने में समय अधिक लगता है। कक्षा में सभी बच्चे अलग-अलग विचार रखने वाले मिले हैं जो कि काफ़ी समय तक कहानी व कविता की गतिविधियों को कराकर एक मत पर कार्य कर पाते हैं। बच्चों के साथ कुछ मॉडल बनाकर, कक्षा में उसे छूकर व देखकर अपनी समझ बनाने की कोशिश करते हैं। इन गतिविधियों से बच्चे तेज़ी से सीख पाते हैं। किताब के अलावा की गई गतिविधियों में बच्चे अधिक रुचि लेते हैं। पढ़ाए गए पाठ में से लिए नाटक को खेलने में बच्चों के साथ अच्छा लगता है। या फिर इससे सम्बन्धित कविता को समूह में गतिविधियों के साथ करवाने पर अच्छा लगता है। बच्चों के द्वारा बनाए गए चित्र व लिखे शब्दों को देखने व पढ़ने में एक अलग अनुभूति महसूस होती है। सभी बच्चों में कुछ-न-कुछ प्रतिभा रहती है। पाठ्यपुस्तक से हटकर कक्षा में जो भी किया जाता है उसमें बच्चे अधिक रुचि से कार्य करते हैं। वे आसानी से समझ बनाने की कोशिश करते हैं। चुने पाठ को नाटक के रूप में आसान से आसान तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं।

पाठ योजना में प्रत्येक बच्चे को मद्देनजर रखते हुए उनके अनुसार कक्षा में बच्चों को जानकारी देने का प्रयास रहता है। हर बच्चा अपनी गति से कुछ-न-कुछ सीखता है। इस विचार से कक्षा का शिक्षण कार्य किया जाता है। पाठ को पढ़ाने से पहले कक्षा में कुछ ताज़गी व उमंग लाने के लिए कार्य किया जाता है। इससे बच्चे नई सूचना को पढ़ने में आसानी महसूस करते हैं। दिए गए पाठ को विभिन्न उदाहरणों व चित्रों से पढ़ाने पर बच्चों को सीखने में काफ़ी मदद मिलती है। बच्चे स्वयं भी कुछ नया करने में लगे रहते हैं। पढ़ाने के अलावा भी बच्चे खेलकूद, नाच-गाने में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। बच्चों को स्कूल आने में अच्छा लगता है। अच्छा लिखना, काग़ज से चीज़ें बनाना व मिट्टी के खिलौने बनाने में अच्छा महसूस करते हैं। इतना ही नहीं बल्कि हाथ से बनाई गई वस्तुओं पर रंग लगाने में अच्छा महसूस करते हैं। अध्यापक से नई कहानियाँ सुनने को बार-बार कहते हैं जो कि बहुत बच्चों के साथ बहुत अच्छा लगता है। बच्चों को उनकी क्षमता के अनुसार ज्ञान देना चाहिए ताकि उस ज्ञान को बच्चे ठीक से समझ पाएँ। समूह में बैठकर बच्चों का चार्ट व ए-4 कागज पर चित्रों को बनाने व उन पर रंगों को सही से लगाने के लिए उत्सुकता दिखाना एक नई स्फूर्ति को दर्शाता है। किताबों से परे बच्चों से जो सीखने का जज़्बा मुझे अपने इस स्कूल में मिला वह किसी अन्य स्कूल में नहीं मिला। एक कक्षा में विभिन्न प्रकार के बच्चे होते हैं जो कि पढ़ने व लिखने की गतिविधियों को कला का एक रूप मानते हैं। सीखने में सक्षम बनाने के लिए कक्षा में उपयोग की जाने वाली विधि सरल होनी चाहिए। बच्चे अपनी भाषा को आधार मानते हुए अन्य भाषा व विषयों को सीखने में रुचि लेते हैं। बच्चे अपनी गति से सीखने में अच्छा महसूस करते हैं। बच्चे किसी विषय पर अपनी समझ बनाने की कोशिश करते हैं। जब भी कोई नई कविता पढ़ना हो तो कविता को टुकड़ों व पंक्तियों को अलग-अलग करके फिर उसे मिलाने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार बच्चे कविता को मन में देर तक रखते हैं। संगीत की कक्षा में बच्चों के साथ कार्य करने में बहुत अच्छा लगा। कुछ गीत जैसे

• साँभर झील से भराया भैंरु मारवाड़ी ने, बंजारा नमक लाया ऊँटगाड़ी में • इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें
जिंदगी आंसुओं से नहाई न हो • गीत गा रहे हैं आज हम • हम होंगे कामयाब

इन गीतों को ढोलक व हारमोनियम के साथ गाया गया। ये गीत एक कक्षा में ही नहीं बल्कि पूरे स्कूल में गूँजे हैं। इसी के साथ स्कूल में संगीत को एक महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है। टीएलएम बनाने का अनुभव प्राप्त हुआ। इससे बच्चों व स्कूल में रोचकता व रुचि आगे बढ़ती हुई मिली।

बासुदेव भट्ट उत्तरकाशी के अज़ीम प्रेमजी स्कूल में 2012 से कार्यरत हैं। उनके द्वारा पढ़ाए जाने वाले मुख्य विषय सामाजिक विज्ञान और अँग्रेज़ी हैं। उन्होंने हिन्दी, अँग्रेज़ी और पर्यावरण विज्ञान भी पढ़ाया है। उन्हें स्कूल पुस्तकालय के प्रबन्धन का अतिरिक्त अनुभव है। उनसे basudev.bhatt@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

भाषा-शिक्षण : एक अनुभव

छोटे लाल तंवर

जब हम भाषा-शिक्षण की बात करते हैं तो पुनः भाषा क्या है, भाषा कैसे सीखी जाती है जैसे सवाल हमारे मन में उठने लगते हैं। जब हम इन सवालों को समझने की बात करते हैं तो मोटी बात यह निकलकर आती है कि भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है अथवा भाषा विचारों के आदान-प्रदान का जरिया है। जब हम भाषा को इतने सीमित अर्थों में देखते हैं तो फिर भाषा-शिक्षण के प्रति हमारा नज़रिया भी सीमित हो जाता है। कहने का आशय यह है कि विषय की प्रकृति के बारे में जिस सीमा तक हम सोच पाते हैं उसका प्रभाव उसके शिक्षण पर भी पड़ता है। हम यहाँ इस आधारभूत बहस के साथ, वर्षों से किए जा रहे भाषा-शिक्षण के तौर-तरीक़ों व उनसे जुड़े सरोकारों पर बात करेंगे। साथ ही बच्चों के साथ भाषा-शिक्षण के अनुभवों को भी साझा करेंगे।

आम तौर पर भाषाई कौशलों के विकास के उद्देश्यों के तहत जिस स्तर के प्रयास किए जाते हैं, यहाँ उसकी एक झलक देने का प्रयास किया जा रहा है। यह भाषाई उद्देश्यों की प्राप्ति में न केवल अवरोधक के रूप में दिखते हैं बल्कि शुरुआती वर्षों में भाषा विकास की सहज प्रक्रिया को भी हतोत्साहित करते हैं।

पढ़ने की तैयारी एवं शिक्षण के तौर-तरीक़े

आम तौर पर कक्षा प्रथम और तो और पूर्व-प्राथमिक शालाओं में जब बच्चे आते हैं तो उन्हें पढ़ने हेतु वर्णमाला का ज्ञान इस समझ के साथ कराया जाता है कि वर्णमाला सीखने के बाद ही बच्चे पढ़ने के कौशल का विकास कर पाएँगे। जबकि तीन साल का छोटा बच्चा जब चित्र वाली किताबों के सम्पर्क में आता है तो चित्रों को देखते हुए पढ़ने का नाटक करना शुरू कर देता है परन्तु बहुत कम लोग बच्चे के इस तरह के प्रयासों को महत्त्व देते हैं।

लिखना सीखने की तैयारी

धारणा ये है कि जब बच्चा वर्णमाला व मात्रा ज्ञान प्राप्त कर लेगा तब धाराप्रवाह पढ़ने लगेगा। उसके बाद ही लिखने के कौशल पर काम किया जा सकता है, उससे पहले नहीं। हम अधिकांश वयस्क, बच्चों के चित्र बनाने को लिखने की तैयारी का हिस्सा नहीं मानते जबकि चित्र बनाना लिखना सीखने की तैयारी का अहम हिस्सा है।

बोलने व सुनने की क्षमता का विकास

वयस्क लोगों को यह भी लगता है कि जब बच्चे उच्च-प्राथमिक, माध्यमिक व महाविद्यालयों में जाएँगे तो सुनने-बोलने की क्षमताओं का विकास सहज रूप से कर लेंगे। छोटे बच्चों के साथ सुनने-बोलने की क्षमताओं पर अलग से काम करने की ज़रूरत नहीं है। भाषा विकास के बारे में ये धारणा अकादमिक रूप से ऐसी खाई उत्पन्न करती है जो सही मायने में सीखने का सामर्थ्य भी नहीं देती, बल्कि सोचने-समझने की तार्किक समझ का आधार भी नहीं बनने देती। भाषाई दक्षताओं के विकास को इस तरह से विखण्डित रूप में देखना व उनके विकास हेतु काम करने का नज़रिया भाषाई विकास को नकारात्मक ढंग से प्रभावित करता है। जब हम भाषा के विकास को समग्रता में नहीं देखते तो भाषा के सभी कौशलों पर काम करने की आवश्यकता नहीं लगती, बल्कि ऐसा लगता है कि सुनने-बोलने के कौशल तो अपने-आप समय के साथ विकसित किए जा सकते हैं। इस पूरे प्रसंग में ये लगता है कि भाषा एवं भाषा-शिक्षण को लेकर उपरोक्त वर्णन में कुछेक बुनियादी समस्याएँ हैं। उन पर काम किए बिना हम भाषा-शिक्षण के अपेक्षित लक्ष्यों की तरफ नहीं बढ़ सकते।

अज़ीम प्रेमजी स्कूल, टोंक में बच्चों के साथ काम के दौरान हुए अनुभवों में इन सभी प्रसंगों को स्थान दिया है। साथ ही बच्चों के साथ काम करते हुए भाषा सीखने के सैद्धान्तिक आयाम की भी पुष्टि हुई है जो शिक्षक को प्रेरित करने व अपने प्रयासों को और गहराई देने का हौसला देती है। इसे निम्न रूप में देख सकते हैं। हमें ऐसा लगता है कि भाषा सिर्फ अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं है बल्कि भाषा के माध्यम से ही हम विचार कर पाते हैं, तर्क कर पाते हैं, अवधारणाएँ बना पाते हैं, चीज़ों को जान पाते हैं। साथ ही प्रकृति में मौजूद सभी वस्तुओं, जीवों व इंसानों के साथ रिश्ता बना पाते हैं। जब हम भाषा को इस रूप में देखते हैं तो बच्चों के साथ काम करने की शुरुआत नीरस वर्णमाला सिखाने से नहीं की जा सकती।

कक्षा प्रथम के बच्चों के साथ हिन्दी भाषा में काम के अनुभव व बच्चों में भाषा विकास का स्तर।

सुनने व बोलने के कौशलों पर काम – कक्षा प्रथम के बच्चों के सुनने व बोलने के कौशलों के विकास हेतु की गई गतिविधियाँ।

15-20 बाल-गीतों का संकलन व उन पर काम -

कक्षा की शुरुआत घेरे में बैठकर बाल-गीतों से करना। शिक्षक के द्वारा हाव-भाव के साथ बाल-गीत करवाना। बच्चों द्वारा दोहराना। दो-तीन दिन बाद जब कुछ बच्चों को करवाए गए बाल-गीत याद हो जाएँ तो उन्हीं बाल-गीतों को चार्ट में लिखकर बच्चों की पहुँच में लगा देना।

छड़ी या उँगली चलाते हुए बाल-गीत करवाना। दो-तीन बार उस बाल-गीत को उँगली या छड़ी चलाते हुए पढ़ने का अभ्यास देने के बाद जिन बच्चों को वह गीत याद हो जाए, उन्हें उँगली और छड़ी चलाते हुए बाल-गीत करवाने का मौका देना। जब बच्चे छड़ी चलाते हुए रिदम व भाषाई फ्लो के साथ बाल-गीत पढ़ते हैं तो यहाँ वे पढ़ने की बारीकियों को भी समझ रहे होते हैं। जैसे बाएँ से दाएँ शब्द-ध्वनियों पर केन्द्रित करते हुए पूरी पंक्ति को एक साथ पढ़ना, शब्दों का सही उच्चारण करना व ऊपर से नीचे पंक्तिबद्ध ढंग से बढ़ना आदि।

इसके साथ ही बच्चों के साथ बाल-गीतों में आए शब्दों पर बात करना व उनमें आए लिखित शब्दों का परिचय देना व उन्हें पढ़ने की शुरुआती प्रक्रियाओं से गुजारना। जब बच्चा आरम्भिक दिनों में ही पढ़ने के अनुभव से गुजरता है तो उसके आत्मविश्वास का स्तर बढ़ता चला जाता है। साथ ही शिक्षक को भी बच्चों का आगे बढ़ने का फ्लो दिखने लगता है। हमें ये अप्रोच चमत्कारी प्रतीत होती है, जब कोई छह वर्ष का बच्चा बाल-गीतों के माध्यम से आरम्भिक तीन माह में पढ़ने की तरफ अग्रसर होने लगता है।

इसी दौरान 18-20 कहानियों का चयन करते हुए उन पर काम करवाना। शुरुआत में बच्चों को कहानी सुनने के लिए तैयार करना व चित्रकथाओं पर काम करना। इस प्रक्रिया में उनके परिवेशीय अनुभवों पर बात करते हुए उन्हें बोलने के लिए सहज करना।

जब बच्चे धीरे-धीरे कहानी सुनने लग गए उसके बाद उन कहानियों पर बात करने की शुरुआत की गई। यहाँ मैं बच्चों के साथ हुई बातचीत का जिक्र करना चाहूँगा। सुनाई गई कहानी का नाम है - '**मीता के जादुई जूते**'। बच्चों से पूछे गए प्रश्न कुछ इस प्रकार के थे जैसे –

"कैसी लगी कहानी?"

"अच्छी लगी।"

"सबसे अच्छा कौन लगा?"

"मीता।"

"कहानी में तुम्हें और कौन अच्छा लगा?"

"पंख वाले जूते।"

इसके बाद शिक्षक ने कहा, "यदि तुम्हें उड़ने वाले जूते मिल जाएँ तो तुम कहाँ-कहाँ जाना चाहोगे?" सभी बच्चों के जवाब बड़े दिलचस्प थे। कोई अपने पिता जहाँ काम करते हैं वहाँ जाना चाहते थे, जैसे दिल्ली, जयपुर, सउदी अरब, कोटा।

कुछ बच्चे अपने ननिहाल, बुआ या बहिन के ससुराल जाना चाहते थे। जब आप बच्चों के साथ उनसे जुड़ी भावनात्मक दुनिया में प्रवेश करते है एवं उनके मन की उड़ान को स्थान देते हैं तो बच्चे उनसे जुड़े अनगिनत सन्दर्भों को साझा करना चाहते हैं। कौन कहता है कि छह वर्ष के बच्चों के साथ सुनने व बोलने की दक्षताओं पर काम नहीं किया जा सकता। हमें यह लगता है कि बच्चों के साथ सुनने व बोलने, पढ़ने व लिखने की शुरुआत इसी स्तर पर किए जाने की ज़रूरत है। वरना बढ़ती उम्र के साथ बच्चे अलग तरह की चुप्पी की स्थिति में चले जाते हैं जो कई बार उन्हें स्थायी चुप्पी की ओर धकेल देती है।

बाल-गीतों, कहानियों को सुनाना, उन पर बात करना, अभिनय करना, चित्र बनवाना, उँगली चलाते हुए पढ़वाना, कहानियों व बाल-गीतों में आए मुख्य शब्दों को अलग-अलग ढंग से पढ़वाना, उपरोक्त प्रक्रिया को अपनाते हुए काम किया गया। इस काम के अनुभव से यह समझ में आया कि करीब दो-तिहाई बच्चे इस विधा के साथ काम करते हुए साल के अन्त में कक्षा के स्तर के टैक्स्ट को धाराप्रवाह पढ़ना सीख गए। अच्छी बात इस अनुभव की यह रही कि यह बच्चे शब्दों के हिज्जे करके नहीं पढ़ते थे बल्कि पूरे शब्द व वाक्य को एक साथ पढ़ते थे, जो पढ़कर समझने की बुनियादी शर्त है। साथ ही कहानियों व कविताओं के माध्यम से पढ़ने के कौशल पर काम करना न केवल समझ के साथ पढ़ने का अवसर देता है बल्कि पुस्तकें पढ़ने व बच्चों के अच्छे पाठक बनने की सम्भावनाएँ भी खोलता है। इसके अलावा 30-35 बाल-गीतों के अच्छे संग्रह के साथ-साथ 15-20 छोटी कहानियों पर बात करना व अपनी भाषा तथा अपने-अपने अन्दाज़ में सुनाना एवं उन पर अभिनय करना भी सीख गए।

अब दो वर्ष उपरान्त जब मैं उनमें से कुछ बच्चों के साथ बात करता हूँ तो उनमें ख़ास स्तर की भाषाई गहराई महसूस होती है। इसका कतई ये अर्थ नहीं है कि ये सारा प्रभाव प्रथम कक्षा में किए गए काम का ही है। परन्तु, प्रथम कक्षा में भाषा के स्तर पर दिया गया ऐक्सपोजर कहीं-न-कहीं उन बच्चों को भाषाई स्तर पर समृद्ध भाषाई अनुभव की अनुगूँज देता है, ऐसा मुझे लगता है।

जब दूसरी कक्षा में ही ये बच्चे कहानियों की 15-20 उन छोटी कहानियों की पुस्तकों का अनुभव कर चुके होते हैं जिन कहानियों पर इनके साथ काम हो चुका होता है तो सहज रूप

से बच्चे किताबें पढ़ने की तरफ लालायित होते नज़र आते हैं।

चुनौतियाँ व उपलब्धियाँ

वे बच्चे जो अलग-अलग कारणों से पढ़ना तो नहीं सीख पाए परन्तु सुनने व बोलने की क्षमता का असाधारण रूप से विकास कर पाए, जो किसी भी भाषा को सीखने के लिए अति आवश्यक है। इसका मतलब ये कतई नहीं है कि इन बच्चों ने कुछ भी नहीं सीखा बल्कि इन बच्चों ने भाषा के उन बुनियादी कौशलों पर अधिकार बनाने में महारत हासिल की जिस पर पर अमूमन बच्चे उच्च-प्राथमिक स्तर की कक्षा तक जूझते देखे जाते हैं और जो किसी भी भाषा को सीखने के लिए अति आवश्यक है।

छोटे लाल तंवर अगस्त, 2011 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ काम कर रहे हैं। इससे पहले, उन्होंने बोध शिक्षा समिति के साथ अलवर जिले में लगभग 11 वर्षों तक समन्वयक एवं सुगमकर्ता के रूप में काम किया। उन्होंने वहाँ हिन्दी और गणित के लिए एक स्रोत व्यक्ति के रूप में भी काम किया। 15 छोटे स्कूलों को अच्छे स्कूल के रूप में स्थापित करने के लिए उन्होंने शिक्षकों, विद्यार्थियों और समुदायों के साथ मिलकर काम किया। इससे पहले उन्होंने लोक जुम्बिश परियोजना में भी काम किया है, जो राजस्थान सरकार द्वारा मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में लागू एक प्रसिद्ध प्रयोगात्मक परियोजना है। उनसे chhote.lal@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

मेरी पहली कक्षा

दीपा बिष्ट

मैं अज़ीम प्रेमजी स्कूल दिनेशपुर, उत्तराखण्ड में 6 फरवरी 2012 से कार्यरत हूँ। हमारा स्कूल 10 अप्रैल 2012 से आरम्भ हुआ। उससे एक महीना पहले हमने दिनेशपुर में घर जा-जाकर बच्चों की जानकारी ली। माता-पिता से मिले। कौन बच्चे स्कूल जाते हैं, किसने पढ़ाई छोड़ दी, किन परिस्थितियों में स्कूल जाना बन्द हुआ, क्या अब वह पढ़ाई पूरी करना चाहते हैं। इन सब बातों के बाद उनको बताया कि आपके दिनेशपुर में अज़ीम प्रेमजी स्कूल खुला है जिसमें स्कूल के संचालन, कार्यकारिणी,प्रणाली एवं मिलने वाली सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। साथ ही यह भी बताया कि स्कूल खोलने का मक़सद केवल एक है "सबको शिक्षा मिले। इस बहुमूल्य नेमत से कोई बच्चा छूट न जाए।"

दिनेशपुर की भौगोलिक स्थिति को समझने पर इस बात की जानकारी हुई कि अधिकतर निवासी बांग्लादेश से पलायन कर के यहाँ पर बसे थे, जिसके कारण अधिकतर लोगों की भाषा बंगाली एवं पंजाबी थी। स्कूल के शुरुआती दिनों में बच्चों के रहन-सहन, सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक स्थिति को जानने का प्रयास किया। उनके साथ बातचीत की एवं खेल के साथ उनको जोड़ने का प्रयास किया ताकि खेल के माध्यम से हम बच्चों की क्षमता के अनुरूप उनके पढ़ने-पढ़ाने में कुछ सहयोग कर सकें।

यह मेरे लिए नया-सा अनुभव था। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 स्थानीय भाषा को कक्षा में स्थान देने की बात कहती है। वहाँ पर हम अपने-आप को कहीं दूर खड़े देख रहे थे। अब बारी थी इन चुनौतियों से दूर जाने की या फिर इनसे आगे निकल जाने की। इस चुनौती को स्वीकार करते हुए बच्चों को उनकी भाषा में विचार एवं बातचीत करने का अवसर दिया। कुछ ही समय में हमें बच्चों की भाषा कुछ समझ में आने लगी और बच्चों को हिन्दी बोलने में मज़ा आने लगा। लगने लगा कि अब सब ठीक है। बच्चे हमें और हम बच्चों को जानने का प्रयास बराबर करते रहे।

कक्षा पहली में 30 बच्चे थे। जिसमें रानी मण्डल (काल्पनिक नाम) नाम की एक बच्ची थी। उसका व्यवहार अन्य बच्चों से अलग था या यह कह सकते हैं कि वह सिर्फ़ अपनी धुन में रहती थी। किसी भी बच्चे को मार देना उसके लिए सामान्य-सी बात थी। कभी-कभी वह दाँत लगाकर बच्चों को काट

> "यह इकाई कई कक्षाओं की उस वास्तविकता के बारे में है जहाँ विद्यार्थियों की मातृभाषा और विद्यालय की भाषा समान नहीं होती है। ऐसी परिस्थितियों को अक्सर चुनौतीपूर्ण माना जाता है। इस इकाई का उद्देश्य बहु-भाषावाद के प्रति जागरूकता और सकारात्मक समझ को उजागर करना है, जिसके अन्तर्गत यह बात बताई गई है कि बहु-भाषावाद के माध्यम से भाषा कक्षा में सभी विद्यार्थियों को एक साथ पढ़ाई जा सकती है।"
> - राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005

लेती थी। उसके पास कोई भी बच्चा नहीं बैठता, न उससे बातचीत करता और न वह किसी के साथ खेलती। उसको कुछ भी कहो या उसके पास जाकर उससे कुछ बात करो तो वह घूरने लगती, हाथ-पैर मारती। कई बार उसने मुझ पर अपने दाँतों को आज़माने का सोचा परन्तु मेरी क़िस्मत ठीक थी। उसे कोई भी देख ले तो वह यही कहता कि उसका समाज में लालन-पालन न होकर कहीं और ही हुआ है।

उस समय हमारे विद्यालय में 12 शिक्षक थे और अरुणा वी.ज्योति जो एक सहकर्मी और गाइड थीं, वे समय-समय पर शिक्षण कार्य की चुनौतियों में हमारा मार्गदर्शन करतीं। विगत 21 साल से वह स्कूली शिक्षा में काम कर रही थीं। एक विद्यालय को सुचारू रूप से चलने के लिए जिन चीज़ों की आवश्यकता होती, उन सभी बिन्दुओं पर हम सब लोग मिलकर अपने विचार रखते। फिर एकमत होकर उस नियम पर कार्य करते। किसी भी जीवन्त चीज़ में वैचारिक मतभेद का होना आवश्यक होता है।

रानी के व्यवहार एवं अन्य साथियों के साथ उसके असहज बर्ताव के कारण सभी बच्चे उससे परेशान थे। वह मेरे लिए एक बड़ी चुनौती के रूप में थी। उसके व्यवहार के बारे में अरुणा जी से चर्चा की। तब उन्होंने कहा कि दीपा यह तुम्हारे लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है और हम जानते हैं कि तुम इस बच्ची में बदलाव ले आओगी। पर, इस बच्ची के साथ तुम कैसे व्यवहार करोगी यह मेरे बताने की बात नहीं है। इसलिए इस विषय में मैं तुमको कुछ नहीं बताऊँगी। तुम इस बच्ची के साथ काम करो। पर, ध्यान रखना कि तुम्हारी आवाज़ कक्षा के बाहर नहीं आनी चाहिए। तुमको इससे तेज़ आवाज़ में बात

नहीं करनी है। कुछ समय बाद तुम खुद देखोगी कि इसके व्यवहार में बदलाव आ गया है।

कक्षा में सभी बच्चों को कहा कि जब तक रानी किसी से बात नहीं करना चाहे तब तक उससे कोई बात नहीं करेगा। कोई भी उसको परेशान नहीं करेगा। सभी बच्चे कविता-कहानी, खेलकूद करते। रानी दूर से सभी को देखती रहती। कभी कुछ नहीं बोलती। कुछ दिनों तक ऐसा चलता रहा। एक दिन सभी बच्चे खेल रहे थे और कुछ कविता कर रहे थे। उनकी कविता का हाव-भाव देखकर रानी जोर-जोर से हँसने लगी। उसकी हँसी देखकर मुझे ख़ुशी महसूस हुई। अब मैं रोज़ कुछ-न-कुछ ऐसी गतिविधि कराती जिसे देखकर वह ख़ुश होती।

एक दिन रानी स्वयं हमारे साथ गोले में खड़ी हो गई। सभी बच्चों के साथ मिलकर ताली बजाने लगी। उसके बाद मैंने उससे थोड़ी-थोड़ी बात करनी आरम्भ की और वह 'हाँ' या 'न' में या सर हिलाकर बात करने लगी। उसके बाद से मैं रानी को अपने पास बुलाकर या उसके पास बैठकर काम करती। कुछ दिनों में वह स्वयं ही मेरे पास आने लगी। अब बच्चों के साथ उसका व्यवहार थोड़ा बदलने लगा। वक़्त के साथ उसमें बदलाव आने लगा और अन्य बच्चों के साथ वह खेलने लगी।

एक दिन रानी के घर जाना हुआ। तब ज्ञात हुआ कि वह दो भाई-बहन हैं। माता-पिता इनके उठने से पहले ही अपने काम पर चले जाते हैं। उसका भाई डेढ़ साल का है। सवेरे वह झाड़ू लगाती, बर्तन धोती और अपने भाई को दिन भर सम्भालने का कार्य करती है। जब रानी स्कूल आ जाती तब पड़ोसी उसके भाई को डाँटते रहते। माँ रानी को ज़्यादा डाँटतीं। बात-बात पर उसकी पिटाई हो जाती। उसके माता-पिता कभी भी स्कूल में अभिभावक गोष्ठी में नहीं आए। एक दिन उसके माता-पिता मुझे बाजार में मिल गए। उनसे रानी के बारे में चर्चा हुई। उन्होंने मेरा धन्यवाद दिया और बताया कि घर पर अब वह अपने छोटे भाई को कविता और कहानी सुनाती है और कुछ न कुछ कला या चित्रकारी करती रहती है। मुझे ख़ुशी हुई। मैंने उनसे कहा कि अब आप भी अभिभावक गोष्ठी में आया करो, जिससे बच्चे अपनी तारीफ़ सुनकर आपके सम्मुख और बेहतर प्रयास करेंगे और उनको ख़ुशी मिलेगी।

कक्षा 3 में वह जब आई तब *चकमक* पत्रिका की तरफ से चित्रकारी की प्रतियोगिता हुई और उसको इनाम मिला। उसने मेरे पास आकर कहा कि, "मैडम देखो, मुझे क्या इनाम मिला। आप मेरी पहली टीचर हो इसलिए पहले आपको मैं यह इनाम दिखाने आई हूँ।" मेरे भीतर एक अजीब-सी अनुभूति हुई। ख़ुशी के मारे मेरी आँखें भर आईं। उस पल का वर्णन मैं कर नहीं सकती हूँ।

समय पंख लगाकर कब उड़ गया पता नहीं चला। अब वह सलवार-कुरता पहनकर, दो चोटी बाँधकर आती है। वह अब कक्षा 6 में आ गई है। जब कभी मैं कक्षा 1 के बच्चों के साथ कक्षा में होती हूँ तब रानी मेरे पास आ जाती है और कक्षा 1 के बच्चों का ख़्याल रखने में मेरा सहयोग करती है।

इन 5 सालों में मैंने बहुत कुछ सीखा जिसमें धीरज रखना सबसे महत्त्वपूर्ण है। अरुणा जी हर साल स्कूल में आती हैं और अब जब उनसे इस विषय में चर्चा हुई तो उन्होंने कहा कि कुछ चीज़ों का जवाब नहीं होता है। समय हमें रास्ता बता देता है। हमारा विवेक हमें समझकर प्रयास करने में मदद करता है।

दीपा बिष्ट फरवरी, 2012 से अज़ीम प्रेमजी स्कूल, दिनेशपुर, उधमसिंह नगर में शिक्षिका हैं। 2004 से शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। वह अपने विद्यार्थियों से सीखने में दृढ़ता से विश्वास करती हैं। उनसे deepa.bisht@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अब इन्हें कैसे बैठाऊँ?

गजेन्द्र कुमार देवांगन

जैसे ही स्कूल शब्द का जिक्र होता है हमारे मन-मस्तिष्क में एक भवन, जिसमें अनेक बच्चे और शिक्षक होते हैं, की तस्वीर उभर आती है। और जब हम स्कूलों की अकादमिक प्रक्रियाओं की बात करते हैं तो हमारे सामने एक कक्षा का चित्र होता है जिसमें शिक्षक बच्चों के सामने की ओर तथा बच्चे क्रम से पंक्ति बनाकर बैठे हुए होते हैं। यह सही भी है क्योंकि हम ज़्यादातर इसी तरह की कक्षाओं को देखते आए हैं। कक्षा की इस तरह की बैठक व्यवस्था में प्रायः सभी प्रकार की गतिविधियाँ सम्पन्न भी हो जाती हैं, जैसे निर्देश देना, कहानी-कविता सुनना-सुनाना, चर्चा-परिचर्चा करना, पढ़ना–लिखना, मूल्यांकन व सामग्रियों का प्रदर्शन आदि। पंक्तिबद्ध बैठक की अपनी सुविधा के साथ कुछ कमियाँ भी होती हैं जिससे बच्चों के सीखने की प्रक्रिया पर सीधा प्रभाव पड़ता है। मैं यहाँ कमियों पर चर्चा नहीं करूँगा बल्कि पंक्तिबद्ध बैठक व्यवस्था के विकल्प क्या हो सकते हैं, इस पर कुछ कहने की कोशिश करूँगा। यदि हम कक्षाओं में बच्चों के बैठने की व्यवस्था पर थोड़ा ध्यान देते हैं तो सीखने-समझने की क्षमता पर असाधारण प्रभाव पड़ता है, ख़ास करके स्कूल की शुरुआती कक्षाओं - कक्षा पहली व दूसरी में। भाषा शिक्षक के रूप में मुझे भाषाई कौशलों के विकास हेतु अलग-अलग तरह की गतिविधियों पर काम करने का अवसर मिलता रहा है।

शिक्षण के शुरुआती दिनों में मेरा भी तरीक़ा कुछ अलग नहीं था। परन्तु नियमित कार्य के दौरान तथा कक्षागत चुनौतियों के हल खोजते हुए कुछ अनुभव हुए जिसके आधार पर मैंने कक्षा में अलग-अलग गतिविधियों के लिए कुछ ख़ास तरीक़े की बैठक व्यवस्थाओं में बैठाना शुरू किया। निश्चित रूप से कक्षा में इसका काफी अच्छा प्रभाव रहा। इन्हीं में से कुछ अनुभवों को मैं आपके साथ साझा कर रहा हूँ।

1. **गोलाकार बैठक :** सामान्य बातचीत, निर्देश देने, नियम बनाने व चर्चा करने के लिए बच्चों के साथ एक बड़े गोले में बैठना अच्छा और सुविधाजनक होता है। इससे प्रत्येक श्रोता-वक्ता के बीच सीधा नेत्र सम्बन्ध बन पाता है। सबको एक-दूसरे को देखते-सुनते बनता है। अपनी बात रखने-सुनने में आसानी होती है। इस तरह की बैठक में कोई भी बच्चा न पहले होता है न बाद में। आगे-पीछे की समस्या ही ख़त्म हो जाती है। शिक्षक और विद्यार्थी सभी एक-दूसरे के आमने-सामने होते हैं।

2. **अर्धवृत्ताकार बैठक :** कहानी-कविता सुनने-सुनाने की गतिविधि के लिए अर्धवृत्ताकार आकृति में बैठना उपयुक्त होता है। इस गतिविधि में हाव-भाव व चेहरे के भाव-प्रदर्शन का बहुत महत्त्व होता है। इस गतिविधि के दौरान वक्ता की अपेक्षा होती है कि प्रत्येक श्रोता उसकी ओर ध्यान से देखे और सुने तथा कहानी-कविता के उन भावों को भी समझे जिन्हें हाव-भाव से प्रस्तुत किया जा रहा हो, जिन्हें शब्दों से व्यक्त करना सम्भव नहीं होता है। कहानी-कविता के दौरान यदि हम चित्र, चार्ट या कोई टीएलएम प्रदर्शित करते हैं तो उसे प्रत्येक बच्चे को देखने की इच्छा होती है, ऐसे में इस तरह की बैठक अधिक सुविधाजनक होती है। बच्चों की संख्या अधिक होने पर अर्धवृत्ताकार बैठक की दो या अधिक पंक्तियाँ एक के पीछे एक बनाई जा सकती हैं।

3. **'यू' आकार की बैठक :** कक्षा में जब हम टीएलएम के द्वारा पठन, लेखन सामग्रियों के साथ काम करते हैं तो सबसे पहले हमें की जाने वाली प्रक्रिया को प्रदर्शित करने की आवश्यकता होती है। जैसे, कहानी आधारित चित्रों को घटनाक्रम के अनुसार व्यवस्थित करना, शब्द–चित्र जोड़ी बनाना, शब्द-वाक्य पट्टियों को क्रम से जमाना आदि। ऐसे में हमारी इच्छा होती है कि कक्षा का प्रत्येक विद्यार्थी प्रक्रिया को ध्यान से देखे और सुने। इस तरह की गतिविधियों के लिए 'यू' आकार में बैठना उचित होता है। इस तरह की बैठक में बच्चे, शिक्षक के सामने 'यू' आकार में बैठे हुए होते हैं। इससे सभी बच्चे कार्य को ठीक से देख पाते हैं। साथ ही शिक्षक को सामग्री रखने, प्रदर्शित करने हेतु पर्याप्त जगह भी मिल पाती है। इससे पहले इस प्रकार की गतिविधियों में सभी बच्चों को देखने में असुविधा होती थी।

4. **सघन बैठक** : कहानी सुनाने की गतिविधि के दौरान अनेक ऐसे मौक़े भी आते हैं जब बच्चे एक-दूसरे के काफ़ी क़रीब बैठते हैं। वे एक-दूसरे से सटे हुए बैठते हैं। उनके पैर आपस में जुड़े हुए होते हैं। उनके बीच ही मेरा भी बैठना हुआ है। इस प्रकार की बैठक का कोई विशेष उद्देश्य

नहीं रहा है, बस एक स्थिति होती है जिसमें बच्चों में शिक्षक के करीब बैठने की होड़ होती है, उसे पूरा करना। मैंने अपने अनुभव में देखा है कि छोटे बच्चे शिक्षक के जितना हो सके पास बैठना चाहते हैं। उनकी इच्छा होती है कि शिक्षक उन्हें स्पर्श करें, अधिक-से-अधिक बात कर सकें, साथ ही वे शिक्षक द्वारा लाई सामग्रियों को जल्दी-से-जल्दी देख सकें। इस तरह की बैठक से हम अधिक बच्चों के पास हो सकते हैं। इस तरह की बैठक का अपना अलग आनन्द भी है। इसमें बच्चे क़रीब होते हैं, अतः हमें बोलने में कम ऊर्जा लगती है। हम घटना अनुसार अपनी आवाज़ में अधिक आरोह-अवरोह तथा हाव-भाव का प्रदर्शन कर पाते हैं। बच्चे भी अधिक ध्यान से सुनते हैं। परन्तु इस प्रकार से ज़्यादा देर तक बैठना सम्भव नहीं होता है।

5. **समूह बैठक :** अक्सर पहली, दूसरी की कक्षाओं में चित्र बनाने, चित्र पर चर्चा करने, शब्दों-वर्णों को क्रम से सजाने जैसे काम होते रहते हैं। ऐसे कामों को छोटे समूहों में कराना सुविधाजनक होता है। यह बच्चों को आपस में साथ-साथ सीखने का अवसर प्रदान करता है परन्तु इसके लिए ध्यान रखना होता है कि समूह में कितने बच्चे होने चाहिए। मैंने ऐसे कामों को कक्षाओं में नियमित रूप से कराया है। इस तरह के कामों के लिए लगभग 4-5 बच्चों को एक साथ रखकर समूह-काम कराना अच्छा रहा है। यदि हमारी कक्षाओं में 30 बच्चे हैं, तो 5-5 बच्चों के 6 समूह बनते हैं जिन्हें 2 पंक्तियों में बैठाकर काम करना सहज होता है।

6. **ग्रीनबोर्ड/ब्लैकबोर्ड की ओर मुँह करके बैठना :** शिक्षक को अधिकांश काम ग्रीनबोर्ड/ ब्लैकबोर्ड पर करना होता है, ऐसे में आवश्यक होता है कि बच्चे सहजता से बोर्ड को देख सकें। बोर्ड और बच्चों के बीच की दूरी उचित हो, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का बैठक स्थान अनुकूल जगह पर हो। इन बातों के ध्यान के साथ ही बच्चे-से-बच्चे के बीच की दूरी भी उचित हो। बच्चे बहुत पास-पास होने से थोड़ी अव्यवस्था भी होती है, वहीं अधिक दूरी होने से हर बच्चे के काम को सतत देख पाना मुश्किल होता है। मैंने बोर्ड से देखकर लिखने व पढ़ने दोनों कामों के लिए अलग-अलग तरह से बच्चों को बैठाने का प्रयास किया है। जैसे पढ़ने के कामों के दौरान बच्चों के बीच की दूरी थोड़ी कम और लिखने के कामों के लिए दूरी थोड़ी अधिक। इतनी कि बच्चों को कॉपी-स्लेट आराम से रखते बने, उनके शरीर आपस में न टकराएँ। यदि गतिविधि पहले से तय हो तो उचित बैठक व्यवस्था बनाने में सरलता होती है। मैं इस तरह की व्यवस्था में पंक्तिबद्ध होकर ही बैठने पर बहुत अधिक दृढ़ नहीं हूँ। मेरा मानना रहा कि बच्चे आराम से बैठें, सबको बोर्ड का काम स्पष्टता से दिखे और मैं भी उनको स्पष्टता से देख सकूँ। इस बात का ज़रूर ध्यान रखा कि जब भी इस तरह से बैठना हो तो सभी बच्चों का स्थान बदलता रहे। कोई एक जगह ही उनके लिए तय नहीं हो जाए।

7. **स्तरानुसार बैठक :** कक्षाओं में एक स्थिति यह भी होती है जिसमें कुछ बच्चों के सीखने-समझने के लिए हमें अलग तरह के काम करने या विशेष काम देने की आवश्यकता होती है। कई बार इन बच्चों के अलग समूह बनाकर काम करते हैं। इनकी संख्या 5–6 या अधिक होने पर 2-3 बच्चों के छोटे समूह बनाकर काम किए गए हैं। इन्हें कक्षा की खाली और बड़ी जगह में स्वतंत्र रूप से बैठाना अच्छा होता है। इसमें दो मुख्य समूह व समूहों के कुछ उप-समूह हो जाते हैं।

मैंने अनुभव किया है कि छोटे बच्चों की कक्षाओं में एक ही कालखण्ड में अलग-अलग प्रकार की दो-या-दो से अधिक प्रकार की बैठक व्यवस्थाएँ हो जाती हैं। बैठक व्यवस्था में परिवर्तन भी एक चुनौती भरा काम है। कई बार लगता है कि बच्चों को इस तरह बार-बार स्थान परिवर्तित करके बैठाने से तो हमारे कालखण्ड का बहुत समय निकल जाएगा और यह सच भी हो सकता है यदि हम इसे नियमित व्यवहार में न लाएँ। इस तरह की व्यवस्था बनाना ज़मीन में बैठने वाले बच्चों के लिए आसान होता है। प्रायः कक्षा पहली एवं दूसरी के बच्चों को ज़मीन में दरी या गद्दे बिछाकर बैठाना उचित होता है। ज़मीन में बैठने से बैठक व्यवस्था शीघ्रता से बनती है क्योंकि टेबल-कुर्सी को सरकाने में लगने वाले समय की बचत होती है। साथ ही शोर से बचा जा सकता है।

इस प्रकार से उचित और गतिविधि आधारित बैठक होने से बच्चों के साथ काम करना सहज होता रहा है। बच्चों के सीखने पर होने वाले सकारात्मक प्रभाव को मैंने अनुभव किया है। मैं अपने अनुभवों से प्रेरित हुआ हूँ और बच्चों के साथ सहजता से काम करना सम्भव हुआ है। अब तो नियमित रूप से इस तरह से बैठक व्यवस्था बनाकर काम करना कक्षागत प्रक्रिया का आवश्यक अंग बन गया है।

गजेन्द्र कुमार देवांगन अज़ीम प्रेमजी स्कूल धमतरी, छत्तीसगढ़ में पिछले छह वर्षों से शिक्षक हैं। इससे पहले वे छत्तीसगढ़ के शासकीय विद्यालय में 12 वर्ष तक शिक्षक रहे हैं। बच्चों के लिए कविता-कहानी लिखना, संगीत सुनना और चित्रकारी करना उन्हें अच्छा लगता है। उनसे gajendra.dewangan@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

बातचीत : एक मज़ेदार टीएलएम

जनक राम

जब हम शिक्षा में काम करते हैं तो दावा नहीं कर सकते कि शिक्षण की यह विधि एकदम सही है जिससे प्रत्येक बच्चा आसानी से सीख जाता है। शिक्षा की विभिन्न अप्रोचों को अपनी शिक्षण विधि में उपयोग करने से घबराना नहीं चाहिए। मेरा मानना है कि प्रत्येक बच्चा सीख सकता है। सीखने में समय ज़रूर अधिक लग सकता है। 2014 में अपने फैलोशिप के साक्षात्कार के लिए देहरादून गया था तब मैंने वहाँ के ऑफिस में एक पोस्टर पर लिखा स्लोगन पढ़ा था, "बातचीत" बच्चों से मिलने, उन्हें समझने का सबसे बढ़िया जरिया है। जब अपनी किसी मान्यता को कहीं पर लिखा देखो तो विश्वास और बढ़ जाता है। इसी "बातचीत" को मैं अपने शिक्षण के दौरान शिक्षण सहायक सामग्री के तौर पर उपयोग करते आया हूँ, जो प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को मूर्त से अमूर्त में सोचने में सहयोग करती है।

कक्षा 5 में मैंने बच्चों को एक कहानी सुनाई। मेरे यहाँ रोज़ दूध वाले भैया आते हैं। एक दिन मेरी भतीजी ने दूध वाले भैया से पूछा, "आपके यहाँ रोज़ कितना दूध होता है?" दूध वाले भैया ने कहा, "अभी 7 गायें हैं जो लगभग 56 लीटर दूध दे रही हैं।" मेरी भतीजी ने कहा, "इसका मतलब आपकी हर गाय 8 लीटर दूध देती है।" दूध वाले भैया ने कहा, "नहीं, कोई गाय 5 लीटर से कम और कोई गाय 5 लीटर से अधिक दूध देती है। लेकिन कुल मिलाकर 56 लीटर दूध होता है।"

मेरी भतीजी ने कहा, "ऐसा कैसे होगा? मैं समझी नहीं।" दूध वाले भैया, "दोनों लाल गायें क्रमश: 6 और 7 लीटर, काली-भूरी गाय 8 लीटर, भूरी गाय 12 लीटर, भूरी गाय 14 लीटर, सफ़ेद गाय 5 लीटर और चितकबरी गाय 4 लीटर दूध देती है, तो हो गया न 56 लीटर?" मेरी भतीजी को दूध वाले भैया की बात ठीक से समझ नहीं आई। वह सोचती रही और मेरी ओर देखने लगी और बोली, "बड़े पापा 56 लीटर दूध है तो प्रत्येक गाय से 8-8 लीटर दूध आएगा न लेकिन दूध वाले भैया तो .....?" मैंने कहानी ख़त्म करते हुए बच्चों से कहा कि आप बताओ कैसे दुविधा दूर करें मेरी भतीजी की? कक्षा के 30 साथियों (बच्चों) में से 2 लोगों ने हाथ ऊपर उठाया। तो मैंने कहा, "चलो ऐसा करते हैं कि कुछ गतिविधि करते हैं। फिर उस गतिविधि के बारे में बात करेंगे और उसके बाद सभी विद्यार्थियों मिलकर मेरी भतीजी की दुविधा दूर करेंगे।" सभी बच्चों ने सहमति बोलकर जताई।

मैंने कक्षा के विद्यार्थियों में से 6 को उनके हाथ में क्रमश: 1, 2, 3, 4, 5, 3 कंचे दिए और अपनी-अपनी मुट्ठी बन्द करने को कहा। फिर मैंने कहा कि जब मैं शुरू करने को कहूँ तो आप 6 एक समूह में एकत्र हो जाएँ और इन्हें बराबर-बराबर बाँट लें। फिर जिसका नाम लिया जाए वह बताएगा कि कैसे बाँटा। मैंने कहा, "शुरू....।" बच्चे एकत्र हुए। उनके बीच कुछ बातचीत होने लगी। कुछ देर बाद उन्होंने कहा हो गया। मैंने कहा, "ठीक है। अब इसे कान्हा कक्षा में प्रस्तुत करेंगे।" कान्हा ने कहा, "पहले हमने देखा कि किसके हाथ में कितने कंचे हैं? मेरे हाथ में सबसे ज्यादा 5 कंचे थे तो मैंने सबसे कम वाले जिसके हाथ में 1 कंचा था उसे 1 कंचा दिया। फिर 4 कंचे वाले ने 2 कंचे वाले को 1 कंचा दिया। फिर देखा कि अब तीन के पास 3-3 कंचे हो गए हैं। तब मैंने 1 कंचा और उसी 1 कंचे वाले को दे दिया। अब सभी के पास 3-3 कंचे हो गए थे।"

"आपके समूह में कोई विद्यार्थियों कुछ कहना चाहता है?" मैंने पूछा। उन्होंने "नहीं" कहा। मैंने यह प्रक्रिया 5, 4, 5 विद्यार्थियों को लेकर दोहराई। सबके हल करने की प्रक्रिया कान्हा ही जैसी थी। फिर मैंने कक्षा के सभी 30 विद्यार्थियों को प्लास्टिक कप दिए। जिसके पास जितने कप हैं उन सभी में बराबर-बराबर कंचे आने चाहिए। विद्यार्थियों ने अपने-अपने टेबल पर कप रख लिए और उसको हल करने लगे। मैंने घूमकर देखा कि कुछ विद्यार्थी पहले समूह में अपनाई गई विधि को दोहरा रहे थे तो कुछ अलग करने की कोशिश कर रहे थे (जिन दो विद्यार्थियों ने पहले हाथ उठाया था उन्हें मैंने बोर्ड में लिखकर हल करने को अलग से दे दिया)। कुछ देर बाद मनीषा और आरजू एक साथ बोलीं, "हम एक अलग ढंग से इसको हल कर सकते हैं।" मैंने कहा, "आप इसे कक्षा में सभी के सामने प्रस्तुत करें।" आरजू ने कहा "मैं मनीषा से थोड़ी बातचीत कर सकती हूँ?" मैंने कहा, "ज़रूर।" उन्होंने आपस में कुछ देर बातचीत की और बोर्ड के सामने मेज़ पर अपने 6 प्लास्टिक कप रखते हुए आरजू बोली, "टीचर" (तभी मैंने इशारे से बताया मुझे नहीं पूरी कक्षा को) वह मुस्कराते हुए बोली, "ठीक है। देखो, मेरे 6 कप में इस प्रकार कंचे रखे थे (मैंने इशारा किया बोर्ड में लिखने का। बोर्ड में लिखते हुए बोली।) - 1, 3, 4, 2, 5, 9। मैंने सभी को एक कप (बीच में दोनों ने एक-एक कप और माँगा था) में डालकर गिन लिया, कुल हुए 24। कितने कप में डालना है – 6। तो मैंने 6 से 24

को भाग किया तो आया 4 तो फिर मैंने सभी कप में 4-4 कंचे डाल दिए।" मनीषा ने कहा, "मेरे 8 कप में 2, 0, 7, 6, 5, 3, 8, 1 कंचे थे। मैंने भी इसे एक कप में डालकर गिना तो आया 32 और इसे डालना था 8 कपों में तो 8 से भाग कर दिया 32 को और आया 4। इस प्रकार सभी कप में 4-4 कंचे आएँगे।" यह सुनकर वे दोनों (रनिंग बोर्ड में लिखने वाले) विद्यार्थियों मुस्कुरा रहे थे। मैंने प्रश्न किया, "आरजू सबसे कम कंचे कितने थे?" आरजू, "1"। "और सबसे अधिक?'' आरजू, "9''। इसके बाद बाकी बचे विद्यार्थियों भी 'हल कर लिया' की आवाज लगाने लगे। मैंने पहले के भी दो साथियों को बुला लिया। उनसे पूछा तो उन्होंने बताया कि उन्होंने भी पहले सभी को जोड़कर फिर भाग कर हल निकाला था। मैंने कहा, "आरजू और मनीषा जो 4 कंचे बता रही हैं, वह मान 1 और 9 के बीच में ही कहीं है?" आरजू और मनीषा ने कहा "हाँ।" मैंने विद्यार्थियों को बताया कि बीच के इस मान को ही हम औसत कहते हैं। ये औसत कैसे आया? इसके लिए कोई नियम बना सकते हैं क्या?

कान्हा जो इतने देर से अपने कंचे से खेल रहा था, तपाक से बोला, "मैं बताऊँगा टीचर ।" मैंने कहा, "बताओ।" तभी कई बच्चों ने हाथ खड़े कर लिए। जिसने पहले हाथ उठाया था (बच्चों के नियमानुसार) उसको अवसर दिया गया। कान्हा ने कहा, "पहले सभी कंचों को मिला के जोड़ दिया।" कान्हा थोड़ी देर रुका, फिर बोला, जितना दिया था उससे भाग कर देंगे।" मैंने कहा, "बढ़िया, तो ऐसा करते हैं कि सभी की बात को सुनते हैं और मैं बोर्ड पर लिखता हूँ। एक जैसी बात पर सहमति बनाते हैं।" बच्चों ने सहमति में "ठीक है" बोला। मैंने तब तक इशारे में सभी को बैठने के लिए कह दिया था। बच्चों ने अपनी-अपनी बात रखी। मैंने उसे बोर्ड पर लिखा। बच्चों की सहमति इस बात पर बनी कि यदि सभी को दी गई या प्राप्त संख्या बराबर मिल रही हों तो -

औसत = सभी संख्याओं का योग / कुल दिया गया

मैंने बातचीत आगे बढ़ाई। "हमें कहानी और कप में दी गई संख्याओं के द्वारा कुछ न कुछ जानकारी मिल रही है। इन संख्याओं को हम आँकड़े कहते हैं। तो कहानी में गाय के दूध की मात्रा और तुम्हारे कप में कंचे क्या हैं?" सभी (लगभग) एक साथ बोल पड़े, "आँकड़े।"

"तो हम अपने नियम को एक और तरीक़े से लिख सकते हैं क्या?"

बच्चों ने कहा, "हाँ"।

औसत = सभी दी गई संख्याओं का योग/कुल दी गई इकाइयों की संख्या

मैंने कहा, "तो कहानी को कैसे हल करेंगे?" सभी को रनिंग बोर्ड पर हल करने को कहा। कुछ विद्यार्थियों ने अपने कंचे वाले सवाल को भी हल किया।

हल इस प्रकार था -

दूध वाले के पास दूध होता है – 6, 7, 8, 12, 14, 5 और 4 लीटर

दूध का कुल योग = 56 = 4+5+14+12+8+7+6 लीटर

कुल गायों की संख्या = 7

प्रत्येक गाय से दूध मिलेगा = 8 = 7 ÷ 56 लीटर

इसके बाद हमने कई मौखिक और लिखित सवाल हल किए।

अनुमान लगाओ

यदि एक क्रिकेट खिलाड़ी ने पाँच मैच में 0 ,5 ,10 ,15 ,20 रन बनाए तो बताओ उसका औसत रन, प्रति मैच क्या था ?

बच्चे अनुमान लगा पाए कि औसत 0 और 20 के बीच में आएगा।

गृहकार्य

- बच्चों को मैंने 6 समूहों में बाँटा और उनकी ऊँचाई का औसत निकालने को दिया।
- बच्चों को समूह के वज़न का औसत निकालने को दिया गया।
- कुछ अपने मन के औसत से सम्बन्धित सवाल बनाने को दिए।
- साथ ही कुछ बच्चों को पाठ्यपुस्तक के अभ्यास दिए।

मेरी समझ

- सभी बच्चों के साथ मिलना, बात करना काम आया जो असेम्बली, ब्रेक के समय, खेलने के समय में और स्कूल की विभिन्न गतिविधियों के दौरान किया।
- बच्चे स्वयं हल खोज सके और नियम (सूत्र) स्वयं बनाने में मज़े लिए।
- बातचीत के समय दिए गए आँकड़ों का भी ध्यान रखना होगा जो अधिकतर बच्चे हल करते समय भूल गए थे।
- "प्रत्येक बच्चा सीख सकता है, प्रयास करते रहना होगा" मेरे इस विश्वास को मज़बूती मिली।

References:

1 Classroom experiences and Lesson plans

2 Pull-outs from Azim Premji University, Bengaluru

3 Teaching-Learning at Digantar, Rajasthan

4 SCERT textbook, Chhattisgarh and NCERT book, *'Ganit ka Jadu/Magic of Maths'*

जनक राम अज़ीम प्रेमजी स्कूल धमतरी, छत्तीसगढ़ में शिक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं। इससे पहले वे ट्युलिप ग्रुप ऑफ कम्पनीज प्राइवेट लिमिटेड के विओला डाइग्नास्टिक सिडकुल पन्तनगर, प्लांट में एक केमिस्ट सुपरवाइजर के रूप में काम कर रहे थे। उन्होंने हिन्दू कॉलेज मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश से विज्ञान स्नातक की उपाधि प्राप्त की है। साथ ही बीएड और एमए (शिक्षा एवं समाजशास्त्र) की उपाधि कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल से प्राप्त की है। 2014 में, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में एक फैलो के रूप में जुड़े थे। उन्हें शिक्षक के तौर पर 9 वर्षों का अनुभव है। वे बच्चों के साथ मिलकर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में रुचि रखते हैं। उनसे janak.ram@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

नज़रिया अपना-अपना

ललिता यदुवंशी

आमतौर पर किसी सन्दर्भ के परिप्रेक्ष्य में अलग-अलग विचारों को सम्मान एवं स्वीकार्यता कभी मिल पाती है और कभी नहीं। दुनिया को खुली आँखों से देखने के लिए हर इंसान का अपना एक नज़रिया होता है। जो व्यक्ति जैसा सोचता है दुनिया उसे वैसी ही नज़र आती है। नज़रिया हमारी सफलता पर बहुत बड़ा फ़र्क डालता है। हमें स्वयं को, अपने परिवार और मित्रों को हमेशा सकारात्मक सोच देना चाहिए। किसी भी क्षेत्र में पूर्ण धारणा बनाने के पूर्व अलग कोण से सोचने और फिर जाकर निर्णय लेने की ज़रूरत होती है। मुसीबतों में अवसर ढूँढ़ने का प्रयास ही सकारात्मक नज़रिए को दर्शाता है क्योंकि सिर्फ़ हाथ पर हाथ धरे रहने से काम नहीं हो सकता।

यदि अपने जीवन में सफल होना है तो अपने अन्दर सकारात्मक नज़रिया विकसित करना होगा। सफलता का प्रतिशत तब तक नहीं बढ़ेगा जब तक हम अपने अन्दर सकारात्मक नज़रिए वाला बीज नहीं बो देते। आमतौर पर अपने आसपास अक्सर यह कहते हुए सुना है कि इस सन्दर्भ में 'ऐसा है'। यह बहुत ही कम सुना कि 'इस बारे में मैं ऐसा सोचता हूँ और आप जो सोचते हैं वह आपका नज़रिया होगा। ऐसा भी हो सकता है।' क्योंकि संवाद के दौरान जाने क्यों हमारा नज़रिया कभी-कभी अहम बनकर हमें यह स्वीकारने से रोकता है कि उनका अपना विचार है या हो सकता है। जैसा मैं सोचता हूँ/सोचती हूँ ज़रूरी नहीं कि वह भी ऐसा सोचते हों। अच्छे संवाद के दौरान यह ज़रूरी है कि विचारों के हर नज़रिए को सभी के समक्ष रखा जाए। अपनी बात को खुलकर कहा जाए। हर नज़रिए के प्रति तार्किक चिन्तन शैली को सकारात्मकता के साथ ग्रहण किया जाए।

एक शिक्षिका होने के नाते कुछ बात चल रही हो और कक्षा-कक्ष और बच्चों का ज़िक्र न आए ऐसा तो हो नहीं सकता। इसी बात से जुड़ा डायरी में लिखा एक अनुभव साझा करना चाहती हूँ जो कुछ वक़्त पहले का है, जिसमें बच्चों ने किसी एक सन्दर्भ के बारे में एक-दूसरे की बातों को सुना, अपने विचारों को रखा और उन विचारों में उनके नज़रिए को समझने का मौका मिला।

बात 4 फरवरी 2015 की है। एक कहानी पर काम हुआ। 'बोलते चेहरे' द्वारा काम किया गया। इसमें 4 विभिन्न भाव वाले चित्र बनाए गए। इस कार्य को कराने का मेरा उद्देश्य था कि बच्चे किसी चित्र, घटना, समाचार, अनुभव, कहानी या किसी भी विषयवस्तु को सुनकर, पढ़कर या देखकर उसमें निहित भाव को समझें एवं सहजतापूर्ण, स्पष्ट कारणों के साथ अपने विचार व्यक्त करें।

शुरुआत में सभी ने आँखें बन्द कीं। उन्हें धीरे-धीरे, धीमी आवाज़ में स्पष्ट निर्देश दिए गए कि ऐसी कोई बात याद करो या कोई अनुभव जो आप अपने साथियों के साथ साझा करना चाहते हैं। और जो इस कार्य को निर्देशानुसार पूर्ण कर लें, सोच लें, वह अपनी आँखें खोलते जाएँ और दूसरों के काम में व्यवधान न डालें। बच्चों ने वैसा ही किया। सभी ने सोचा और अपने अनुभव को संक्षिप्त रूप में सभी के साथ साझा किया कि यह अनुभव किस से जुड़ा है? किसी का अनुभव शादी से जुड़ा था, तो किसी का किताब से। किसी का घर इत्यादि के बारे में था। फिर मैंने पूछा, "बताओ आपने जो सोचा वह इन चारों चेहरे में से किसके साथ जोड़ा जा सकता है?" सभी ने अपने नज़रिए के अनुसार चेहरों को उठाकर अपनी-अपनी बात को रखा। बच्चों ने ये महसूस किया कि किसी चीज़ के बारे में सुनकर, पढ़कर या देखकर हो सकता है कि किसी को अच्छा लगे और किसी को नहीं। उसके पीछे सबके अपने-अपने कारण हो सकते हैं।

मैंने भी अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए अगला कार्य शुरू किया। दो चित्र बोर्ड पर बनाए गए। चित्र के बारे में कोई बात नहीं की गई। सभी बच्चों को अनुमान लगाने को कहा गया कि इस चित्र को देखकर आपको कैसा लग रहा है और क्यों? बच्चों को थोड़ा समय दिया गया। बच्चों द्वारा सोचे जाने के बाद मेरे द्वारा निर्देश दिया गया कि चित्रों को देखकर बोलते चेहरों में से एक उठाओ और उसका कारण बताओ। चित्र के सन्दर्भ में बच्चों के अलग-अलग नज़रिए और कारणों को सुनकर अच्छा लगा। एक ही चित्र को देखकर एक बच्चे ने कहा, "मुझे यह चित्र इसलिए अच्छा लगा क्योंकि विद्यालय के पास नदी है जिसे पार करके बच्चे मजे से स्कूल आ रहे हैं।" वहीं इसी चित्र के बारे में अन्य बच्चों ने कहा कि मुझे उदासी वाला चेहरा लगाना है क्योंकि उन्हें लगा कि बच्चों की विद्यालय से छुट्टी हो गई है और बच्चे घर जा रहे हैं।

सभी बच्चों के संवादों व कारणों को सभी ने ध्यान से सुना और मैंने बात को समझते हुए अन्तिम बात सोचने के लिए कहा, "तो बताओ, इस कहानी को आप सुखान्त मानोगे या

दुखान्त और क्यों? कहानी के दौरान आप कब ख़ुश हुए? कब उदास? कहाँ परेशान? और कब गुस्सा आया? कौन-से पक्ष हैं जो आपको अच्छे लगे? कौन-से ऐसे पक्ष थे जो आपको कम अच्छे लगे और क्यों? इस बारे में घर पर भी सोचना। कल बात करेंगे और कुछ अन्य भी।" इतना कहते हुए मैं कक्षा से बाहर आने लगी, तभी कक्षा से बाहर निकलते हुए बच्चों का सवाल था कि – दीदी! जब आपने चित्रों को बनाया तब आपने क्या सोचकर बनाया?

'नज़रिया' हमारे बिलीफ सिस्टम पर निर्भर करता है। हमने जो बचपन से सुना है, जिस माहौल में हम बड़े हुए हैं उसी नज़र से हम दुनिया को देखते हैं। कुछ लोगों में वक़्त के साथ समझ आती जाती है, मगर कुछ लोगों का नज़रिया वही रहता है। हर इंसान के सोचने का तरीक़ा अलग होता है। एक ही परिस्थिति में सबका नज़रिया अलग होगा। हर इंसान जो भी करता है उसकी नज़र में वह सही होता है। पर कभी-कभी हमें सामने वाले की नज़र से भी सोचना चाहिए और अपनी समझ को सही मायने में पुख्ता बनाने हेतु हमें अपना नज़रिया बदलना होगा देखने का, सोचने का और समझने का क्योंकि जो हम देखते हैं, वही हम सोचते हैं। धीरे-धीरे वही हम समझने लगते हैं बशर्ते कि हमारा नज़रिया सकारात्मक हो, तर्कपूर्ण हो।

ललिता यदुवंशी अज़ीम प्रेमजी स्कूल, टोंक, राजस्थान में हिन्दी और अँग्रेज़ी पढ़ाती हैं। वे शिक्षा में स्नातक और हिन्दी और शिक्षा में स्नातकोत्तर हैं। वह 2005 से विभिन्न संस्थानों में एक शिक्षिका के रूप में काम कर रही हैं। उनके शौक में शामिल है पढ़ना, संगीत सुनना और यात्रा करना। उनसे lalita.yaduvanshi@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

स्कूल असेम्बली का उपयोग और उद्देश्य

मोनिका भण्डारी

इस लेख में, मैं स्कूली जीवन के दो महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा करूँगी। सबसे पहले, स्कूल **असेम्बली** का उद्देश्य और उपयोग और दूसरा, एक ही विषय को अलग-अलग स्तर पर पढ़ाना।

किसी भी स्कूल में बच्चों के साथ काम करते हुए हम हर रोज़ नए-नए अनुभवों से रूबरू होते हैं। मेरा मानना है कि यदि हम अपने स्कूल में किसी विषय के विशेषज्ञ बनकर जाएँ तो बच्चों के साथ सामंजस्य बिठाना मुश्किल हो जाता है। ऐसा इसलिए कि हम बच्चों के साथ कुछ अलग सीख रहे होते हैं और फिर विषय की विशेषज्ञता कहीं पीछे छूट जाती है। यहाँ मेरा तात्पर्य यह नहीं कि विषय-विशेषज्ञता बुरी है पर हमें खुद को उन बच्चों के स्तर तक ले जाना होता है जहाँ पर वे उस वक़्त होते हैं। ऐसा ज़रूरी भी नहीं है कि सारे बच्चे एक ही स्तर के हों। हमारे स्कूल में आने वाले बच्चे अधिकतर अलग-अलग स्तर के ही होते हैं और कहीं-न-कहीं यह हमारे लिए शिक्षण में एक समस्या बनकर उभरती है।

मैं कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों को विज्ञान व गणित पढ़ाती हूँ। दोनों ही विषय तब काफी चुनौतीपूर्ण हो जाते हैं जब कक्षा 6 में आने वाले बच्चों को गणित की मूल संक्रियाओं जोड़, घटाना, गुणा, भाग की ही समझ पक्की नहीं होती। यदि पाठ्यक्रम के अनुसार चलने का सोचा जाए तो थोड़ा मुश्किल हो जाता है। गणित जैसे विषय की मोटी किताब को देखकर भी कई बार मन में सवाल उठते हैं कि कब और कैसे हो पाएगा इतना। बच्चों की रुचि एवं स्तर के अनुसार कुछ करवा पाऊँगी या नहीं। कुल मिलाकर जूझने की स्थिति होती है। फिर जब बारीक़ी से सोचो कि क्या ज़रूरी है मेरे इन प्यारे बच्चों के लिए - पाठ्यक्रम या मूलभूत क्रियाओं, अवधारणाओं की समझ? तब जाकर लगता है मुझे कुछ ऐसा करना है कि इन बच्चों का विश्वास भी मुझ पर बना रहे और किसी विषयवस्तु पर इनकी समझ पक्की बन जाए।

बच्चे बहुत क्रियाशील और कल्पनाशील होते हैं। कई बार तो हम उनकी प्रकृति को समझ ही नहीं पाते। अनेकों बार ऐसा हुआ है कि मुझे बच्चों के अनुभवों से ही सीखने की ज़रूरत पड़ी है। मेरी दृष्टि में शिक्षा का उद्देश्य यह कतई नहीं है कि दी गई किताबों को एक किनारे से दूसरे किनारे तक पढ़ाकर रख दिया जाए। बल्कि ज़रूरी है कि बच्चों के सामने एक ऐसा वातावरण तैयार किया जाए जो उनके लिए स्वतंत्र एवं सुरक्षित हो तथा जिसमें वे कुछ ऐसा सीख रहे हों या गढ़ रहे हों जो उनकी समझ विकसित करने वाला हो।

अपने स्कूल के बच्चों के साथ जो कुछ काम कर पाई हूँ या कर रही हूँ उसे यहाँ पर साझा कर रही हूँ।

स्कूल असेम्बली का उपयोग और उद्देश्य

स्कूल असेम्बली हर स्कूल का ज़रूरी अंग माना जाता है। मेरी दृष्टि में भी यह ज़रूरी है क्योंकि यही वह वक़्त होता है जब सभी बच्चे एक साथ नई ताजगी लिए होते हैं। वे इस सभा में एक-दूसरे से कुछ सीख रहे होते हैं। बहरहाल मैंने महसूस किया कि सभी बच्चे अलग-अलग स्तर के होते हैं जिन्हें हम क्लासवाइज समूहीकृत नहीं कर सकते। हमें उनको उनके स्तर के अनुरूप समूह में बाँटने की ज़रूरत होती है। असेम्बली का मुख्य उद्देश्य भी तो यही है कि बच्चे अपने संकोच को भूलकर समूह में कुछ सीखें तथा उसका प्रदर्शन करें। इसी क्रम में मैंने सर्वप्रथम बच्चों को तीन समूहों में बाँटा। अधिकांश बच्चे सबके सामने बोलने में संकोच करते हैं। उनमें आत्मविश्वास की कमी होती है। ऐसी स्थिति तब है जबकि मेरे स्कूल में बोलने की पूरी स्वतंत्रता दी गई है। उनका आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए मुझे कुछ रूपरेखा तैयार करनी थी ताकि प्रत्येक बच्चा असेम्बली में या अन्य जगहों पर भी आगे आकर कुछ बोले। आमतौर पर बच्चे आगे आने में घबराते हैं।

इसी कमज़ोरी को दूर करने के लिए मैंने स्कूल की विद्यार्थी संख्या के अनुसार बच्चों के तीन ग्रुप बनाए। प्रत्येक ग्रुप में लड़के-लड़कियाँ समान रूप से थे। कक्षा 6 से 8 तक के स्कूल में किशोरवय बच्चों के साथ यह बात भी सामने आती है कि लड़के-लड़कियाँ अलग-अलग ग्रुप में रहना चाहते हैं पर उनके संवेगात्मक विकास को देखते हुए मैंने प्रत्येक ग्रुप में समान रूप से दोनों की भागीदारी करवाई। प्रत्येक ग्रुप को प्रार्थना करवाने, कक्षा-कक्षों की सफाई करवाने, क्यारियों में पानी डालने आदि की ज़िम्मेदारी एवं अन्य छोटे-मोटे कार्य सौंप दिए। प्रत्येक ग्रुप को अलग-अलग नाम जैसे येलो हाउस, रेड हाउस तथा ग्रीन हाउस दे दिए। इनके लिए इन्हीं रंगों के बैज भी बनवाए हैं। अब कार्य करने की ज़िम्मेदारी बच्चों की होती है।

पहले दो दिन प्रथम ग्रुप, दूसरे दो दिन द्वितीय तथा तीसरे दो दिन तृतीय ग्रुप की ज़िम्मेदारी होती है। प्रत्येक ग्रुप अपने कार्य को अच्छे से अच्छा करना चाहता है। प्रार्थना सभा में भी ग्रुपवाइज

बच्चे प्रार्थना, समूह-गान आदि करते हैं। हाँ, सामान्य ज्ञान पूछना, कहानी, आज का विचार, मुख्य समाचार, स्थानीय समाचार आदि कक्षा के रोल नम्बर के अनुसार होते हैं। इससे सभी बच्चों को बोलने का मौक़ा मिल जाता है। ऐसा करने से अब संकोची बच्चे भी कुछ-न-कुछ बोलने लगे हैं। कुछ बच्चे तो आगे जाकर कमाण्डस भी देने लगे हैं। असेम्बली में ग्रुप में काम करने में मज़ा तो आया ही, साथ ही बच्चों में अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास होने लगा है। बच्चों के स्तर के अनुरूप काम करने में यही अच्छी बात है कि प्रत्येक बच्चे को अवसर मिलता है। कुछ बच्चे अभी भी आधा-अधूरा बोलते हैं पर प्रयास जारी है। क्यारियाँ बनाने, सफ़ाई करने में भी बच्चे भाग लेने लगे हैं। अतः ग्रुप में काम करने के अनेक फायदे हैं। मुख्यतः मेरा उद्देश्य यह था कि बच्चे निःसंकोच होकर कुछ बोल पाएँ तो असेम्बली इसके लिए सबसे अच्छा माध्यम सिद्ध हुआ। ग्रुप में कार्य करना तो बड़ा उपयोगी हो रहा है। बच्चे ग्रुप के महत्त्व को समझने लगे हैं। कई बार शिकायतें भी आती हैं कि फलाँ बच्चा फलाँ काम नहीं कर रहा है तो इन शिकायतों का निस्तारण भी उन्हीं के माध्यम से हो जाता है।

अतः असेम्बली समूह में कार्य करने का अच्छा एवं उपयोगी साधन है जो कि अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने में सहायक है।

विभिन्न स्तरों पर एक ही विषय पढ़ाना

जैसा कि मैं पहले कह चुकी हूँ कि हमारे पास आने वाले बच्चे अलग-अलग स्तर के होते हैं। उनकी दक्षताएँ तथा क्षमताएँ अलग होती हैं। ऐसे में विचार आया कि ऐसा क्या किया जाए कि प्रत्येक बच्चे की मूल दक्षताएँ विकसित एवं स्थाई हो सकें। मुझे अपर प्राइमरी में पढ़ाते हुए तीन साल हो चुके हैं। पहले मैं पारम्परिक शिक्षण ही किया करती थी। गणित की मूल संक्रियाएँ अलग-अलग कक्षा में अलग-अलग पढ़ाने में ही काफी समय चला जाता था। ऐसे में कुछ बच्चे प्रत्येक कक्षा में ऐसे भी होते थे जो इन संक्रियाओं को जानते थे तथा आगे पढ़ना चाहते थे। अतः इस समस्या का समाधान भी फिर ग्रुप बनाकर किया। तीनों कक्षाओं से अलग-अलग स्तर के बच्चों की छँटनी की। एक ग्रुप उन बच्चों का जो अभी गणित की मूल संक्रियाओं से ही जूझ रहे हैं तथा दूसरा ग्रुप इनसे आगे की समझ रखने वाले बच्चों का तथा तीसरा ग्रुप उन बच्चों का जो किसी भी टॉपिक को सामान्यतः समझ जाते हैं। इस तरह ग्रुप में काम करने से थोड़ी आसानी हुई लेकिन अन्य शिक्षकों को भी अपनी कक्षाएँ व विषय लेने होते हैं तो प्रत्येक कक्षा से ग्रुप में बच्चों को लेने में कठिनाई भी आई। फिर भी अलग-अलग स्तर निर्धारित हो जाने पर कार्य करने में सुविधा हो जाती है। हमें पता होता है कि किस ग्रुप के साथ आज क्या काम करना है।

कक्षा 6, 7, 8 में गणित विषय में भिन्न पढ़ाने का अनुभव काफी अच्छा रहा। आज तक मैं साधारण तरीक़े से ही पढ़ा रही थी लेकिन मैंने महसूस किया कि बच्चे भिन्न से सम्बन्धित संक्रियाएँ तो कर लेते हैं पर भिन्न की अवधारणा पर उनकी समझ पक्की नहीं है। गणित की अमूर्तता शायद उन्हें विचलित कर रही थी। फिर विचार किया कि ऐसा कुछ करना चाहिए कि बच्चे भिन्न की अवधारणा पर अपनी समझ बना सकें। इसमें कुछ मदद एपीएफ के साथियों ने भी की। उनसे बातचीत के आधार पर मैंने भिन्न की अवधारणा पर कुछ गतिविधि करवाई।

सबसे पहले बच्चों से बातचीत की। भिन्न की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया। कुछ पेपर्स, कैंची, गोंद, कलर्स आदि कक्षा में लेकर गई। फिर मैंने उन्हें बताया कि आज हम कुछ गतिविधि करने वाले हैं जिसमें हम इन पेपर्स को फोल्ड या कटिंग करेंगे तथा कुछ नया बना रहे होंगे। सभी बच्चों ने बड़ी उत्सुकता से इसमें भाग लिया। पेपर्स फोल्डिंग की मदद से उन्हें आधा (1/2), तिहाई (1/3), चौथाई (1/4) पाँचवाँ, छठवाँ... भाग आदि सिखाए। सबसे सुखद यह था कि बच्चे बहुत कोशिश कर रहे थे और काग़ज़ ग़लत फोल्ड हो जाने पर बार-बार सही फोल्ड करने की कोशिश कर रहे थे। अन्त में सब बच्चे अच्छी तरह से भिन्न की पट्टियाँ तैयार कर पाए। उन्हें हमने चार्ट पेपर पर चिपकाकर कक्षा में टाँगा तथा बच्चों ने अपनी कॉपियों पर भी चिपकाया। इन्हीं भिन्न की पट्टियों के आधार पर बड़ी व छोटी भिन्न, आरोही-अवरोही, तुल्य भिन्न पर भी बच्चों की समझ बनी। इस गतिविधि में सबसे अच्छी बात यह थी कि बच्चे ख़ुद-ब-ख़ुद करके समझ रहे थे। इस पर एक वाकया और याद आ रहा है। एक बच्चा था जिसके पेपर्स फोल्डिंग में खराब हो गए थे। गतिविधि के बाद ब्रेक (लंच) टाइम था। सभी बच्चे लंच करने गए लेकिन वह कक्षा में ही बैठा रहा। उसने दुबारा से पेपर फोल्ड किए तथा पूरी भिन्न की पट्टियाँ बन जाने पर ही वह लंच के लिए गया। मेरे लिए यह दिल छू लेने वाला अनुभव था। अगले दिन जब उसने अपना काम दिखाया तो उसकी आँखों की चमक देखते ही बनती थी, अतः ग्रुप में काम करने का यह अच्छा एवं उपयोगी अनुभव रहा।

दीवार-पत्रिका

अपने स्कूल में मैंने दीवार-पत्रिका पर भी बच्चों के साथ कुछ काम करने की कोशिश की है। दीवार-पत्रिका एक ऐसा माध्यम है जो बच्चों की सृजन क्षमता को बढ़ाने का काम करती है। इसमें सभी बच्चे अपनी स्वरचित रचनाओं को सजाकर चार्ट पर चिपकाकर दीवार पर टाँगते हैं। दीवार-पत्रिका केवल दीवार को सजाने के लिए नहीं है। यह तो एक माध्यम है सृजन

क्षमता बढ़ाने का। शुरू में बच्चे स्वरचित चीज़ें नहीं ला पाते क्योंकि सृजन करना शुरुआती तौर पर थोड़ा मुश्किल होता है। इसी बात को आधार बनाकर मैंने पहले बच्चों को खुद कहानियाँ सुनाईं, कविताएँ पढ़वाईं, पुस्तकालय से किताबें पढ़ने को दीं। फिर कुछ बच्चे तो स्वयं रचना कर पाए, कुछ अभी भी कोशिश कर रहे हैं। दीवार-पत्रिका को 'उमंग' नाम दिया गया है। यह माध्यम सृजनात्मकता को बढ़ावा देता है तथा बच्चों में लिखने, चिन्तन करने का कौशल उत्पन्न करता है। सभी बच्चे ख़ुश होकर इसमें सहयोग करते हैं। बच्चे कहते हैं, "मैम! पहले ऐसा कभी हमारे स्कूल में नहीं हुआ। हमें इसमें बहुत मज़ा आता है।"

अलग-अलग स्तर के बच्चों के साथ काम करना चुनौतीपूर्ण तो है लेकिन कोशिश की जाए और समूह में काम किया जाए तो कुछ हद तक सफलता पाई जा सकती है।

अपने स्कूल के बच्चों के साथ काम करते हुए महसूस हुआ कि बड़े उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए पहले छोटे-छोटे उद्देश्यों को पूरा किया जाना ज़रूरी है। मूल अवधारणाओं पर बच्चों की समझ बनाना सबसे आवश्यक है। मेरी कक्षा के अनुभव मुझे हर बार नया करने को प्रेरित करते हैं। अब मेरे बच्चे भी मुझ पर विश्वास जताने लगे हैं। उम्मीद है आगे भी बच्चों के साथ निरन्तर काम करना जारी रहेगा।

मोनिका भण्डारी राजकीय कन्या उच्च प्राथमिक विद्यालय, बल्डोगी, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड में सहायक शिक्षिका हैं। वह विज्ञान पढ़ाती हैं। उनसे monikaamod6006@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

समग्र भाषा पद्धति : मेरा अनुभव

मोनू कुमार शास्त्री

बच्चों को भाषा सिखाने का सही तरीक़ा क्या है ? भाषा-शिक्षण का आरम्भ बिन्दु शिक्षाविदों और शिक्षकों के लिए हमेशा से ही असमंजस और विमर्श का बिन्दु रहा है। वैसे तो भाषा-शिक्षण का आरम्भ कहाँ से हो, इस विषय पर बहुत-से प्रयोग और नवाचारी शिक्षण प्रविधियों का निर्माण किया गया है, परन्तु भाषा-शिक्षण विशेषतया अपने वातावरण और परिस्थितियों पर निर्भर करता है। हर बच्चा भाषा की अपनी समझ स्वयं से विकसित करता है। इसी सन्दर्भ में मेरा भी शिक्षण अनुभव है जिसे मैं आपसे साझा कर रहा हूँ।

जब पहली बार मुझे प्राथमिक कक्षाओं में भाषा-शिक्षण का अवसर मिला तो मुझे हर्ष और उत्साह तो हुआ पर साथ ही साथ चिन्ता भी हुई क्योंकि मेरा प्राथमिक कक्षाओं में अध्यापन का अनुभव नहीं था और विशेष रूप से पहली कक्षा में तो बिलकुल भी नहीं। हर्ष इसलिए कि मुझे छोटे बच्चों से बहुत लगाव है और इनसे कुछ-न-कुछ नया सीखने को अवश्य मिलेगा। अतः जब मैंने पहली कक्षा में जाना शुरू किया तो परम्परागत तरीक़े का ही इस्तेमाल किया, परन्तु इस तरीक़े से मैं असमंजस की स्थिति में था कि मुझे आगे क्या करना है। मैं कक्षा में जा रहा था, कार्य कर रहा था, परन्तु मन में सन्तोष का भाव नहीं था। मन में कुछ हलचल थी कि कुछ ठीक नहीं हो रहा है।

फिर एक दिन मुझे एक कविता मिली 'बादल आया'। इस कविता को पढ़कर मुझे इसमें एक खास बात लगी कि इसमें केवल 'आ' (ा) की मात्रा और बहुत ही कम अक्षरों का प्रयोग था। इसको देखकर मुझे एक तरीक़ा सूझा और मैंने इस कविता की पहली लाइन को बोर्ड पर लिखा और इसके साथ-साथ बादल का चित्र भी बनाया। मैंने कोशिश की कि बच्चे कम-से-कम एक शब्द को पहचान लें। मुझे लगा कि शायद यह प्रयास भी असफल होगा क्योंकि प्रारम्भ में मेरी धारणा थी कि जब बच्चों को वर्णमाला ही नहीं आती तो बच्चे इसे कैसे पहचान पाएँगे? इसके बाद इंटरवल के समय जब मैं बैठा था उसी दौरान एक विद्यार्थी मेरे पास खड़ा बातें कर रहा था। तब मैंने अपने हाथ पर 'बादल' शब्द लिखा और उससे पूछा कि यह क्या है? थोड़ी देर देखने और सोचने के बाद उसने बता दिया। मैं हैरान था क्योंकि मुझे उम्मीद नहीं थी कि वह विद्यार्थी इसका जवाब दे सकेगा। पुनः मैंने दूसरा शब्द पूछा तो उसने उसे भी पहचान लिया।

अगले दिन जब मैंने कक्षा में जाकर उस पंक्ति के शब्दों को लिखकर बच्चों से पूछा तो बच्चों की ओर से सन्तोषजनक उत्तर पाकर मेरा उत्साह और भी बढ़ गया। मैं अगले चार-पाँच दिनों तक इस कविता की लाइनों को क्रम से बोर्ड पर लिखकर बच्चों से पढ़वाता गया और साथ-ही-साथ प्रतिदिन इसकी पुनरावृत्ति भी कराता रहा। बच्चे लाइनों व शब्दों को पहचान रहे थे और इससे मुझे प्रत्येक दिन नया उत्साह व आगे का रास्ता भी मिल रहा था। इसके बाद कविता की पंक्तियों में आए शब्दों के फ्लैशकार्ड बनाकर उन शब्दों को विद्यार्थियों से भी परिचित कराया। इससे विद्यार्थी शब्दों को जल्दी पहचान रहे थे और जिनको समझ में नहीं आ रहा था उनकी मदद भी कर रहे थे। इसके साथ-साथ जो भी पंक्ति विद्यार्थी कक्षा में पढ़ते थे उस लाइन को मैं उनकी कॉपी में लिख देता था जिससे कि वे घर पर भी उन पंक्तियों को दोहरा सकें। प्रतिदिन इस कविता को दोहराने से यह कविता बच्चों को याद भी हो गई थी। इसके बाद मैंने विद्यार्थियों को समूह में बाँट दिया और कविता की पंक्तियों को पट्टियों के रूप में काटकर विद्यार्थियों को मिलाने के लिए दीं। समूह में विद्यार्थियों ने उन लाइनों को सरलता से मिला दिया। इस तरह से मिलाने में विद्यार्थियों को मज़ा भी आ रहा था क्योंकि यह कार्य वे स्वयं रुचि के साथ कर रहे थे और इस पूरी प्रक्रिया को बच्चे एक खेल के रूप में स्वीकार कर रहे थे। तत्पश्चात विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से कविता की पंक्तियों को मिलाने के लिए दिया। लगभग सभी विद्यार्थियों ने इन पंक्तियों को क्रम में लगा दिया। जब विद्यार्थी पंक्तियों को मिला चुके थे तब उनको उन पंक्तियों के शब्दों को अलग-अलग करके मिलाने के लिए दिया गया। विद्यार्थी पंक्तियों के शब्दों को मिला तो रहे थे परन्तु साथ ही भ्रमित भी हो रहे थे और कुछ विद्यार्थी एक-दूसरे की सहायता लेकर बड़े मज़े से अपने कार्य में लगे हुए थे। मुझे महसूस हो रहा था कि पूरी कविता को एक साथ मिलाने से विद्यार्थी कठिनता का अनुभव कर रहे हैं, इसलिए अगले दिन मैंने पूरी कविता के बजाय आधी कविता के शब्दों को दिया। आधी कविता के शब्दों को विद्यार्थी सरलता से मिला रहे थे और साथ ही साथ शब्दों को पहचान भी रहे थे। शब्दों की समझ हो जाने के बाद विद्यार्थियों को यदि ये शब्द कहीं भी दिखते तो वे उनको पहचान लेते थे। बच्चों की सहायता के लिए मैंने इन शब्दों को कक्षा में लगा भी दिया था जिससे कि ये सभी शब्द उनकी नजरों के सामने रहे। इस कविता को पूरा करने में मुझे लगभग तीन हफ़्ते का समय लगा।

इस कविता के बाद मैंने इस कविता के शब्दों से ही नई कविता 'आया बादल' का निर्माण किया। इस नई कविता में लगभग केवल चार शब्द ही नए थे। इस कविता की प्रक्रिया भी पहली कविता की तरह ही चली। इस कविता को बच्चों ने बहुत ही जल्दी समझा। अब विद्यार्थियों का आत्मविश्वास भी पहले की अपेक्षा बढ़ रहा था। इसके बाद मैं बादल शब्द से सम्बन्धित बदलाव भी करता गया। इसी क्रम में, मैं अगले चरण में केवल शब्दों को ही नहीं अपितु शब्दों को अलग कर उनमें आए अक्षरों को भी परिचित कराता गया और उन अक्षरों से नए सरल शब्द बना देता। कभी तुकान्त शब्दों को पूछता तो कभी-कभी वर्कशीट भी देता। इस तरह कार्य करते हुए मुझे लगभग चार-पाँच महीने का समय लग चुका था। अब बच्चों के आत्मविश्वास के साथ-साथ मेरा भी उत्साह चरम पर था, परन्तु अब भी मेरी सबसे बड़ी चिन्ता का कारण यह ही था कि क्या बच्चे वास्तव में इस विधि से पढ़ना सीख पाएँगे? क्या यह विधि उपयुक्त होगी? इस उहापोह में दूसरी तरफ मेरा मन मुझे हमेशा यह ढाढस देता कि मैं पूरे मन से कार्य कर रहा हूँ और इसका परिणाम अच्छा ही होगा।

इसी बीच एक आश्चर्यजनक घटना घटी कि मैंने अपनी कक्षा के विद्यार्थियों को कक्षा में कुछ गतिविधि करते हुए देखा। मैंने यह पाया कि सब विद्यार्थी किसी-न-किसी गतिविधि में मस्त थे परन्तु दो छात्राएँ 'बातूनी' पत्रिका में बादल से जुड़ी एक कविता को पढ़ने का प्रयास कर रही थीं। मैं चुपचाप उनके पीछे जाकर खड़ा हो गया। वे दोनों परस्पर एक-दूसरे की सहायता भी कर रही थीं और जोड़-जोड़कर पढ़ने का प्रयास भी कर रही थीं। ये देखकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई क्योंकि ये दोनों वे छात्राएँ थीं जिनके बारे में मैं सोचता था कि ये तो शायद कक्षा दो में ही पढ़ना सीख पाएँगी। इसके बाद मैंने कक्षा में एक कहानी को पढ़ाना शुरू किया जिसमें बच्चे शब्दों को पकड़ने का प्रयास तो कर रहे थे परन्तु आत्मविश्वास की कमी प्रतीत हो रही थी और मुझे भी लग रहा था कि शायद मैं कुछ ग़लत कर रहा हूँ। बहुत सोचने के बाद मुझे एहसास हुआ कि मैं जिस कहानी/कंटेंट का प्रयोग कर रहा हूँ वह बड़ा भी है और उसमें अधिकतर शब्द बड़े/कठिन हैं। साथ ही कंटेंट में मात्राओं का प्रयोग भी बहुतायत में हुआ है। मैंने मात्राओं के बारे में बच्चों को ज़्यादा बताया भी नहीं था। अतः मैंने सोचा कि क्यों न ऐसी पंक्तियों का प्रयोग किया जाए जिनमें केवल एक ही मात्रा का प्रयोग हो। फिर मैंने ऐसा ही किया और तीन या चार पंक्तियों वाले पैराग्राफ़ का प्रयोग करना शुरू किया। इस तरह के पैराग्राफ़ बनाने में कठिनाई तो बहुत हुई क्योंकि इस पैराग्राफ़ में केवल एक या दो मात्रा का ही प्रयोग होना था और शब्द भी सरल होने चाहिए। बहरहाल, इधर-उधर से खोजने पर और स्वयं बनाने पर मैंने काम चलाने लायक पैराग्राफ़ इकट्ठे कर लिए थे। अपने कार्य को कार्यान्वित करने के क्रम में मैंने वर्कशीट्स का प्रयोग भी बढ़ा दिया था। फलतः बच्चे सरल व छोटे पैराग्राफ़ को पढ़ पा रहे थे। इसके बाद पुस्तकालय में एनसीईआरटी व अन्य प्रकाशन की ऐसी पुस्तकें मिल गईं जिनमें चित्र तो पूरे पेज पर थे परन्तु शब्द बहुत ही कम और सरल भी। इसके साथ ही मैंने उन्हें ऐसी वर्कशीट्स देनी शुरू कीं जिसमें तीन या चार पंक्तियों की कोई कहानी के साथ अति सरल प्रश्न भी थे। कुछ दिन तक तो बच्चे मेरी सहायता लेते रहे। फिर धीरे-धीरे वे स्वयं यह करने लग गए थे। मार्च का महीना आते-आते अधिकतर बच्चे इस अवस्था में आ गए थे कि वे अपनी कक्षा के स्तर के पाठ्य को सरलता से पढ़ पा रहे थे।

सत्र के अन्त में मैं अपने कार्य से सन्तुष्ट था। मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला था। मैं आज भी सोचता हूँ कि वास्तविक शिक्षक कौन है, मैं या बच्चे? परन्तु भाषा-शिक्षण की इस विधि से मेरी समझ बहुत विकसित हुई। मैं यह नहीं कहता कि यह तरीक़ा ही सबसे उपयुक्त/उचित है और इससें सभी विद्यार्थी सीख सकते हैं। लेकिन, अपने अनुभव के आधार पर यह अवश्य कहूँगा कि इस तरीक़े से भी विद्यार्थी सरलता से सीख सकते हैं क्योंकि व्यावहारिक रूप से भाषा, अक्षरों तथा शब्दों के क्रम से परे है। बच्चे जिस तरह से भाषा का प्रयोग करते हैं यदि उनके सीखने का वातावरण वैसा ही हो तो सीखने की गति भी बढ़ जाती है। इस विधि से कार्य करने में कुछ मुश्किलें भी आईं क्योंकि जिस तरह से केवल कुछ ही शब्दों से बनी कविताओं पर कई दिनों तक कार्य किया गया तो बच्चों के पालकों ने कहा कि प्रतिदिन केवल एक ही गृहकार्य दिया जा रहा है। इसलिए उनको विश्वास में लेना और लगातार बातचीत करना मेरे लिए अनिवार्य था। काफ़ी दिनों तक एक तरीक़े से कार्य करते हुए कभी-कभी मन में नकारात्मकता भी आ जाती थी क्योंकि ऐसा प्रतीत होता था कि शायद बच्चे सीख नहीं पा रहे हैं। और सबसे बड़ी बात यह कि हम सभी जानते हैं कि प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति अलग-अलग होती है और कोई विद्यार्थी किसी एक चीज़ को जल्दी सीख जाता है और कोई विद्यार्थी किसी अन्य चीज़ को। अतः बहुत धैर्य रखने की आवश्यकता पड़ती है।

सामान्यतया हम परम्परागत तरीकों और पद्धतियों पर इस हद तक आश्रित हो जाते हैं कि बच्चे की मनःस्थिति और उनकी विकसित होती समझ की उपेक्षा कर जाते हैं। नवीन, विकसित होतीं तार्किक और प्रासंगिक पद्धतियों के प्रति हमारी निर्वैयक्तिकता का भारी ख़मियाज़ा हमारे बच्चों को भुगतना पड़ता है। इन प्रयोगों और दृष्टिकोणों का समग्र भाषा-शिक्षण में उपयोग सर्वथा प्रासंगिक है।

मोनू कुमार शास्त्री सन् 2012 से अज़ीम प्रेमजी स्कूल मातली, उत्तरकाशी में बच्चों के साथ हिन्दी भाषा-शिक्षण में समग्र भाषा पद्धति पर कार्य कर रहे हैं। उनसे monu.kumar@azimpremjiifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

सीखना द्वन्द से आनन्द तक

नरेन्द्र कोठियाल

यह लेख विद्यार्थियों द्वारा कक्षा में उनके अनुभव व सीखने-सिखाने के तौर-तरीक़ों पर मेरा अनुभव है। साथ ही यह अनुभव भी किस प्रकार शिक्षण को अधिक रुचिपूर्ण व रचनात्मक बनाकर अध्ययन को एक आनन्दायक प्रक्रिया भी बनाया जा सकता है।

आज जब मुझे यह अवसर मिला कि मैं शिक्षक के रूप में अपने कुछ ऐसे अनुभव साझा करूँ, जिनसे मुझे सीखने को बहुत कुछ मिला व बतौर शिक्षक ख़ुद मुझमें कुछ बेहतर बदलाव आए। इससे पहले कि अपने अनुभवों को साझा करूँ मैं अपने अतीत के पन्नों से सीखने के अपने अनुभवों को साझा करना चाहूँगा। शायद इसके बिना परिवर्तन को महसूस कर पाना मुश्किल होगा। आज से लगभग 20-25 वर्ष पहले जब हम बतौर विद्यार्थी कक्षा में बैठकर पाठ को समझने का प्रयास करते थे तो हमें विषयवस्तु को पूर्णतया समझने के लिए अतिरिक्त जानकारियों की आवश्यकता पड़ती थी जो होती तो थीं छोटी-छोटी परन्तु तथ्यों को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण होती थीं। कुछ अनसुलझी-सी पहेलियाँ हमारे मस्तिष्क में ही रह जाती थीं जिनको हम रटकर पार कर लिया करते थे।

कक्षा में प्रश्न पूछकर अपनी शंकाओं के निवारण में जो दो प्रमुख रुकावटें थीं, वह थीं - भय और शर्म। भय इस बात का कि अगर प्रश्न पूछा तो न जाने कितने प्रश्न हमसे ही पूछ लिए जाएँगे। और शर्म इस बात की कि कहीं हम कक्षा में उपहास का पात्र न बन जाएँ। कक्षा में नियमानुसार 35 से लेकर 90 तक सब विद्यार्थी पास होते थे परन्तु अगली कक्षा में जाने के लिए जिस पूर्व ज्ञान की आवश्यकता होती थी उससे अधिकतर बच्चे वंचित रह जाते थे। शर्म और भय के चलते रटना ही उनकी नियति बन जाती थी, जो साल-दर-साल समस्याओं को पर्वत का आकार देती जाती थी। इसको पार कर पाना जटिल से असम्भव होता जाता था। इसी के चलते विषयों में अरुचि भी पैदा होती जाती थी व एक द्वन्द सीखने की प्रक्रिया में सदैव रहता था। सबसे बड़ी समस्या यह भी मालूम पड़ती थी कि समय की गाड़ी में उल्टा गियर नहीं होता अर्थात हम अपनी आयु के जिस पड़ाव को पार कर जाते हैं उस पर दुबारा लौटकर ग़लतियों को सुधार नहीं सकते। तो हम समय की उस दहलीज़ पर होते हैं कि जहाँ से न तो हम पीछे जा सकते हैं और न ही प्राप्त योग्यता के आधार पर आगे बढ़ सकते हैं और फिर हम जीवन और ख़्वाहिशों से समझौते करते रहते हैं।

बतौर शिक्षक मैंने जब कार्य करना शुरू किया तो मैंने उन सभी बातों का ध्यान रखना शुरू किया जिनसे मैं गुजरा था या फिर कहें कि उलझा था। कक्षा में विषय को चर्चा के माध्यम से विद्यार्थियों के अनुभवों को जानकर छोटी-छोटी उलझनों को समझने का प्रयास किया। कुछ हद तक कक्षा में विज्ञान के सिद्धान्तों की विद्यार्थियों के बीच समझ बना पाने में सफलता भी मिली परन्तु अभी भी विद्यार्थी पूर्णतया समझ नहीं बना पा रहे थे। फिर यह तय किया गया कि क्यूँ न वैज्ञानिकों द्वारा दिए गए व किए गए सिद्धान्तों को विद्यार्थियों के अनुभवों से जोड़ा जाए व विद्यार्थी स्वयं प्रयोग करके देखें कि क्या वास्तव में ऐसा होता है भी कि नहीं। क्यूँ न सीखने की इस प्रक्रिया को विद्यार्थियों की स्वयं की यात्रा बना दिया जाए? यह प्रयोग कक्षा आठ में विज्ञान की कक्षा में किया गया। कक्षा में प्रयोग से सम्बन्धित सभी सामग्री इकट्ठी की गई। विद्यार्थी बड़े उत्साह के साथ प्रयोग को देखना व करना चाहते थे। विषय था – उत्प्लावन बल।

एक बीकर में पानी भरकर रखा गया। एक पत्थर को पन्नी में फँसाकर धागे से बाँधा गया और कमानीदार तुला से जोड़ा गया। प्रत्येक विद्यार्थी को पत्थर का भार वायु व पानी में लेना था व यह भी देखना था कि क्या पत्थर के भार में कुछ अन्तर आता भी है कि नहीं। लगभग सभी विद्यार्थियों ने यह पाया कि पत्थर का भार पानी में वायु की अपेक्षा कम था। परन्तु विद्यार्थियों की अपनी रीडिंग में 1 से 2 ग्राम का अन्तर था जिसके लिए वे आपस में चर्चा भी कर रहे थे। आश्वस्त होने के लिए पुनः रीडिंग भी ले रहे थे। फिर प्रश्न यह हुआ कि पानी में पत्थर का भार क्यों कम हुआ? सभी विद्यार्थी विमर्श करने लगे कि पानी में भार क्यों कम हुआ होगा। एक बात पर सभी आश्वस्त थे कि भार पानी में कम तो हुआ। इसके लिए वे मिली-जुली प्रतिक्रिया देने लगे। परन्तु अभी भी कोई ऐसी प्रतिक्रिया नहीं थी जिसके लिए सब सर्वसम्मत हों। फिर विद्यार्थियों को संकेत देने के लिए एक और प्रयोग किया गया। एक विद्यार्थी से कहा गया कि वह कॉपी-किताबों से भरा बस्ता उठाए। बस्ता उठाने के बाद उससे पूछा गया कि क्या आप बस्ते का भार महसूस कर पा रहे हैं? विद्यार्थी ने कहा कि हाँ महसूस कर पा रहा हूँ। अब दूसरे विद्यार्थी से कहा गया कि वह बस्ते पर नीचे से ऊपर की ओर थोड़ा बल लगाए। अब पुनः पहले विद्यार्थी से पूछा गया कि क्या आप पहले जितना ही भार

महसूस कर रहे हैं? विद्यार्थी ने कहा कि अब पहले जितना भार महसूस नहीं कर रहा हूँ। भार पहले से हल्का लग रहा है। फिर विद्यार्थियों से पूछा गया कि पहले विद्यार्थी को भार कम क्यों लग रहा है? विद्यार्थियों ने कहा कि पहले विद्यार्थी को बस्ता हल्का इसलिए लग रहा है क्योंकि दूसरे विद्यार्थी ने नीचे से ऊपर की ओर बल लगा रखा है।

अब फिर से यह प्रश्न किया गया कि जब पत्थर का भार वायु में अधिक था तो पानी में कम क्यों हुआ होगा? क्या आप इस गतिविधि को इस अनुभव से जोड़ पा रहे हैं? कुछ विद्यार्थी उत्साह के साथ फिर खड़े हुए और एक विद्यार्थी ने कहा कि अवश्य ही पानी ऊपर की ओर बल लगा रहा होगा। सभी को फिर समूहों में बाँटकर विचार करने को कहा कि पानी ऊपर की ओर बल लगाता भी होगा कि नहीं। सभी विद्यार्थी गहनता से विचार करने लगे। सभी के चेहरों पर संजीदगी व उत्साह तथा तथ्यों को गहनता से समझ पाने की खुशी व उत्साह था। कुछ देर बाद सभी इस बात से तो सहमत थे कि पानी ऊपर की ओर बल लगाता है।

फिर सबको समूहों में बाँटकर पाठ को पढ़ने के लिए कहा गया ताकि उनके वास्तविक अनुभव व पाठ में लिखे गए सिद्धान्तों के बीच सामंजस्य व एकरूपता स्थापित हो सके। पढ़ते हुए पुस्तक की एक-एक लाइन अब विद्यार्थियों को अर्थपूर्ण लग रही थी। अन्त में जब उन्होंने यह पढ़ा कि पानी के द्वारा लगाए जाने बल को उत्प्लावन बल कहते हैं, किसी के भी चेहरे में कोई असामान्य प्रतिक्रिया नहीं थी या न समझ आने वाली कोई उलझन थी। बस एक नया शब्द था - उत्प्लावन बल, जिसे वे भली-भाँति समझते थे। अब विद्यार्थियों से कहा गया कि वे घर से इस गतिविधि को लिखकर लाएँ। अब उन्हें यह कार्य बोझिल नहीं लगा, बल्कि सबको ऐसा लग रहा था जैसे मुझे अपने अनुभव लिखने हैं या अपनी खोज का वर्णन करना है।

मैं इस प्रयोग से उत्साहित था। मैंने यह पाया कि जब आप विद्यार्थियों को विषयवस्तु से जोड़ देते हैं तो वे अपने-आप को पूरी तरह से प्रक्रिया में शामिल कर लेते हैं और चुनौतियों को स्वीकार करते हैं। विषयवस्तु को समझने के लिए हर तरह से विचार-विमर्श व चिन्तन भी करते हैं जो कि इसके अलावा यदि पाठ का वर्णन कर दिया जाता तो इस तरह से पाठ से जुड़ पाना असम्भव था। वे सारी बातें जो समझने के लिए ज़रूरी हैं, उनको ग्रहण कर पाना व इस प्रक्रिया का मौखिक व लिखित वर्णन कर पाना शायद मुश्किल होता। उससे भी अधिक यह महत्त्वपूर्ण था कि विद्यार्थी उत्साहित व आत्मविश्वास से परिपूर्ण थे और अधिक जानने के लिए उत्सुक थे।

ये बात भी उल्लेखनीय है कि विद्यार्थी अब किसी और अनुभव से गुजरने के लिए लालायित थे। शायद कहीं-न-कहीं सीखने की यह प्रक्रिया द्वन्द से आनन्द की ओर बढ़ रही थी।

नरेन्द्र कोठियाल अप्रैल 2013 से अज़ीम प्रेमजी स्कूल मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड में कार्यरत हैं। अज़ीम प्रेमजी स्कूल में आने से पहले वे देहरादून में विभिन्न विद्यालयों में शिक्षण क्षेत्र से जुड़े रहे हैं। उन्हें कहानी की पुस्तकें पढ़ने का शौक है। उनसे narender.kothiyal @ azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

मैंने बच्चों से क्या सीखा?

नेहा मिश्रा

बतौर शिक्षिका बच्चों के साथ काम करने का यह मेरा पहला अनुभव है। यूकेजी में साढ़े चार से करीब पाँच वर्ष तक के 10 बच्चे हैं। मुझे पूरे दिन बच्चों के साथ रहने का मौक़ा मिलता है। इस वजह से उनके साथ औपचारिक-अनौपचारिक बातचीत में, दिन भर में हो रही कई तरह की क्रियाओं के दौरान बच्चों को गहराई से समझने के भरपूर अवसर मिलते हैं। बच्चों के साथ काम करते हुए करीब छह माह ही बीते हैं, लेकिन कह सकती हूँ कि हर दिन मिल रहे नए-नए अनुभवों से बच्चों के प्रति समझ और भी विकसित होती जा रही है। बच्चों से लगातार बातचीत व उनके साथ काम करने के दौरान कई बार ऐसा समझ आया कि हम वयस्कों में ख़ासकर छोटे बच्चों को लेकर कई भ्रम होते हैं, जो यहाँ कक्षा में लगातार टूटते दिखते हैं। इस लेख में यही बताने का प्रयास कर रही हूँ कि मैंने बच्चों से क्या सीखा, ख़ासकर बच्चों के प्रति अपनी समझ को और भी विकसित करने में और कई भ्रमों को तोड़ने में।

बच्चे स्कूल जाते वक़्त रोते ही हैं। हम बड़ों के लिए यह एक स्वाभाविक-सी बात है। जिस घर से बच्चे का गहरा जुड़ाव है अचानक से उससे कहीं अलग, मानो बच्चे के लिए दूसरा ग्रह हो, वहाँ जबरन भेज दिया जाता है। कक्षा में उस बच्चे के लिए ऐसी चीज़ें बहुत कम ही होती हैं, जिससे वह जुड़ाव महसूस कर सके। फिर वह रोता है या रोती है। स्कूल में उसे डरा-धमकाकर बैठाया जाता है। ऐसे में सीखना क्या एक आनन्ददायक प्रक्रिया हो सकती है? यह एक सवाल है। बच्चों के साथ काम करके मैंने जाना कि बच्चे तो स्वाभाविक रूप से सीखने के प्रति इच्छुक होते हैं। आप उन्हें अच्छा माहौल दीजिए, वे स्कूल कभी नहीं छोड़ना चाहेंगे। कक्षा शुरू करने से पूर्व मेरी भी यही धारणा थी कि छोटे बच्चे अक्सर स्कूल आते वक़्त रोते हैं। लेकिन अगर स्कूल का वातावरण ऐसा हो, जहाँ छोटे बच्चे अपने घर और स्कूल में एक तरह का जुड़ाव पाते हैं तो वे हर रोज़ ख़ुशी-ख़ुशी स्कूल आना चाहते हैं। मुझे अपनी कक्षा का पहला दिन याद है। एक बच्चा बहुत बुरी तरह रोते हुए स्कूल आया। बड़ी मुश्किल से उसके पापा उसे क्लास तक पहुँचा पाए। लेकिन उसी दिन छुट्टी के वक़्त वह वापस जाने को तैयार नहीं था। मुझे उस दिन इसका कारण समझ नहीं आया। हालाँकि यह बात तय थी कि कक्षा का आकर्षक वातावरण, खिलौने बच्चों को आकर्षित करते ही हैं लेकिन इससे महत्त्वपूर्ण एक और बात थी। मैंने इस बच्चे में महसूस किया कि खेलते वक़्त, खाना खाते वक़्त जैसी जगहों पर तो यह बच्चा खूब बातें करता था, लेकिन जब हम सर्किल टाइम में कुछ गाते थे या कोई बात पूछी जाती तो डर उसके चेहरे पर साफ़ दिखता था। मैंने इसके लिए उस बच्चे की माँ से बात की तो पता चला कि वे उसे स्कूल से पहले तैयारी के लिए ट्यूशन भेज रही थीं, जहाँ उसे खूब मार पड़ती थी। उन्होंने बताया कि वह जाने से पहले हाथ जोड़कर बोलता था कि मुझे वहाँ मत भेजो। ट्यूशन वाली मैम कहती थीं कि उन्होंने ऐसे ही मार-मारकर कई बच्चे सुधारे हैं। सभी बच्चे ऐसे ही सीखते हैं। यह भी सुधर जाएगा। मैं नहीं समझ पाई कि किस सुधार की बात की जा रही है क्योंकि वह बच्चा तो सीखने के लिए स्वत: ही तैयार है। बहरहाल, बातचीत के बाद उसकी मम्मी ने उसका ट्यूशन छुड़वा दिया। उन्होंने बताया कि पहले वह ट्यूशन न जाने के लिए रोता था लेकिन अब तो खुद ही तैयार होकर स्कूल आता है। साढ़े चार साल के छोटे-से बच्चे को सुबह किसी को तैयार नहीं करना पड़ता। अगर कहीं छुट्टी जाना हो तो वह घर में जिद करता है कि पहले स्कूल में बताओ तब नानी के घर जाऊँगा, ऐसा उस बच्चे की माँ ने बताया। आकर्षक कक्षा से ज़्यादा भयमुक्त वातावरण, कक्षा में बच्चे का सम्मान व उसकी पहचान, स्कूल के प्रति उसकी रुचि का कारण बने।

इसी बच्चे से जुड़ा एक और वाकया है। वह कई दिन से अपना नाम लिखने की कोशिश कर रहा था। स्कूल में बच्चों के प्रवेश से पहले उनकी अलमारियों में उनके नाम लिखे गए थे। हाथ से बनाए गए फोटो समेत फोल्डर्स थे, स्लेट थी और एक कार्ड था, जिस पर उनका नाम था और फोटो थी। पहले दिन जब एक-दूसरे से परिचय हुआ तो यह सब हर बच्चे को दिया गया। नाम लिखना सिखाने के लिए कोई अलग से क्रिया नहीं कराई गई, लेकिन कुछ ही दिनों में बच्चे हर जगह केवल अपना नाम लिखते पाए गए। कोई भी काम शुरू करने से पहले सबसे पहले अपना नाम लिखते थे। शायद वे ऐसा इसलिए कर रहे हों, कि उन्हें पता तो था कि ये उनका नाम है पर वे इसे लिखना भी चाहते हैं। ये बच्चा कई दिनों तक देख-देखकर अपना नाम लिख रहा था एक दिन उसने अपना नाम बिना देखे लिखा और ज़ोर से चिल्लाया, "आज तो मज़ा आ गया, आज मैंने सीख लिया।" इस पर उसके लिए तालियाँ बजवाई गईं। कक्षा

में बच्चे की एक पहचान कि वह कक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण है, यहाँ उसकी एक पहचान है, वह किसी भीड़ का हिस्सा नहीं है, स्कूल के प्रति, पढ़ाई के प्रति रुचि का बड़ा कारण होता है। यह बात केवल एक-दो बच्चों की नहीं है, लगभग सारे बच्चों का कक्षा, स्कूल के प्रति यही बर्ताव है। मैं हैरान हूँ कि बच्चे जब इतने ही स्वाभाविक तरीक़े से, बिना किसी ज़ोर-ज़बरदस्ती के सीख सकते हैं, तो हम क्यों इस हद तक उन पर दबाव बनाते हैं।

छोटे बच्चे भी इस बात पर गहनता से सोच पाते हैं कि उनके साथ क्या अच्छा हो रहा है और क्या बुरा। भले ही उनके पास अपने विचार व्यक्त करने के लिए पूर्ण विकसित भाषा न हो, लेकिन उनके साथ घट रही घटनाओं पर उनके अपने विचार होते हैं। एक दिन खाना खाते वक़्त एक बच्चा कह रहा था कि उसे स्कूल आना बहुत अच्छा लगता है। दो दिन छुट्टी उसे बिलकुल भी अच्छी नहीं लगती। कारण पूछा तो उसने कहा, "यहाँ से पहले मैं आँगनवाड़ी जाता था, वहाँ अच्छा नहीं लगता था। वहाँ केवल दो खिलौने थे और मैडम मारती थीं। वहाँ दो डण्डे थे- एक बड़ा और एक छोटा। छोटे डण्डे से बहुत चोट लगती थी।'' मैंने पूछा, "तुम्हें भी किसी ने मारा क्या? '' तो उसने बताया, "हाँ, मैडम बोलने पर मारती थीं। जो भी बच्चे बात करते थे, उन्हें मारा जाता था।'' इस बच्चे की उम्र महज पाँच साल है। उसने बताया कि अगर कोई बच्चा रोता हुआ वहाँ आता तो मैडम कहतीं डण्डा लेकर आओ, तो बच्चे चुप हो जाते और जो चुप नहीं होता उसे मार पड़ती। बुरा लगता था, जब मैडम मारती थीं। बोलने पर मारते क्यों हैं, ये समझ नहीं आता। मैंने अगला सवाल किया कि तो तुम्हें यहाँ आकर डर नहीं लगा? तो उसने कहा, "बहुत डर लग रहा था। जब क्लास में आया तो मेरी आँखों से पानी आ रहा था पर मैं रो नहीं रहा था।'' मुझे लगा कि शायद मैं कुछ गलत समझ रही हूँ इसलिए मैंने बच्चे से पूछा कि अच्छा, तो जब पहली बार स्कूल आए तो डर के मारे रोना आ रहा था। तो उसने कहा, "नहीं, आँख से पानी आ रहा था, पर मैं रो नहीं रहा था, क्योंकि मैं खुश था। क्लास बहुत सुन्दर थी, यहाँ ढेरों खिलौने थे इसलिए मुझे अच्छा लगा। और भी अच्छा तब लगा जब मैंने देखा कि यहाँ कोई डण्डा नहीं था।'' हालाँकि बच्चे ने इतनी सफ़ाई से एक ही बार में पूरी बात नहीं बताई। काफ़ी देर तक हुई बातचीत में टुकड़ों—टुकड़ों में यह पूरी बात सामने आई। यहाँ यह ज़रूरी नहीं कि उसने अपनी बात समझाने के लिए किस टूटी—फूटी भाषा का इस्तेमाल किया होगा, ज़रूरी यह है कि उसने कितनी गहराई से इसे महसूस किया होगा। एक बच्ची, जो पहले किसी स्कूल से होकर आई थी, वह बोली, "ए, बी, सी, डी वाली मैम मारती थीं। वन, टू वाली मैम मारती थीं और छोटा अ से अनार वाली मैम मारती थीं। सुन्दर नहीं लिखने पर मार पड़ती थी।''

ऐसे ही तमाम अनुभव बच्चों ने साझा किए, जिनमें वे बड़ों के किए पर सवाल उठा रहे थे। इस विषय पर अन्य कई तरह की चर्चाएँ भी हो सकती हैं लेकिन मैं इस ओर ध्यान आकर्षित करना चाहती हूँ कि काफ़ी छोटे बच्चे भी अपने आसपास घट रही घटनाओं पर काफ़ी गहराई से सोचते हैं, उन पर प्रतिक्रिया दे पाते हैं। बच्चों के पास भले वह उपयुक्त भाषा न हो, जिससे वह अपनी पूरी बात समझा पाएँ लेकिन वह हर बात को महसूस कर रहे होते हैं। और अगर मौक़ा मिले तो उस विचार को औरों के सामने रख भी पाते हैं जिन्हें हम बड़ों को ध्यान से सुनने की आवश्यकता है। जब मैंने कक्षा की शुरुआत की तो, कक्षा में रखा हर सामान बच्चों के ही सुपुर्द था। चूँकि यह छोटे बच्चों की कक्षा है तो यहाँ ढेर सारे खिलौने और कई लर्निंग मटीरियल हैं, जो बच्चों को बहुत आकर्षित करते हैं। कक्षा में एक छोटी-सी लाइब्रेरी भी है, जहाँ छोटी-छोटी किताबें भी हैं। मैंने पहले ही दिन बच्चों को बताया कि यह क्लास उनकी है, यहाँ रखा हर सामान उनका है, मुझे पूरा विश्वास है कि वे इसकी देखभाल करेंगे।

एक बार की बात है कि डायट से कुछ लोग क्लास विजिट करने आए थे। उनमें से एक व्यक्ति ने बच्चे से पूछा कि तुम ये खिलौने तोड़ते नहीं हो? तो उस बच्चे ने झट से उत्तर दिया, "ये हमारे खिलौने हैं, हम इन्हें क्यों तोड़ेंगे।'' तब मेरा ध्यान उस बात पर गया जो मैंने पहले दिन बच्चों से कही थी। मुझे याद है कि कक्षा में सामान को लेकर बच्चों से कई बार बातचीत करने की भी ज़रूरत नहीं पड़ी, बल्कि वे तो आपस में ही बातचीत करते दिखे कि देखो, ये किताब फट गई है, इसे चिपका दो। अब तक कक्षा में किसी भी सामान का नुक़सान बच्चों ने जान-बूझकर नहीं किया। यह बात यहाँ बताना इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि एक सामान्य-सी मान्यता है कि बच्चे, ख़ासकर उम्र में छोटे बच्चे चीज़ों का नुकसान करते हैं। लेकिन बच्चों के साथ बातचीत, उनके साथ काम करने के दौरान बच्चों के प्रति मेरी समझ विकसित हुई कि अगर बच्चों पर विश्वास जताया जाए, उनके साथ वयस्कों की तरह ही पेश आया जाए तो वे कभी भी आपको निराश नहीं करेंगे। बच्चे ज़िम्मेदार होते हैं, बशर्ते उनके साथ समानता व सम्मान के साथ पेश आया जाए। एक और ख़ास बात जो मैंने अनुभव की है कि बच्चे यह पसन्द नहीं करते कि उनसे एक छोटा बच्चा समझकर पेश आया जाए। जैसे, अक्सर देखा होगा कि बच्चों से बात करते हुए बड़ों की भाषा बचकानी-सी हो जाती है या हम उनसे कुछ गुस्से से या निर्देश के रूप में ही बातचीत कर रहे होते हैं। एक सामान्य-सी बोली में, जिसमें बचपना न झलकता हो और सम्मान के साथ हुए वार्तालाप में, जहाँ उनकी राय को भी ध्यानपूर्वक सुना जाए तो बच्चे आपकी बात को भी बहुत ध्यान से सुनते हैं और उस पर अमल भी करते हैं। अगर बच्चों को कुछ समझाते समय उसका तर्क बताया जाए, तो

वे बात बहुत अच्छी तरह समझते हैं। बच्चों से बड़ों की तरह बर्ताव, उन पर विश्वास जताना, तर्क के साथ बात करना और प्रोत्साहन बच्चे के विकास में मददगार है। बच्चों से कोई भी बात झूठ न बोलें। बच्चों को समझ आ जाता है कि यह सच नहीं है या उन्हें गम्भीरता से नहीं लिया जा रहा है।

छोटे बच्चों के साथ काम करते हुए मुझे ऐसा भी महसूस हुआ कि यह ज़रूरी नहीं है कि कोई ग़लती करने पर हर बार बच्चे को उसका एहसास कराया जाए, या फिर डाँटा जाए। कभी-कभी चुप होकर उन्हें खुद की ग़लती पर सोचने का भी स्थान दे देना चाहिए। एक दिन खेल के दौरान दो बच्चियों से एक अन्य बच्ची को चोट लग गई। और उसने ज़ोर से रोना शुरू कर दिया। उन दोनों बच्चियों को लगा कि अब तो डाँट ज़रूर पड़ेगी। डर उनके चेहरे पर साफ़ दिख रहा था। मैंने उन तीनों को एक साथ बैठा दिया, पर मैंने लड़ाई पर कोई बात नहीं की। वह दोनों बच्चियाँ चुपचाप बैठी रहीं। बाद में मैंने देखा कि वे दोनों उस बच्ची, जो रो रही थी, से कुछ बातें कर रही थीं। उनमें क्या बात हो रही थी, यह तो मैंने नहीं सुना लेकिन उनके बातचीत के हाव-भाव से यह बात तय है कि लड़ाई पर बहस तो नहीं हो रही थी। फिर वे तीनों दिन भर साथ रहीं। बच्चों में ऐसे वाकये लगभग होते रहते हैं और ऐसे ही अलग-अलग तरीक़ों से समस्याओं का हल निकाला जाता है। कई बार थिंकिंग मैट पर बैठाया जाता है जहाँ बच्चा सोचकर बताता है कि उसने क्या गलती की है या उसकी कोई गलती नहीं है। कई बार दोनों पक्ष थिंकिंग मैट पर बैठते हैं और सबके सामने अपना पक्ष रखते हैं। इससे एक फ़ायदा यह भी होता है कि अगली बार के लिए सब बच्चे पहले ही सजग हो जाते हैं और एक-दूसरे का ख़्याल रखते हैं। जान-बूझकर कभी मारपीट नहीं होती। छोटे बच्चे अक्सर गिरते रहते हैं। सन्तुलन कम होता है। लेकिन मैंने ध्यान दिया कि अब बच्चे किसी को चोट लगने पर तुरन्त सॉरी बोल देते हैं। फिर भी दिन-भर एक-दूसरे के लिए शिकायतों का अम्बार भी लगा रहता है। पर ऐसा भी नहीं है कि किसी भी बात पर ग़ौर नहीं किया जाना चाहिए। बच्चे को भी इस बात का पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि अगर उसके साथ कुछ ग़लत हुआ है तो वहाँ मौजूद बड़े लोग उसकी बात को सुनेंगे लेकिन हर छोटी-छोटी बातों पर प्रतिक्रिया की आवश्यकता नहीं लगती। उन पर विश्वास जताया जाए तो वो अपनी समस्याओं के हल निकाल सकते हैं।

एक-दूसरे का पक्ष समझने से एक और फ़ायदा यह भी हुआ कि बच्चे एक-दूसरे के भावों को भी समझने लगे हैं। एक दिन कुछ खेल हो रहा था, जिसमें बच्चों को दौड़कर आना था और मुँह से टॉफी उठाकर वापस लौटना था। इस दौरान एक बच्चा ऐसा नहीं कर पाया और उसकी टॉफी कोई दूसरा बच्चा ले गया। वह बच्चा वहीं खड़े होकर रोने लगा। तभी दो बच्चे दौड़ते हुए आए और अपनी टॉफी उसे दे दी और उस बच्चे का नाम लेकर 'तुम जीत गए, तुम जीत गए' चिल्लाने लगे। छोटे बच्चों में एक-दूसरे के भावों को समझने की भी एक गहरी समझ होती है।

बच्चे अपने आप में एक बीज की तरह सम्पूर्ण सम्भावनाएँ लिए हैं। ज़रूरत है तो बस उन्हें वह उर्वरक माहौल देने की जहाँ वे पूर्ण रूप से पनप सकें और इस माहौल को बनाने के लिए बेहद ज़रूरी है कि हम पहले बचपन को समझ सकें।

नेहा मिश्रा अज़ीम प्रेमजी स्कूल, उधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड में पढ़ाती हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु से प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में विशेषज्ञता के साथ एमए (शिक्षा) की उपाधि प्राप्त की है। उनकी रुचि शिक्षक-बाल सम्बन्ध, बचपन, समाज के निर्माण में बचपन की भूमिका और बच्चों के सामाजिक-भावनात्मक विकास को समझने में है। उन्होंने पत्रकारिता और जनसंचार में भी स्नात्तकोतर उपाधि प्राप्त की है। उन्हें समाचार रिपोर्टिंग, लेखन और सम्पादन में चार साल का अनुभव है। उन्होंने हिन्दी के राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र, अमर उजाला, लखनऊ और दैनिक जागरण, देहरादून के साथ काम किया है। उन्हें लिखना और गाना पसन्द है। उनसे neha.mishra@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

मैं बड़ा हूँ या छोटा, या कुछ भी नहीं?

नेमाराम चौधरी

किशोरावस्था विशेष रूप से स्वास्थ्य, विकास एवं अधिकारों के बारे में समझ बनाने तथा ज्ञान व कौशल क्षमता विकसित करने का काल होता है। साथ ही अपनी भावनाओं व सम्बन्धों को काबू में रख भावी जीवन कि के लिए तैयार होने का उपयुक्त समय भी होता है। इस दौरान किशोर-किशोरियों को सही मार्गदर्शन एवं भावनात्मक प्रोत्साहन की ज़रूरत होती है। एक ओर तो मनोवैज्ञानिकों का यह मानना है कि बच्चों को इस समय किशोरावस्था के बारे में जागरूक किया जाए, वहीं दूसरी ओर समाज का बड़ा तबका इसे वर्जित मानते हुए शारीरिक परिवर्तनों व भावनात्मक पक्षों पर खुलकर बात न कर, मौन रहना पसन्द करता है। इस चुनौतीपूर्ण पक्ष पर विद्यालय में शिक्षण के दौरान कुछ कार्य, अनुभव मेरे भी रहे हैं। पिछले पाँच-छह सालों से मैं समावेशी स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापन के कार्य से जुड़ा हुआ हूँ। इस दौरान मेरा ज़्यादातर शिक्षण कार्य 11 से 15 साल की आयु वर्ग के मुख्यतः ग्रामीण पृष्ठभूमि से जुड़े हुए बच्चों के साथ रहा है। चार वर्ष पूर्व विज्ञान-शिक्षण में पाठ्यपुस्तक के अनुसार कक्षा सात में नर जनन तंत्र एवं मादा जनन तंत्र पर पाठ योजना बनाते वक़्त यह उलझन रही कि जिन बच्चों को मानव शरीर की सामान्य समझ नहीं है, तो क्या उन्हें यह सिखाना ठीक होगा? दूसरा यह कि मेरे इस तरह के वार्तालाप में बच्चे अपने-आप को को कितना सहज महसूस करेंगे? दो-तीन दिन की कशमकश के बाद मुझे पुस्तकालय से एक किताब 'बिटिया करे सवाल' मिली जिसके आरम्भिक अध्यायों में कुछ इस तरह की जानकारी थी जिसे वे स्वतंत्र रूप से पढ़ सकते थे। अच्छी बात यह रही कि इस पठन सामग्री ने उनके जेहन में कुछ सवाल पैदा किए तथा साथ ही एक स्तर की जानकारी वे इससे प्राप्त कर पाए। इन सवालों के माध्यम से हम कक्षा-कक्ष में संवाद शुरू कर पाए तथा मानव शरीर की संरचना और कार्यों तथा शारीरिक बनावट एवं जनन पर बच्चे समझ बना पाए। इस शिक्षण अनुभव, संस्थागत प्रशिक्षण तथा विद्यालय की आवश्यकता ने कक्षा-कक्ष से हटकर किशोरावस्था पर नियमित रूप से बच्चों के बीच संवाद कायम करने के लिए मुझे प्रेरित किया। इसके लिए हमारी विद्यालय टीम ने एक पुरुष व एक महिला शिक्षक को इस कार्य की ज़िम्मेदारी प्रदान की तथा विद्यालय में एक किशोर-किशोरी मंच बनाने में सहयोग किया जो मुख्यतः उच्च-प्राथमिक कक्षाओं के छात्र-छात्राओं की जिज्ञासाओं तथा उनकी सामान्य समस्याओं व उलझनों पर ज़रूरत के मुताबिक कार्य कर पाए।

इस मंच पर बच्चे अपने सवाल खुलकर रखते हैं। अमूमन उनके इन सवालों का सीधा जबाव न देते हुए कहानी, वीडियो, पोस्टर तथा आपसी संवाद द्वारा उत्तर देने की कोशिश की जाती है। अब तक इस दिशा में कार्य करते हुए बच्चों एवं शिक्षकों के लिए किशोरावस्था से सम्बन्धित 30 से ज़्यादा पुस्तकें विद्यालय, पुस्तकालय में आ चुकी हैं। इन पुस्तकों का परिचय मंच पर बच्चों से करवाया जाता है तथा तत्पश्चात उन्हें पढ़ने के लिए दे दी जाती हैं। इस प्रकार की कोशिश इस आयु वर्ग में होने वाले शारीरिक, मानसिक एवं व्यवहारगत परिवर्तनों को समझने में मदद करती है। साथ ही उनकी उलझनों व समस्याओं पर का समाधान करने में दिशा प्रदान करती है। इस कार्य के लिए मासिक दो घण्टे बच्चों के साथ कार्य किया जाता है। पिछले चार सालों में अब तक 40 बैठकें बच्चों के साथ हो चुकी हैं एवं विद्यालय में अन्य शिक्षकों के साथ भी नियमित संवाद होता रहा है। इन बैठकों में मानव-शरीर संरचना, स्वास्थ्य एवं सन्तुलित भोजन, बच्चों का व्यवहार, सामाजिक मुद्दे जैसे भेदभाव, छुआछूत, चोरी एवं बालिका-अपहरण, खेल के मैदान में लड़के व लड़कियों का साथ नहीं खेलना, ग्रुपिंग (लड़के/लड़कियाँ, लड़कियाँ/लड़कियाँ, लड़के/लड़के), गाली-गलौज, सुरक्षा, तनाव व कुण्ठा, प्राथमिक उपचार, साफ़-सफ़ाई, माहवारी व अन्धविश्वास तथा सामाजिक मान्यताएँ आदि पर चर्चा की जाती रही है। इस पूरी कार्य योजना में बच्चे अब तक लगभग 100 सवालों पर संवाद कर पाए हैं। इस मंच के द्वारा विद्यालय में बालिकाओं के लिए कॉमन रूम तैयार हो पाया तथा ज़रूरत की चीज़ें जैसे पैड्स, कपड़े एवं डस्टबीन की समुचित व्यवस्था बन पाई। बालकों का भी समान रूप से ख़्याल रखने की कोशिश की जा रही है। कार्य के दौरान यह लगा कि विद्यालय की सभी प्रकार की समस्याएँ किशोरावस्था से जुड़ी हुई नहीं हो सकती हैं तथा यह मंच ही उनके समाधान का एकमात्र विकल्प है ऐसा नहीं होना चाहिए। इसके लिए हम सभा-स्थल में बच्चों के साथ मिलकर हर सप्ताह गुरूवार को बातचीत के द्वारा ऐसे मुद्दों पर निर्णय लेते हैं जैसे, पानी व भोजन को व्यर्थ बरबाद न करना,

विद्यालय की साफ़-सफ़ाई रखना, विद्यालय में लड़ाई-झगड़ा न करना या फिर कोई भी ऐसी सामान्य बातें जो विद्यालय के लिए आवश्यक हों।

बच्चों के सैकड़ों सवालों में से कुछेक की बानगी -

1. मैं किसी को नीचा दिखाने की कोशिश क्यों करता हूँ?
2. किसी लड़की के प्रति हमारे मन में अपनी माँ, बहन की इमेज क्यों नहीं बनती?
3. स्कूल में हम सब एक साथ होते हैं, गाँव में भेदभाव क्यों होता है?
4. घर का काम लड़की करती है, लड़के क्यों नहीं?
5. लड़की को ही माहवारी क्यों होती है? माहवारी का बच्चे बनने से क्या सम्बन्ध है?
6. किन्नर औरत है या पुरुष?
7. नशे की आदत क्यों बन जाती है? बार-बार तम्बाकू या बीड़ी का सेवन क्यों करते हैं?
8. लड़के व लड़कियाँ पास-पास क्यों नहीं बैठना चाहते हैं? जबकि छोटे होते हैं तब ऐसा नहीं होता है।
9. मुझे पढ़ना नहीं आता तो मेरा मज़ाक क्यों बनाया जाता है?
10. कोर्ट-मैरिज क्यों करते हैं? कई लोग दो-दो शादी क्यों करते हैं?

मुझे लगता है कि इस तरह की बातचीत का माहौल तथा किशोरावस्था के अनछुए पहलुओं पर संवाद बच्चों में स्वनिर्णय लेने, नेतृत्व क्षमता विकसित करने, शरीर के प्रति सजगता एवं लोकतांत्रिक मूल्यों पर समझ बनाने एवं भावी जीवन हेतु तैयार करने में सहायक है। इस दौरान बच्चों के साथ कई तरह के कार्य, अनुभव रहे हैं। मैं यहाँ कुछ का विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूँगा।

केस – 1 : एक बालिका की अनियमित माहवारी होने के कारण उसे घर-पड़ोस के कहने पर लम्बे समय तक टोने-टोटके एवं बाबाओं के चंगुल में रहना पड़ा। बालिका ने मंच पर यह बात रखने का फैसला किया तो उसे समुचित सहयोग प्रदान कर माँ के साथ बात की गई एवं चिकित्सकीय परामर्श हेतु प्रोत्साहित किया गया तथा परिणाम लाभदायक रहे। उल्लेखनीय है कि इसी बालिका ने अपने बाल-विवाह का पुरजोर विरोध कर समाज को नई सोच के साथ चलने के लिए बाध्य किया। सवाल यह है कि कितनी बालिकाओं को ऐसा मंच समाज दे रहा है जहाँ वे अपने मन की बात रख पाएँ एवं उन्हें कोई समझ भी पाए?

केस – 2 : शारीरिक बदलाव के दौर में एक बच्चा इसलिए काफ़ी तनाव में था क्योंकि वह यह समझ रहा था कि मेरी छाती (स्तन) में गाँठ हो गई है एवं दर्द भी रहता है तथा यह कोई बीमारी है। बच्चा यह जानकारी रखता था कि कैंसर में कुछ-कुछ ऐसा हो जाता है। अतः उसे यह समझाया गया कि वह हो सके तो अपनी उम्र के बच्चों से पूछताछ कर सकता है कि क्या उन्हें भी ऐसा हुआ है? तथा समस्या है तो क्यों नहीं इसके लिए डॉक्टर से सम्पर्क करें?

केस - 3 : अक्सर बच्चों के बारे में यह बात होती है कि स्वभाव से उग्र हैं, कहना नहीं मानते हैं। लेकिन ध्यान देने योग्य बात यह है कि ऐसा वे क्यों करते हैं? यह जानना ज़रूरी है और क्या सभी बच्चे ऐसा करते हैं? शायद हम इससे सहमत न हों। घर में दादा-दादी के साथ रहने वाले विद्यालय के एक बच्चे ने अपने हाथ की नसों को काटने का असफल दुस्साहस किया। व्यक्तिगत बातचीत करने पर यह समझ आया कि वह अपने प्रति घरवालों, साथियों तथा परिवेश में हो रहे लगातार रूखे व्यवहार से कुण्ठित था तथा बार-बार होने वाली सांवेगिक अस्थिरता से दुखी था। फलतः इस तरह की घटना को अन्तिम समाधान माना। चिन्ता इस बात से है कि हम पूर्वाग्रह से ग्रस्त होकर फैसले लेने में जरा भी हिचकिचाते नहीं हैं तथा बच्चों के ऐसा करने का कारण जानने में रुचि कम लेते हैं।

केस – 4 : चार बहनों में सबसे बड़ी तथा माता-पिता को सब्ज़ी का ठेला लगाने में मदद करने वाली कक्षा आठ में क्रमोनत हो चुकी बालिका विद्यालय छोड़ना चाहती थी। क्योंकि उसे पिछले दो-तीन सालों से पेट में दर्द होता था। लेकिन घरवालों ने चिकित्सकीय परामर्श लेने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। वह परेशान इस बात से हो रही थी कि विद्यालय में साथियों तथा अध्यापकों के सामने रोज़ तमाशा नहीं बनना चाहती थी (बालिका के कहे अनुसार)। कमाल की बात यह है कि इतना होते हुए भी उसने यह कभी महसूस नहीं होने दिया, चाहे वह खेल का मैदान हो या कोई अन्य विद्यालय के कार्य। मतलब साफ़ है कि ड्रॉपआउट के अनेक कारण हो सकते हैं। पर, छोटी-सी लगने वाली बात किशोर-किशोरियों को स्वनिर्णय लेने से रोक नहीं पाती है।

केस – 5 : कक्षा सात व आठ के बालकों व बालिकाओं में किसी बात को लेकर मतभेद था तथा सामूहिक संवाद काफी कम था। ऐसे में खेल के मैदान में एक साथ न खेलना तथा कक्षा-कक्ष शिक्षण में व्यवधान होना तय था। हर साल की तरह विद्यालय में खेल-सप्ताह का आयोजन होना था। बच्चों में बिखराव साफ़ नज़र आ रहा था। मुझे विद्यालय खेल समिति में होने के नाते इनका खेल टाइम-टेबल बनाना था। इसके लिए अपनी ओर से कबड्डी की बारह टीम बनाने के बजाय बच्चों को इस बात के लिए स्वतंत्र छोड़ा गया कि

आप एक दिन में अपनी-अपनी टीम बनाएँ तथा यह बताया गया कि बेहतर होगा कि आप टीम में लड़के एवं लड़कियों को बराबर-बराबर जगह दें। फलस्वरूप यह हुआ कि आशा के विपरीत बेहद शानदार एवं ऊर्जा से भरपूर खेल देखने को मिला तथा छह लड़के कैप्टन एवं छह लड़कियाँ कैप्टन बनीं। फाइनल मुक़ाबले में एक साथ बैठकर लड़के व लड़कियाँ अपनी टीम का हौसला बढ़ा रहे थे तथा लड़कियों की कप्तानी में लड़के आनन्दित महसूस कर टीम के लिए खेल रहे थे। कहने का मतलब यह है कि शिक्षक होने के नाते आपके पास कई अवसर आते हैं। उन्हें आप किस तरह बच्चों के विकास में भुनाते हैं यह पूर्णतया आप पर ही निर्भर करता है। खेल का मैदान दूरियों को मिटाता है।

मैं यह तो नहीं कह सकता कि रामबाण औषधि के रूप में सभी समस्याओं का उत्तर इस मंच पर उपलब्ध है। पर इतना ज़रूर है कि समय के मुताबिक इस शैक्षिक परिदृश्य को बदलने हेतु इस तरह के नवाचार करने की ज़िम्मेदारी विद्यालयों की बनती है। हमें इस बात से सन्तोष मिलता है कि बाल केन्द्रित, समावेशी व सुलभ शिक्षा की ओर यह प्रयास सहायक बन रहा है। इस दिशा में यूनिसेफ के सहयोग से कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयों, केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में कार्य किया जा रहा है। यही नहीं एनसीईआरटी भी इस दिशा में किशोरावस्था को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने की पहल कर चुका है। लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षक का अहम रोल यहाँ होता है क्योंकि उसे निष्पक्ष एवं परिपक्व होकर बच्चों के सामने अपने नैतिक मूल्यों की कसौटी पर खरा उतरना पड़ता है जो समाज की मुख्यधारा में बहुत कम देखने को मिलता है। पर यह मुश्किल नहीं है, इसे किया जा सकता है। मनोवैज्ञानिकों ने किशोरावस्था को अत्यन्त कठिन, तनाव एवं तूफान की अवस्था माना है परन्तु इस तरह के प्रयासों से क्या इसे थोड़ा कम कठिन एवं सहज बनाया जा सकता है? यह इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि क्योंकि बच्चा जब छोटा होता है तो उसे माँ-बाप का सर्वाधिक सान्निध्य प्राप्त होता है लेकिन बढ़ती आयु के साथ ज़्यादातर बच्चों से यह रिश्ता थोड़ा कम होने लग जाता है या यों कहें कि उनसे दूरी बढ़ती जाती है। तो क्या अध्यापक होने के नाते संवेदनशील होकर उन्हें सम्बल प्रदान कर सकते हैं वह भी उस समय जब उन्हें जीवन में सबसे ज़्यादा पालकों की या उनकी भावनाओं को समझने वाले की ज़रूरत होती है। बच्चों के व्यवहार पर काम करने वाली संस्था मिशन जीनियस माईड के प्रमुख वक्ता के अनुसार, शब्दों का असर परमाणु बम से ज़्यादा होता है। वह यह कहते हैं कि अगर किसी बच्चे को बार-बार यह कहा जाता है कि तुम आलसी हो और तुमसे कोई काम ठीक से नहीं होता है तो बेशक वह आलसी भी हो जाएगा तथा काम भी ठीक से कर पाने में समर्थ होगा है। किशोरावस्था में विशेषतया ऐसा ज़्यादा होने की सम्भावना है। स्पष्ट है कि ऐसे कितने ही शब्दों का प्रयोग बच्चों के लिए भूलवश या गुस्से में उनके परिवेश में किया जाता है। यहाँ पर माँ-बाप को समझना होगा कि वह अनजाने में ऐसा कई बार कर देते हैं, तो क्या उन्हें यह ज्ञात भी है? क्या वह ठीक कर रहे हैं? इसी को ध्यान में रखते हुए विद्यालयों में माँ-बाप को अभिभावक-शिक्षक बैठक में यह बताया जा सकता है। यह और भी महत्त्वपूर्ण है कि बच्चों के साथ विद्यालय में हो रहे किशोरावस्था पर कार्यों के बारे में परिपक्वता के साथ उन्हें बताया जाए। हम इस विषय में बच्चों की माताओं के साथ अलग से बैठक करने की कोशिश भी करते हैं ताकि माताओं की भागीदारी को भी बच्चे के विकास में सुनिश्चित किया जा सके।

सबसे ज़रूरी बात यह है कि एक ओर तो किशोरावस्था के परिवर्तनों के दौर से बच्चा गुजर रहा होता है तथा दूसरी ओर वह इतना परिपक्व हो जाता है कि समाज में अपनी पहचान बनाना चाहता है। वह अपने विचार बड़ों के साथ रखता है तो हम कहते हैं कि अभी तो तुम छोटे हो और जब कुछ बचपना दिखाता है तो उसे यह सुनना पड़ता है कि इतने बड़े हो गए हो, कब सुधरोगे? असल बात तो यह है कि हम उन्हें उलझन में डाल देते हैं कि वे यह समझ नहीं पाते कि 'मैं बड़ा हूँ या छोटा, या कुछ भी नहीं।'

आभार : *मैं उन सभी साथियों का आभार प्रकट करना चाहूँगा जिन्होंने मुझे कार्य करने एवं इसे लिखने के दौरान सराहनीय सहयोग प्रदान किया।*

नेमाराम चौधरी पिछले छह साल से अज़ीम प्रेमजी स्कूल, टोंक, राजस्थान में विज्ञान विषय पढ़ा रहे हैं। वे किशोरावस्था पर पिछले चार साल से कार्य कर रहे हैं। इसके अलावा विद्यालय में प्राथमिक चिकित्सा मुहैया करवाने में मदद करते हैं। इस स्कूल में आने से पहले वे 4 साल तक महाविद्यालय में रसायनविज्ञान का अध्यापन कर रहे थे। उनसे nemaram.choudhary@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

एक नया अध्याय

पूर्णिमा हेगड़े

सितम्बर 2016 का महीना था। बरसात का मौसम ख़त्म होने को था, जब मैं भारत के एक गैर-लाभकारी संगठन, अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के एसोसिएट कार्यक्रम में शामिल हुई। इसमें एक वर्ष तक कक्षाओं के अवलोकन एवं शिक्षण के माध्यम से सरकारी स्कूल को समझने की प्रक्रिया अनिवार्य थी। हमें सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था में काम करना था जिसमें शिक्षकों के दृष्टिकोण के साथ-साथ विषयवस्तु के सम्बन्ध में उनकी क्षमता को विकसित करना शामिल था। सौभाग्य से मुझे अज़ीम प्रेमजी स्कूल सौंपा गया था।

शिक्षण एक कौशल है जिसे विशेष पेशेवर प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है और मेरे पास ऐसी कोई विशेषज्ञता नहीं थी। इसके अलावा, मैं प्राथमिक विद्यालय में केवल तब तक थी जब मैं खुद वहाँ पढ़ रही थी! प्रारम्भ में, सीखने के दिलचस्प माहौल और उत्कृष्ट विद्यालयीन संस्कृति ने मुझे आकर्षित किया। जैसा कि निर्देश था मैंने केवल अवलोकन किया और सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था की अकादमिक एवं प्रशासनिक प्रक्रिया को समझा।

ऐसा करने के साथ ही मुझे यह एहसास हुआ कि मैं उस जगह पहुँच गई हूँ जहाँ मुझे होना चाहिए। अँग्रेज़ी कक्षाओं के अवलोकन के प्रारम्भिक चरण में बच्चों की रुचियों, उनकी सीखने की क्षमता और एक विदेशी भाषा को पढ़ाते समय शिक्षकों के समक्ष आने वाली चुनौतियों ने मेरी आँखें खोल दीं। यह वह समय था जब मुझे शिक्षण का व्यावहारिक ज्ञान मिला। उसी दौरान, मैंने नली-कली कक्षाओं में पढ़ाना शुरू किया। और तब मैंने स्वयं को एक शिक्षक के रूप में मान्यता दी।

स्वतंत्र रूप से अँग्रेज़ी की कक्षाएँ लेते हुए मुझे अब तीन महीने हो चुके हैं। शुरुआत में, जैसा कि सभी नए शिक्षक मानते हैं, मुझे भी यह समझ में आया कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में, अनुभव काफ़ी महत्त्वपूर्ण होता है और यह 'जितना अधिक हो उतना बेहतर' है। प्रारम्भ में, कक्षा में अनुशासन बनाए रखने में ही बहुत समय लग जाता था, और शिक्षण-प्रक्रिया एवं गतिविधियों के नियोजन के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता था। मैं कक्षाओं के संचालन में असक्षम होने के कारण थोड़ा हतोत्साहित हो गई थी। चूँकि यह अँग्रेज़ी वर्ग था, मैंने केवल अँग्रेज़ी में ही बात की, जिससे विद्यार्थियों ने अपनी रुचि खो दी क्योंकि उनमें से कईयों की समझ में ही नहीं आ रहा था कि उनके चारों ओर हो क्या रहा है। दबाव में आकर मैंने स्थानीय भाषा में पढ़ाना प्रारम्भ किया, लेकिन ऐसा लगा कि यह करके मैं अँग्रेज़ी सीखने के लिए उपयुक्त वातावरण निर्मित करने के अपने उद्देश्य से सभी को दूर ले गई। किसी ने सही कहा है कि केवल रुचि रखने वाला शिक्षक ही बच्चों के लिए सीखना रुचिकर बना सकता है, इसलिए मैंने स्वयं को प्रेरित करने और सीखने के माहौल को विकसित करने का फैसला किया। पहले दो महीनों में बच्चों की प्रारम्भिक समझ यानि कि उनके अधिगम-स्तर के आकलन की प्रक्रिया ने मुझे अधिगम की सही पृष्ठभूमि बनाने में मदद की।

जब हम प्राथमिक स्कूलों में अँग्रेज़ी भाषा की बात करते हैं, तब उसका लक्ष्य बच्चों में अँग्रेज़ी भाषा बोलने और सम्प्रेषण के रूप में अँग्रेज़ी की क्षमता को विकसित करना है। प्रत्येक भाषा की तरह अँग्रेज़ी भी सम्प्रेषण का साधन है। लेकिन भाषा सीखने के चार कौशल–सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना– में मुझे ऐसा लगा कि बच्चों के लिए पढ़ना, बिना समझे हुए भी, शायद सबसे आसान है, जबकि बोलना सबसे मुश्किल है। बच्चे जो पढ़ते हैं उसे समझने में एवं जो समझते हैं उसे बोलने में असमर्थता के कई कारण हो सकते हैं। लेकिन हमारे स्कूल के बच्चों के लिए स्पष्ट कारण यह है कि उनके पास कक्षाओं के बाहर अँग्रेज़ी का वातावरण और बोलने का अभ्यास करने का मौका बहुत कम है या बिल्कुल नहीं है। इसका अर्थ है कि जो उन्होंने सीखा है उसका प्रयोग करने के लिए शायद स्कूल ही एकमात्र जगह है इसलिए जब वे यहाँ हैं तब उन्हें बहुत अभ्यास की आवश्यकता है।

इसने मेरे दिमाग में निम्नलिखित प्रश्न उठाए :

अँग्रेज़ी सीखने का वातावरण निर्मित करने और कक्षा में विद्यार्थियों की संलग्नता एवं व्यक्तिगत भागीदारी को बढ़ाने के लिए क्या किया जा सकता है?

कौन-सी विधि चुनी जाए?

जिस कक्षा में विभिन्न रुचियों और अधिगम-स्तर के बच्चे हों उस कक्षा को आपस में कैसे जोड़ा जाए और कैसे व्यक्तिगत समावेशी विकास को भी सुनिश्चित किया जाए?

प्रत्येक विद्यार्थी की रुचि के अनुसार गतिविधियों को शामिल करते हुए पाठ योजनाओं को कैसे विकसित किया जाए?

इस समय कक्षाओं और बच्चों के अवलोकन के मेरे अनुभव ने मुझे इस निष्कर्ष पर पहुँचाया कि 'भाषा को बाहर जाने से पहले अन्दर आना होगा'। बच्चों के शब्द-भण्डार को विकसित करना मुझे इसे ध्येय को प्राप्त करने में मदद कर सकता है। और मैं यह स्वीकार करती हूँ कि विदेशी भाषा को सीखने के तरीक़ों में से एक सुनना है – सुनना बच्चों के सीखने के स्रोतों में से एक है। मैं उनके अधिगम को दिलचस्प बनाने का सबसे अच्छा तरीक़ा चुनना चाहती थी और इसीलिए मैंने अपने द्वारा सीखी गई बातों का अन्वेषण एवं परीक्षण करना शुरू किया ताकि बच्चों द्वारा द्वितीय भाषा के कौशलों को अर्जित करना सुनिश्चित किया जा सके।

सुनने की क्षमता पर केन्द्रित जो गतिविधियाँ डिज़ाइन की गईं उनमें से एक थी- तुकबन्दी वाली रचनाएँ। किसी भी उम्र के बच्चे कविता और तुकबन्दी वाली रचनाएँ गाना पसन्द करते हैं। शब्द-भण्डार निर्मित करने की दिशा में मेरा पहला क़दम था इन रचनाओं को गाना और दोहराना, जिसने बच्चों को भाषा, ध्वनि, आरोह-अवरोह एवं लय को महसूस करने के लिए प्रोत्साहित किया। रचनाएँ ऐसी चुनी गईं जिन में चित्र और गति का संयोजन था जिससे शब्दों और उनके अर्थ के बीच सम्बन्ध स्थापित करने में मदद मिली। मैंने इंटरनेट के

लिटिल बर्ड कैन यू क्लैप?
नो आय काँट, काँट क्लैप।
लिटिल बर्ड कैन यू फ्लाय?
यस आय कैन, कैन फ्लाय।

माध्यम से तुकबन्दी वाली रचनाओं को ढूँढा और पाठ के अनुसार उनका चयन किया। मुझे शरीर के अंगों को पढ़ाना था इसलिए मैंने; रचना चुनी *'टू लिटिल आइज़ टु लुक अराउंड'*, जबकि *'व्हाट्स द वेदर लाइक टुडे?'* ने कपड़ों और मौसम की अवधारणा को आपस में जोड़ा। इस तरह, तुकबन्दी वाली रचनाएँ मेरी कक्षाओं में अवधारणाएँ सिखाने के लिए एक साधन बन गई हैं। इन पद्यकों रचनाओं के माध्यम से मैंने बच्चों को संज्ञा शब्द, क्रिया शब्द और वाक्य संरचनाएँ समझाने की कोशिश की है। केवल तुकबन्दी वाली रचनाओं के माध्यम से, इन वाक्यांशों- *मैं हूँ, मैं कर सकता हूँ, मुझे पसन्द है*, का प्रयोग विद्यार्थियों को बड़ी आसानी से समझाया गया।-

एक और साधन कहानियाँ रही हैं, जिनसे न केवल भाषा-शिक्षण में, बल्कि बच्चों की कल्पना को विस्तार देने और अन्य विषयों से सम्बन्धित नई अवधारणाओं से बच्चों का परिचय कराने में भी मदद मिली। बच्चों को कहानियाँ सुनाते समय शारीरिक हाव–भावों का व्यापक प्रयोग ज़्यादा प्रभावी साबित हुआ है। मुझे संगीत और रंगमंच में रुचि है, इससे कहानियों की प्रभावी प्रस्तुति में मदद मिली। जानवरों, विज्ञान और परम्परा-सम्बन्धित कहानियों की तरफ़ बच्चों का ध्यान आकर्षित हुआ। बच्चे पात्रों के बारे में प्रश्न करते और कहानी के विषय को सरल वाक्यों में पूछते थे साथ ही गर्मी की छुट्टियों में कहानी के पात्रों का प्रतिरूपण करने से काफ़ी मदद मिली, ख़ासकर शब्द-भण्डार विकसित करने में।

इन सभी गतिविधियों के लिए उचित नियोजन की आवश्यकता होती है। पाठ-नियोजन एक मेहनत वाला काम है जिसे समझने के लिए काफ़ी प्रयास और समय लगता है। मुझे यह समझ आया कि शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) की रूपरेखा बनाना बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसके साथ ही, वैकल्पिक योजनाएँ एवं शिक्षण सामग्री तथा भाषा पर प्रभुत्व, भाषा कक्षाओं के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। अँग्रेज़ी सीखने के लिए उचित वातावरण निर्मित करने के लिए मुझे कुछ अलग हट कर सोचने की ज़रूरत थी। रोल प्ले, भाषा के खेल, राय लेखन और ऐसे कई मज़ेदार असाइनमेंट ने मुझे बच्चों का ध्यान आकर्षित करने और एक विदेशी भाषा सीखने में रुचि उत्पन्न करने में सक्षम बनाया। दूसरा, पाठ के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए, विभिन्न रुचि वाले समूहों के लिए अलग-अलग वर्कशीट तैयार की गई थीं। जो बच्चे अपनी कक्षा के अधिगम-स्तर तक नहीं पहुँच पाए थे उनका ध्यान खींचने पर विशेष ज़ोर दिया गया था। समूह-चर्चा, वीडियो स्क्रीनिंग, चित्र-मिलान (अवधारणा से सम्बन्धित)और शब्द-भण्डार विकसित करने जैसी गतिविधियाँ पुनर्रचित की गईं। पूर्व की कठिनाइयों की जगह आत्मविश्वास ने ले ली, मेरे उत्साह ने रंग दिखाना प्रारम्भ कर दिया था।

कक्षा में करके देखी गई गतिविधियों की फेहरिस्त काफ़ी लम्बी है जिनमें से मैं बहुत कम उदाहरणों और गतिविधियों का उल्लेख यहाँ कर पाई हूँ। कुछ बहुत सफल रहीं, तो कुछ को थोड़ी कम सफ़लता मिली। लेकिन मुझे ख़ुशी है कि मैं ख़ुद के बारे में और जान रही हूँ तथा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की कई सम्भावनाओं को खोज रही हूँ। हालाँकि मुझे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, मैं मुस्कुराते हुए और आगे बढ़ने के उत्साह के साथ इनका सामना करूँगी क्योंकि सीखने की प्रक्रिया कभी ख़त्म नहीं होती। अल्फ्रेड टेनिसन के यह कथन मेरा आदर्श वाक्य है, *"परिश्रम करना, खोजना, ढूँढ़ना और हार न मानना।"*

पूर्णिमा हेगड़े अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में 2016 में एसोसिएट के रूप में सम्मिलित हुई हैं। वर्तमान में वे अज़ीम प्रेमजी स्कूल, यादगीर, कर्नाटक में अँग्रेज़ी के शिक्षण से जुड़ी हुई हैं। उनसे poornima.hegde@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : सुजाता

सामाजिक विज्ञान की कक्षा में समानुभूति की झलक

प्रकाश चन्द्र गौतम

माध्यमिक कक्षाओं में सामाजिक विज्ञान शिक्षण की अपनी विशिष्टता है क्योंकि विद्यार्थी मानव-समाज में हो रहे परिवर्तन को अपने आसपास के समुदाय के माध्यम से, घरों पर बारीकी से अवलोकन करके, समाचार पत्रों, मीडिया इत्यादि के माध्यम से समझ सकता है। एक शिक्षक को भी समुदाय से समान अनुभव मिलता है। लेकिन वयस्कों और बच्चों के अनुभवों के बीच एक बड़ा अन्तर है : बच्चे अपने आसपास की चीज़ों का बारीक़ी से निरीक्षण करते हैं और सामाजिक मुद्दों, तथ्यों, घटनाओं पर निरन्तर विचार-विमर्श के बाद राय का निर्माण करते हैं, जबकि इसके विपरीत वयस्कों के पास भले ही अनुभव ज़्यादा हो लेकिन उनका सोचने का तरीक़ा तयशुदा खाँचों में ढल चुका होता है इसलिए अधिकांश सामाजिक मुद्दे शायद उन्हें न चौंका पाएँ।

आइए एक ऐसी स्थिति के बारे में सोचें जब एक बच्चा, ख़ासकर 12 या 13 वर्ष में, पहली बार किसी एक सामाजिक बुराई का सामना करता है। मैं आमतौर पर सामाजिक विज्ञान के ऐसे विद्यार्थियों से स्कूल में मिलता हूँ और उनके साथ मेरा सबसे सुखद समय वह होता है, जब वे मुझसे कुछ ऐसे सवाल पूछते हैं, जैसे :

- *हमारे चारों ओर की दीवार पर कुछ नारे जैसे 'लड़की/बेटी को बचाओ' क्यों लिखा रहता है?*
- *लड़कों के लिए यह क्यों नहीं लिखा जाता है?*
- *केवल हमारी माँ ही घर के काम में हमेशा व्यस्त क्यों रहती हैं?*
- *परिवार की महिला सदस्यों पर ही सुबह से रात तक काम का बोझ क्यों लादा गया है?*
- *क्यों कुछ काम, जैसे कि बर्तन साफ़ करना और गृह-व्यवस्था, केवल महिला सदस्यों द्वारा किए जाते हैं?*

विद्यार्थियों का सामुदायिक मामलों से जुड़ाव और जिस तरह से वे अपने आसपास की दुनिया को देखते हैं वह उनके प्रश्नों, बातचीत और सोच-विचार के माध्यम से शिक्षक के सामने आता है, विशेषकर कक्षागत प्रक्रियाओं के दौरान।

यहाँ मैं अपनी पिछले साल की कक्षा के कुछ 'चित्र' साझा कर रहा हूँ। मैं अपनी कक्षा के लिए योजना बना रहा था और छठी और बारहवीं सदी के बीच सामाजिक परिवर्तन विषय पढ़ाने की सोच रहा था। हमारी आपसी बातचीत के दौरान बच्चों के प्रश्न लगातार आया करते थे और वे हमारे दोस्त जैसे थे। मैं बच्चों को एक प्रोजेक्ट देने वाला था और सातवीं कक्षा एवं 13-14 वर्ष के बच्चों को ध्यान में रखते हुए असाइनमेंट में उनके प्रश्नों को गूँथने की कोशिश कर रहा था और उसमें पूरी तरह डूबा हुआ था। मैं अपनी तैयारी के बारे में बहुत उत्साहित था। सामाजिक विज्ञान जैसे विषय के व्यापक आयाम हैं और असीमित चर्चाओं और बहस की काफ़ी गुंजाइश भी। इसमें शिक्षक ऐसा मंच निर्मित कर सकता है जहाँ किताबों से परे, बच्चे स्वयं अपनी व्याख्याएँ विकसित कर सकते हैं।

ऐसी सभी चीज़ों को ध्यान में रखते हुए, मैंने कक्षा सातवीं के विद्यार्थियों के लिए एक प्रोजेक्ट को डिज़ाइन किया। हमारे वर्ग में तीस विद्यार्थी थे और उन्हें छह उप-समूहों में विभाजित किया गया था। यह एक प्रासंगिक विषय था, जिसमें बच्चे मध्यकालीन समाज और रीति-रिवाज की जटिलताओं से परिचित थे। हमने *छठी और बारहवीं शताब्दी एवं आधुनिक युग में महिलाओं की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन* पर काम करना शुरू कर दिया। हमने पाठ्यक्रम की किताबें, अन्य मध्ययुगीन ऐतिहासिक पुस्तकें, पुस्तकालय और समाचारपत्रों को चुना। हमारे पास स्रोत व्यक्ति भी थे जैसे कि– स्कूल के अन्य शिक्षक, अज़ीम प्रेमजी जिला संस्थान के स्रोत व्यक्ति, अभिभावक आदि। अपने कार्यक्षेत्र से भी स्रोत जुटाने की योजना थी।

प्रोजेक्ट कार्य को पूरा करने में सात दिन लग गए और विद्यार्थी अपनी नियमित कक्षाओं के अलावा भी काम कर रहे थे। उन्होंने कुछ निष्कर्ष निकाले और मुझे यह देखकर ख़ुशी हुई कि उनकी राय अलग-अलग थी। कक्षा में हुई कुछ चर्चाएँ इस प्रकार हैं :

शिक्षक : क्या हम हमारी पाठ्यपुस्तकों में इस्तेमाल किए गए कुछ शब्द / शब्दावली की स्पष्टता प्राप्त करके कक्षा शुरू कर सकते हैं?

विद्यार्थी : जी हाँ!

शिक्षक : तो मुझे कुछ उदाहरण दें!

विद्यार्थी : सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल-विवाह, शिक्षा से वर्जित होना आदि।

वयस्कों के रूप में, हम 'सामग्री और विशिष्टता' पर काम करते हैं जबकि बच्चे भावनाओं पर ध्यान केन्द्रित करते। वे क्रूर घटनाओं को महसूस करते हैं और उनके बारे में पूछते हैं क्योंकि वे संयुक्त परिवारों का हिस्सा होते हैं तथा ग्रामीण समुदायों में भावनाओं को मूल्यवान माना जाता है।

शिक्षक : क्या कोई सती प्रथा के बारे में अपनी समझ का वर्णन कर सकता है?

बच्चों का एक समूह : यह एक परम्परा है जिसमें जीवित महिलाओं को जबरन अपने मृत पति की चिता पर रख दिया जाता था।

शिक्षक : क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि एक महिला को इस दौरान कितना दर्द सहना पड़ता था?

क्या यह इसके बारे में बात करने जितना आसान था?

एक समूह : नहीं, यह वास्तव में पूरे परिवार और गाँव के लिए एक कठिन समय था।

इसके अलावा, उनके बच्चों का क्या हुआ? हमने उनके बारे में कुछ नहीं पढ़ा है।

संयुक्त परिवार में होने के नाते उन्होंने उन बच्चों के बारे में पूछा जिनकी माताओं को क्रूरता से जला दिया गया था।

दूसरा समूह : मैं दर्द की कल्पना कर सकता हूँ क्योंकि एक बार मेरी उँगली मोमबत्ती की लौ में जल गई और उसे ठीक होने में हफ़्तों लग गए।

शिक्षक : ओह! आप उन महिलाओं के बारे में क्या सोचते हैं जिन्हें इस रीति–रिवाज़ के नाम पर जला दिया गया था? क्या वे इसके लिए सहमत हुई होंगी?

विद्यार्थी : शायद नहीं...

शिक्षक : आओ हम अपने निष्कर्षों पर चर्चा करें। क्या तुम अतीत और आज के बीच तुलना के लिए कुछ सुझाव पेश कर सकते हो?

एक समूह : एक समूह के रूप में हम इस निष्कर्ष पर आए हैं कि आधुनिक समय में उसके समान बुरे या उससे भी बदतर रीति-रिवाज़ हैं।

शिक्षक : कैसे?

समूह : हमारे पास बहुत सारे समाचारपत्रों की कटिंग हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि महिला-भ्रूण हत्या की गई है; जिससे इस बात को ज़ोर मिलता है कि भ्रूण में लड़कियों को ही मारा गया है।

शिक्षक : हाँ, यह किया जा रहा है। ऐसे समाचार पढ़ना दुखद है।

जब बच्चे अपने विचार व्यक्त करते हैं, सोच-विचार और चिन्तन करने के लिए रुकते हैं,बातचीत और बहस करते हैं, तो शिक्षकों को प्रसन्नता होती है कि वे अपने स्वयं के विचारों/मत के साथ दुनिया का सामना कर सकेंगे।

विद्यार्थी : यह और अन्य बुराइयाँ जैसे बाल-शोषण और यौन-उत्पीड़न अभी भी मौजूद हैं।

इसका मतलब है हम मध्य-युग से अलग नहीं हैं। महिलाएँ और लड़कियाँ अभी भी अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करते हैं।

शिक्षक : दुर्भाग्य से, यह हमारी असली दुनिया है। लेकिन हम पुराने रीति-रिवाज़ों से काफ़ी आगे बढ़ चुके हैं।

विद्यार्थी : लेकिन हम इससे असहमत हैं।

शिक्षक : ठीक है, पर क्या आप इसे विस्तारपूर्वक बता सकते हैं? मेरा मानना है कि हमने शिक्षा, गरीबी उन्मूलन, प्रौद्योगिकी आदि में अच्छी प्रगति की है।

एक शिक्षक के रूप में काफ़ी प्रसन्नता होती है जब बच्चों के अपने विचार होते हैं और वे सोचने और चिन्तन करने के लिए रुकते हैं। (कुछ पढ़ने और चर्चा करने के बाद हम सामाजिक दुनिया के रास्ते पर आगे बढ़ चले, अपने-अपने विचारों / दृष्टिकोण के साथ।)

नीचे बच्चों की नोटबुक के कुछ नोट्स हैं जो उन्होंने चर्चा के बाद तुलना के रूप में लिखे थे-

पिछले विषय से जुड़ाव की दृष्टि से पूरे प्रोजेक्ट में क्रमिक सम्बन्ध बनाती एक अन्य दिलचस्प गतिविधि थी, ओपन एंडेड सवाल। यहाँ इसका एक हिस्सा दिया गया है :

प्रश्न : आपकी राय के अनुसार महिलाओं के कुछ बुनियादी अधिकार क्या हैं?

उन्होंने संयुक्त रूप से विकसित किया और लिखा है :

1- स्वतंत्र रूप से यात्रा करने का अधिकार।

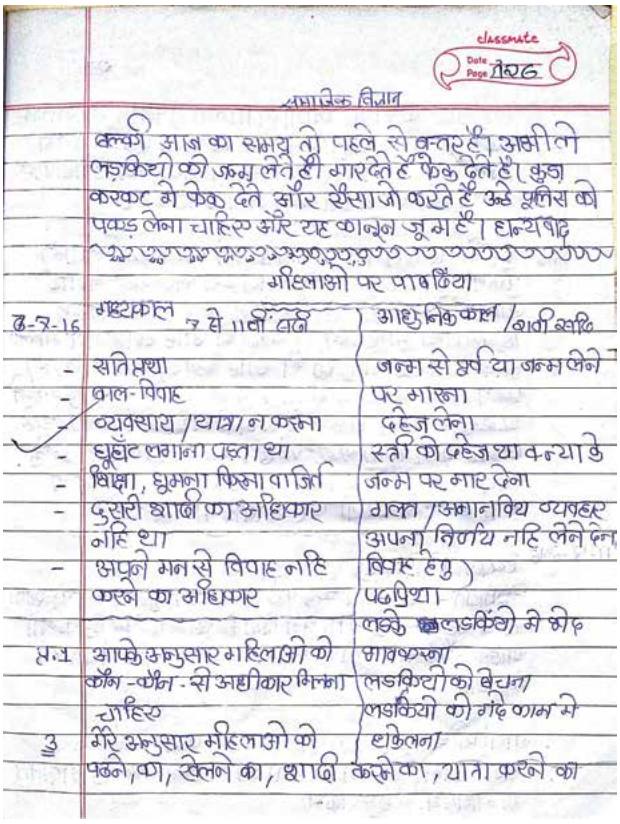

classmate
Date 12G

समाजिक विज्ञान

क्योंकि आज का समय तो पहले से बेहतर है। अभी तो लड़कियों को जन्म लेते ही मार देते हैं फेंक देते है। कूड़ा करकट मे फेंक देते और ऐसा जो करते हैं उन्हे पुलिस को पकड़ लेना चाहिए और यह कानून जुर्म है। धन्यवाद

महिलाओ पर पाबंदिया

8-7-16

मध्यकाल 7 से 11वीं सदी

- सति प्रथा
- बाल-विवाह
- व्यवसाय / यात्रा न करना
- घूंघट लगाना पड़ता था
- शिक्षा, घुमना फिरना वर्जित
- दुसरी शादी का अधिकार नहि था
- अपने मन से विवाह नहि करने का अधिकार

आधुनिक काल / 21वीं सदि

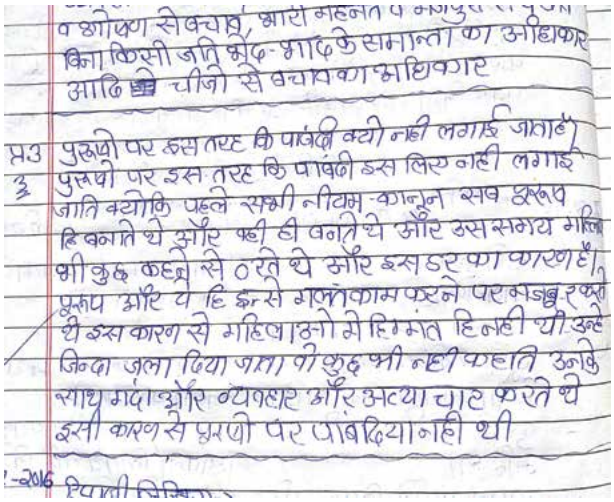

जन्म से पूर्व या जन्म लेने पर मारना
दहेज लेना
स्त्री को दहेज या कन्या के जन्म पर मार देना
गलत / अमानविय व्यवहर
अपना निर्णय नहि लेने देना (विवाह हेतु)
पर्दाप्रथा
लड़के लड़कियो मे भेद भावना
लड़कियो को बेचना
लड़कियो को गंदे काम मे धकेलना

प्र.1 आपके अनुसार महिलाओ को कौन-कौन-सी अधीकार मिलना चाहिए
उ मेरे अनुसार महिलाओ को पढने का, खेलने का, शादी करने का, यात्रा करने का

व शोषण से बचाव, भारी मेहनत व मजदूरी से ... बिना किसी जति भेद-भाव के समान्ता का अधिकार आदि चीजो से बचाव का अधिकार

प्र3 पुरूषो पर इस तरह कि पाबंदी क्यो नही लगाई जाती है।
उ पुरूषो पर इस तरह कि पाबंदी इस लिए नही लगाई जाति क्योंकि पहले सभी नीयम-कानून सब पुरूष हि बनाते थे और वही ही बनते थे और उस समय महिला भी कुछ कहने से डरते थे और इस डर का कारण है, पुरूष और वे हि इनसे गलत काम करने पर मजबुर करते थे इस कारण से महिलाओ मे हिम्मत हि नही थी उन्हे जिन्दा जला दिया जाता तो कुछ भी नही कहति उनके साथ गंदा और व्यवहार और अत्याचार करते थे इसी कारण से पुरूषो पर पाबंदिया नही थी

-2016 टिप्पणी लिखिए

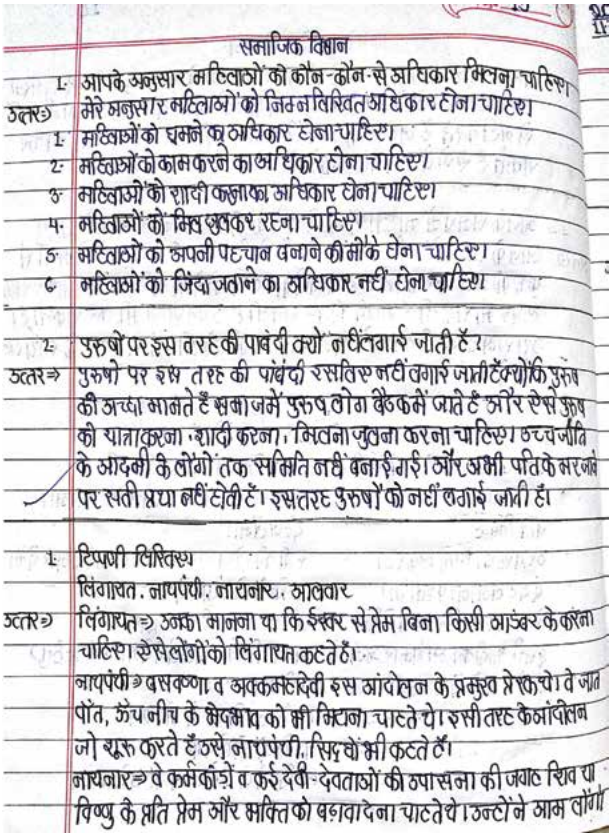

समाजिक विज्ञान

1. आपके अनुसार महिलाओं को कौन-कौन-से अधिकार मिलना चाहिए।
उत्तर⇒ मेरे अनुसार महिलाओं को निम्नलिखित अधिकार होना चाहिए।
1. महिलाओं को घूमने का अधिकार होना चाहिए।
2. महिलाओं को काम करने का अधिकार होना चाहिए।
3. महिलाओं को शादी करने का अधिकार होना चाहिए।
4. महिलाओं को मिल जुलकर रहना चाहिए।
5. महिलाओं को अपनी पहचान बनाने की मौके होना चाहिए।
6. महिलाओं को जिंदा जलाने का अधिकार नहीं होना चाहिए।

2. पुरुषों पर इस तरह की पाबंदी क्यों नहीं लगाई जाती है?
उत्तर⇒ पुरुषो पर इस तरह की पाबंदी इसलिए नहीं लगाई जाती हैं क्योंकि पुरुष को अच्छा मानते हैं समाज में पुरुष लोग बैठक में जाते हैं और ऐसे पुरुष को यात्रा करना, शादी करना, मिलना जुलना करना चाहिए। उच्च जाति के आदमी के लोगों तक समिति नहीं बनाई गई। और अभी पति के मर जाने पर सती प्रथा नहीं होती हैं। इसतरह पुरुषों को नहीं लगाई जाती है।

1. टिप्पणी लिखिए
लिंगायत. नाथपंथी. नायनार. आलवार
उत्तर⇒ लिंगायत⇒ उनका मानना था कि ईश्वर से प्रेम बिना किसी आडंबर के करना चाहिए। ऐसे लोगों को लिंगायत कहते हैं।
नाथपंथी⇒ बसवण्णा व अक्कमहादेवी इस आंदोलन के प्रमुख प्रेरक थे। वे जात पाँत, ऊँच नीच के भेदभाव को भी मिटाना चाहते थे। इसी तरह के आंदोलन जो शुरू करते हैं उसे नाथपंथी, सिद्ध भी कहते हैं।
नायनार⇒ वे कर्मकांडों व कई देवी-देवताओं की उपासना की जगह शिव या विष्णु के प्रति प्रेम और भक्ति को बढ़ावा देना चाहते थे। उन्होंने आम लोगों

7.7.16

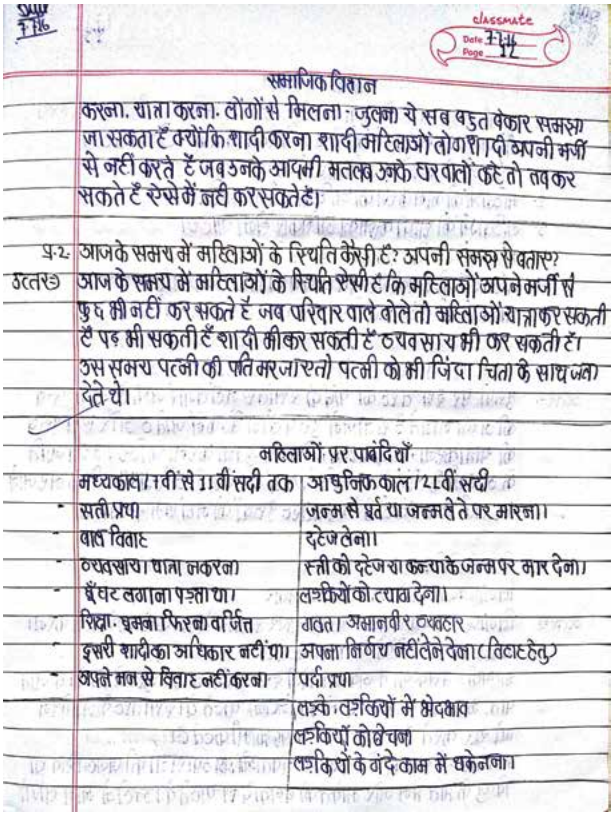

classmate
Date 7.7.16
Page 12

समाजिक विज्ञान

करना. यात्रा करना. लोगों से मिलना-जुलना ये सब बहुत बेकार समझा जा सकता हैं क्योंकि शादी करना शादी महिलाओं लोग शादी अपनी मर्जी से नहीं करते हैं जब उनके आदमी मतलब उनके घरवालों कहे तो तब कर सकते हैं ऐसे में नहीं कर सकते हैं।

प्र.2. आजके समय में महिलाओं के स्थिति कैसी है? अपनी समझ से बताए?
उत्तर⇒ आज के समय में महिलाओं के स्थिति ऐसी है कि महिलाओं अपने मर्जी से कुछ भी नहीं कर सकते हैं जब परिवार वाले बोले तो महिलाओं यात्रा कर सकती हैं पढ़ भी सकती हैं शादी भी कर सकती हैं व्यवसाय भी कर सकती हैं। उस समय पत्नी की पति मर जाए तो पत्नी को भी जिंदा चिता के साथ जला देते थे।

महिलाओं पर पाबंदियाँ

मध्यकाल / 7वीं से 11वीं सदी तक

- सती प्रथा
- बाल विवाह
- व्यवसाय। यात्रा न करना।
- घूँघट लगाना पड़ता था।
- शिक्षा-घूमना फिरना वर्जित
- दूसरी शादी का अधिकार नहीं था।
- अपने मन से विवाह नहीं करना।

आधुनिक काल / 21वीं सदी

जन्म से पूर्व या जन्म लेते पर मारना।
दहेज लेना।
स्त्री को दहेज या कन्या के जन्म पर मार देना।
लड़कियों को त्याग देना।
गलत। अमानवीय व्यवहार
अपना निर्णय नहीं लेने देना (विवाह हेतु)
पर्दा प्रथा
लड़के-लड़कियों में भेदभाव
लड़कियों को बेचना
लड़कियों के गंदे काम में धकेलना।

2- काम करने का अधिकार।

3- अपनी पसन्द के व्यक्ति से शादी करने का अधिकार।

4- सभी महिलाओं को एक साथ रहना चाहिए।

5- महिलाओं के पास अपना आत्मसम्मान बढ़ाने के अवसर होने चाहिए।

6- किसी को भी किसी महिला को मारने / जलाने का अधिकार नहीं है।

उपरोक्त विचार, विश्लेषण एवं एक स्तर की समझ के उपरान्त आए हैं जिन्हें संक्षेप में साझा किया गया है और जिनमें एक ऐसे वृहद समाज, जिसे हम देखना चाहेंगे, उसकी झलक दिखाई देती है। विश्वास, संवाद एवं चर्चा के माध्यम से बढ़ता है और यह सामाजिक विज्ञान को पढ़ाने का एक अन्तर्भूत अंग है। बारह या तेरह वर्ष की उम्र के बच्चे महिला-अधिकार को कैसे देखते हैं, यह इसका एक अच्छा उदाहरण है।

इनमें से कुछ विचार बच्चों के सन्दर्भ से आते हैं, कुछ उनके अनुभवों से और कुछ सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु की समझ से।

प्रकाश चन्द्र गौतम फरवरी, 2012 से अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी,छत्तीसगढ़ में शिक्षण में संलग्न हैं। इससे पहले, वे 16 से भी अधिक वर्षों तक मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में स्कूल शिक्षक थे। जिसमें जनजातीय, ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि के स्कूल शामिल थे। उन्होंने पहली से बारहवीं कक्षा तक के बच्चों के साथ काम किया है। वे अँग्रेज़ी, इतिहास और जीव विज्ञान विषय पढ़ाते हैं। उन्होंने एआईआर रायपुर, छत्तीसगढ़, में एक कैज्युल उद्घोषक के रूप में भी काम किया है। उनसे prakash.gautam@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सुजाता

मेला : जिसमें गणित का नया रूप मिला

प्रमोद चन्द्र पाण्डेय

'गणित मेला', स्कूल में आयोजित होने से पूर्व यह शब्द मेरे लिए भी अपरिचित व अकल्पनीय था। सामान्यतया विद्यालयों में विज्ञान-प्रदर्शनी या विज्ञान मेले के रूप में एक कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। उसमें बच्चे विज्ञान के सिद्धान्तों से जुड़ी दैनिक जीवन में घटने वाली घटनाओं को विज्ञान के नज़रिए से प्रदर्शित करते हैं और उत्साहपूर्वक भाग भी लेते हैं। मेरा अनुभव भी मेले को लेकर इतना ही था।

हमारे विद्यालय में जब इस बार विज्ञान मेले को लेकर बातचीत हुई तो शिक्षक साथियों के समूह में एक विचार आया कि क्या गणित को भी मेले का अंग बनाया जा सकता है। ताकि जिससे गणित के बारे में बनी इस अवधारणा को कि यह अरुचिकर होता है तोड़ने में मदद मिले।

चूँकि मैं भी लम्बे अरसे से बच्चों के साथ गणित को लेकर काम कर रहा था। इसलिए इससे जुड़ी चुनौतियाँ एकाएक मेरे मस्तिष्क में एक के बाद एक आने लगीं। यह सुझाव व्यक्तिगत रूप से मुझे बहुत अच्छा लगा। लेकिन यह समझ पाना कठिन हो रहा था कि गणित में मेला जैसा क्या किया जाए और क्या प्रदर्शित किया जाएगा? फिर विचार आया कि प्रदर्शन करना शायद इतना ज़रूरी नहीं होगा जितना बच्चों को ऐसा वातावरण व मौक़े देना, जिसमें वे खेल-खेल में या रोज़मर्रा की गतिविधियों में गणित को ढूँढ़ पाएँ व सरलता से सम्बन्ध जोड़ते हुए गणितीय कौशलों को सीख पाएँ।

इस विचार को बच्चों तक ले जाने से पहले हमने तय किया कि इसको कैसे करना है व क्या किया जाए, इस बात की गणित टीम में चर्चा की जाए। बातचीत करते हुए यह समझने का प्रयास किया कि दैनिक जीवन से जुड़े ऐसे कौन-से प्रकरण हो सकते हैं जिनके साथ काम करते हुए बच्चों की गणित में रुचि बढ़े। चूँकि पहली बार हम ऐसा कुछ कर रहे थे तो सटीक सुझाव तो नहीं आ पा रहे थे, फिर भी हमने कुछ प्रकरणों की एक सूची बनाई और निर्णय लिया कि इसमें बच्चों की भी मदद ली जाए और उनके साथ एक स्तर की बातचीत की जाए।

अगले चरण के में बच्चों के समूह में गणित मेला आयोजित करने का विचार रखा गया। बच्चे भी 'गणित' और 'मेला' शब्दों को एक साथ सुनकर असमंजस में पड़ गए। कुछ बच्चों ने प्रश्न पूछे लेकिन यह संख्या बहुत कम थी। अधिकांश बच्चों ने यही कहा कि हम तो विज्ञान मेले में भाग लेंगे। वास्तव में इससे मेरा विश्वास भी थोड़ा कमज़ोर-सा पड़ रहा था, लेकिन बच्चों की बातों से यह स्पष्ट हो रहा था कि उन्हें कुछ खोजने व करके प्रदर्शित करने में रुचि है। मैंने सोचा बच्चे सीखते भी तो ऐसे ही हैं और विज्ञान में उनकी रुचि होना स्वाभाविक है। हमने निर्णय लिया कि इस दौरान जाने-अनजाने बच्चों के साथ कुछ ऐसे गणित के खेल खेले जाएँ या पहेलियाँ हल की जाएँ जिन्हें खेलने में व हल करने में बच्चों को आनन्द आए। अपनी कक्षा में इन गतिविधियों को शामिल करने के साथ-साथ हमने बच्चों के छोटे-छोटे समूह में बातचीत जारी रखी। बातचीत के दौरान ही बच्चों से निकलकर आने लगा कि क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हम मेले में आने वाले लोगों से यह पहेलियाँ हल करवाएँ? मैंने कहा, "क्यों नहीं हो सकता है?" इस बात को सुनकर बच्चों का उत्साह बढ़ता नज़र आने लगा। बच्चे साझा करने लगे कि उनके पास भी एक खेल है, वे भी खिलाएँगे आदि-आदि। मैंने इस बात का फ़ायदा उठाया और पूछ लिया कि और क्या कर सकते हैं हम उस मेले में? बच्चे सोचने लगे तो मैंने सुझाव दिया कि हम सब सोचकर आएँगे और मिलकर विचार करेंगे।

इस प्रक्रिया से गुजरने के दौरान बच्चों का एक अच्छा-ख़ासा समूह तैयार हो गया था, जो गणित में कुछ करने के लिए सोचने लगा था। मैंने अपनी टीम में बातचीत की और निर्णय लिया कि बच्चों के साथ विषयों (topics) को लेकर बातचीत करेंगे और समूहों में इन टॉपिक्स पर काम करेंगे। बच्चों के साथ अगली बैठक में कुछ ठोस बातचीत हुई जिसमें हमने आपसी सहमति से कुछ महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स, जो उनके दैनिक जीवन से जुड़े थे, पर काम करने का प्लान तैयार किया। टॉपिक्स कुछ इस प्रकार थे -

1. मापन के साधनों का बदलता स्वरूप
2. मध्याह्न भोजन में छुपा गणित
3. बॉडी मास इंडेक्स
4. पैटर्न्स की दुनिया
5. पहेलियाँ व खेल

बच्चे इन प्रकरणों के बारे में जानते ज़रूर थे लेकिन इन्हें गणित की दृष्टि से उन्होंने कम ही समझा था। जैसे मध्याह्न भोजन में बच्चे प्रतिदिन शामिल होते थे लेकिन किस भोज्य पदार्थ से कितने ग्राम न्यूट्रीशन मिल रहा है, प्रत्येक बच्चे को कितनी मात्रा प्राप्त हो रही है और इस पर लागत क्या आती है आदि की जानकारी उन्हें बहुत कम थी। यही स्थिति अन्य प्रकरणों के साथ भी थी। गणित को कक्षा में या मात्र किताबों से पढ़ने से अलग इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए हमारी टीम और बच्चे छोटे-छोटे समूहों में विभाजित हो गए। प्रत्येक समूह के बच्चों ने अपनी रुचि अनुसार प्रकरण चुन लिए।

इसके बाद अपने-अपने समूह में कार्य की रूपरेखा तैयार होने लगी। बच्चों ने लाइब्रेरी तथा इंटरनैट की सहायता से अपने प्रकरण को समझने का प्रयास किया। मैं जिस समूह का सदस्य था उसके पास मध्याह्न भोजन और मापन के बदलते स्वरूप को समझने व समझाने की ज़िम्मेदारी थी। हमने इस समूह को भी दो भागों में बाँट दिया - एक मध्याह्न भोजन और दूसरा मापन को लेकर काम करेगा, ऐसा निर्णय लिया गया।

अब ग्राउण्ड लेवल पर काम करने की बारी थी। बच्चों ने अपने समूहों में बातचीत करना शुरू किया। शुरुआत के तीन से चार दिन बच्चे इस बात में खूब उलझते रहे कि हमारे काम के इतने सारे छोर हैं इन्हें समेटे कैसे? जैसे मध्याह्न भोजन टीम में बातचीत हो रही थी कि बाज़ार से सामान कितने रुपये में मिलता होगा? क्या सामान की क़ीमत हमेशा एक-सी रहती है? प्रतिदिन खाने में कितना चावल या दाल पड़ती होगी और हमें कैसे पता चलेगा एक बच्चे को कितना न्यूट्रीशन मिला? आदि। लेकिन हमने रास्ता निकाल लिया और निर्णय लिया कि पहले हमें जो-जो काम करने हैं उनकी लिस्ट बनाएँगे और कामों को बाँट लेंगे। अब बच्चों के पास एक फार्मेट था और सबके पास अपने काम की ज़िम्मेदारी। जैसे, दो बच्चे रोज़ाना किचन में जाएँगे और उस दिन उपस्थित बच्चों की संख्या तथा उस दिन के मीनू में कौन-सा भोज्य पदार्थ कितनी मात्रा में डाला गया इसकी जानकारी लेंगे। दूसरा समूह इस लिस्ट के भोज्य पदार्थों की क़ीमत पता करके उस दिन के पूरे ख़र्चे की जानकारी लेगा। एक अन्य समूह की ज़िम्मेदारी थी कि वह यह पता करे कि जो भोज्य पदार्थ आज के मीनू में शामिल हैं उनसे कौन-कौन से न्यूट्रीशन मिलेंगे और कितनी मात्रा में मिलेंगे? इस समूह की यह भी ज़िम्मेदारी थी कि वह यह जानकारी भी जुटाए कि हमारे भोजन में इतनी चीज़ें क्यों शामिल की जा रही हैं।

बच्चों ने अपना काम शुरू किया। वे रोज़ाना डेटा कलेक्ट करते, किताबें पढ़ते और इंटरनैट की भी मदद लेते तथा दोपहर में समूह में बैठकर दिन भर का कैलकुलेशन करते और अपनी रिसर्च को एक फार्मेट में डाल देते। तीन-चार दिन के काम के बाद बच्चे डेटा का विश्लेषण भी करने लगे। बातचीत होती कि किसी भोज्य पदार्थ से न्यूट्रीशन तो कम मिल रहा लेकिन क़ीमत बढ़ रही है तथा गैस सिलिण्डर से खाना बनाने के कारण भी क़ीमत बढ़ रही है आदि। समूह में काम करते हुए इन बच्चों ने सप्ताह के डेटा के आधार पर महीने का ख़र्चा और महीने के ख़र्चे के आधार पर पूरे साल के ख़र्चे का भी हिसाब लगा लिया। साथ ही प्रत्येक बच्चे पर मध्याह्न भोजन के ख़र्चे का भी हिसाब लगाया।

साथ ही साथ अन्य समूह भी इसी तरह काम कर रहे थे। बच्चे अपने-अपने समूह में चर्चा व शेयरिंग कर रहे थे। साथ ही अपने कार्य को प्रदर्शित करने के लिए भी तैयार कर रहे थे। जैसे मापन के साधनों के बदलते स्वरूप को समझने के लिए बच्चे पुराने समय में उपयोग में लाए जाने वाले मापन के साधनों को इकट्ठा कर रहे थे और उनसे मेजरमेंट लेकर आधुनिक साधनों से तुलना कर रहे थे। इस प्रकार स्वयं करके रूपान्तरण (conversion) को समझ रहे थे। पैटर्न को समझने के लिए बच्चों ने मिल-जुलकर अपने आसपास की उन सभी चीज़ों को इकट्ठा किया जिनमें उन्हें कोई भी पैटर्न नज़र आ रहा था। इससे पैटर्न जैसे गणितीय शब्द को वास्तविक जीवन से जोड़कर समझ रहे थे। पहेलियाँ बच्चों के लिए हमेशा से ही बहुत रोचक रही हैं। बच्चों ने एक-दूसरे की मदद करते हुए पहेलियों के साथ अच्छी-ख़ासी दिमाग़ी कसरत की और मेले में आने वाले लोगों को भी मज़ेदार गणितीय खेल खिलाए। इसी प्रकार बीएमआई की समझ को बढ़ाने के लिए बच्चों ने अपने समूह के सदस्यों से इसकी शुरुआत की। इस प्रक्रिया में बच्चों ने जल्दी-जल्दी गणना करने व मानसिक गणना करने पर बहुत सारा काम किया जो उनके प्रस्तुतिकरण में स्पष्ट नज़र आ रहा था। बच्चों ने इंटरनैट से बीएमआई के आधार पर खान-पान के सुझावों का भी अध्ययन किया था और प्रस्तुतिकरण में उन्होंने सभी आने वाले व्यक्तियों के बीएमआई की गणना कर उन्हें एक डॉक्टर के रूप में सुझाव भी दिए।

कुल मिलाकर यह मेला मेरे लिए रोचक अनुभवों से भरा रहा। इससे सीखने-सिखाने के विभिन्न आयामों को समझने के अवसर मिले। विभिन्न गतिविधियों में भागीदारी करते हुए बच्चे जो खोज रहे थे उससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता नजर आ रहा था। कक्षा-कक्ष में जो टॉपिक उनको भारी व बोझिल लगते थे, उनको करके सीखने में उन्हें आनन्द आ रहा था। गणितीय प्रकरणों को दैनिक जीवन से जोड़ते हुए और समूह में कार्य करने से सीखना रुचिकर व दीर्घकालिक होता है। इसका प्रमाण मुझे गणित मेले में बच्चों के प्रस्तुतिकरण को देखकर मिला। बच्चे आत्मविश्वास के साथ लोगों के प्रश्नों के जवाब दे रहे थे, और उनके साथ विमर्श भी कर रहे थे। कुछ पल ऐसे भी आए जब लगातार काम करते हुए बच्चे थकते

हुए भी नज़र आए जैसे मध्याह्न भोजन में प्रत्येक भोज्य पदार्थ की न्यूट्रिशनल वैल्यू कैल्कुलेट करने में उनका बहुत समय व ऊर्जा लग रही थी। लेकिन इसके परिणाम के प्रति उनके मन में जो जिज्ञासा पैदा हुई थी उससे कार्य में उनकी रुचि बढ़ती गई।

चूँकि मेले की पूरी प्रक्रिया अर्थात योजना बनाने से लेकर क्रियान्वयन तक में बच्चों की सम्पूर्ण भागीदारी रही इसलिए यह उनके लिए मात्र जानकारी इकट्ठा करना न रहकर कुछ नया सृजन करने जैसा था।

प्रमोद चन्द्र पाण्डे गत पाँच वर्षों से अज़ीम प्रेमजी स्कूल उत्तरकाशी में गणित शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। उन्हें विभिन्न स्कूलों में गणित शिक्षण का 13 वर्षों का अनुभव है। उनसे pramod.pandey@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

मिठाई में गणित

प्रमोद काण्डपाल

अक्सर जो हम सोचते हैं बहुत बार वैसा ही हो जाता है, और बहुत बार तो जो सोचा होता है उससे कुछ ज़्यादा परिणाम परिलक्षित होते दिखते हैं।

ये सब बातें मेरे ज़हन में एक घटना को याद करके आ रही हैं। ये घटना उस समय की है जब मैं कक्षा 2 में गणित पढ़ा रहा था। मुझसे कहा गया था कि बच्चों के स्तर को देखते हुए आगे बढ़ना है। और आज का विषय था - स्थानीय मान की समझ कराना। पढ़ाने से एक दिन पहले मैं अपने कुछ साथी शिक्षकों के साथ बैठकर चर्चा कर रहा था कि इसे कैसे पढ़ाया जाए। उनसे कुछ सुझाव मिले जो मैंने अपनी डायरी में नोट कर लिए थे।

अगले दिन मैं कक्षा में समय पर पहुँच गया। बच्चों से घर-परिवार की बातचीत हुई। एक बच्चा बोला, सर कहानी सुना दो आज। दूसरे बच्चे ने उसे टोकते हुए कहा कि, ये गणित का पीरियड है, क्या हमको हिन्दी पढ़नी है? और गणित की कक्षा में कहानी कौन सुनाता है? बच्चों की ये बातें सुनकर मेरे मन में एक नए विचार ने जन्म लिया। क्यों न स्थानीय मान की समझ को कहानी से जोड़ा जाए। बस फिर क्या था, मैंने बच्चों को गोले में बैठाकर कहानी सिलाई-बिनाई मिठाई सुनानी शुरू कर दी।

कहानी कुछ इस प्रकार है। एक दादी और उनकी एक पोती थी। दादी की मिठाई की दुकान थी जहाँ वह हर रोज़ सिलाई-बिनाई मिठाई बनातीं व बेचती थीं। मिठाई गिनकर दी जाती थीं। जैसे यदि कोई दादी से 25 सिलाई-बिनाई मिठाई माँगता तो दादी को एक-एक कर गिनना पड़ता। आफ़त तो ज़्यादा तब आती जब कोई 65 या 85 सिलाई-बिनाई माँगता। दादी को फिर 1, 2, 3 कर 65 या 85 तक गिनना पड़ता। इन सब में दादी बहुत परेशान हो जाती थीं। दीवाली का समय था। दादी की दुकान में बहुत भीड़ होने वाली थी। इस कारण दादी अपने साथ दुकान में अपनी पोती को भी ले गईं। सोचा कि कुछ मदद ही कर देगी तो मुझे आराम मिल जाएगा। पोती की दीवाली की छुट्टी भी थी।

दादी ने पोती को दुकान पर बिठाया और स्वयं मिठाई बनाने लग गईं। पोती ने सबसे पहले सिलाई-बिनाई मिठाई के दस-दस के बहुत सारे बण्डल बनाकर रख दिए। जब कोई 25 सिलाई-बिनाई खरीदता तो पोती दस के 2 बण्डल और 5 खुली मिठाई दे देती थी। कोई 45 सिलाई-बिनाई मिठाई खरीदता तो पोती दस के 4 बण्डल व 5 खुली मिठाई दे देती थी। उसकी दुकानदारी को दादी अन्दर से बार-बार देख रही थीं कि पोती तो जल्दी-जल्दी गिनकर दे रही है। दादी को लगा कि पोती गिनने में जल्दबाज़ी कर रही है। लगता है कि इसको दुकान पर लाकर ग़लत कर दिया है। दादी कुछ न बोली, बस परेशान मन से मिठाई बनाती रही।

शाम होने को आई। दादी ने सारी मिठाई बना दी थी। मन-ही-मन परेशान भी थी कि आज तो पोती ने सब गड़बड़ कर दिया। जितने पैसे कमाने थे उतने तो आए नहीं होंगे और दीवाली में ही मेरी मिठाई ज़्यादा बिकती है। अब दीवाली भी जाने वाली है। यह सब सोचते हुए निराश मन से दादी पोती के पास आई और जब उन्होंने अपने गल्ले में ढेर सारे रुपये देखे तो खड़ी-की-खड़ी ही रह गईं। उन्हें इस बात का यक़ीन नहीं हो रहा था कि आज उन्होंने इतनी कमाई की है। वे समझ नहीं पा रही थीं कि पोती ने इतनी जल्दी-जल्दी कैसे मिठाई गिनकर दे दी। दादी को कुछ समझ ही नहीं आ रहा था।

वे पोती से पूछने लगीं कि इतनी जल्दी-जल्दी तुमने मिठाई कैसे बेची? कैसे ये कमाल किया? मुझे इसका जवाब दो और भी न जाने कितने सवाल एक साथ दादी ने पोती से कर दिए। पोती इन सवालों को सुनकर पहले हँसी और फिर बोली, "दादी रुको, मैं आपके सारे सवालों का उत्तर देती हूँ।"

पोती ने बताया कि दादी मैंने दुकान पर आते ही सिलाई-बिनाई मिठाई को गिनकर दस-दस के बण्डल में रख दिया था। और जब कोई ग्राहक मेरे पास आता और वह यदि 26 सिलाई-बिनाई मिठाई माँगता तो मैं 2 दस के बण्डल और 6 खुली सिलाई-बिनाई मिठाई उसे दे देती। जो ग्राहक मुझसे 45, 79, 47 या 87 मिठाई माँगता तो मैं इसी प्रकार संख्या के आधार पर बण्डल व खुली मिठाई दे देती। पोती की ये बातें सुनकर दादी अचम्भित रह गईं कि यह सब तो आज तक मैं कभी नहीं कर पाई और न कभी यह सोच पाई। दादी ने पोती से पूछा कि ये सब करना उसे कहाँ से आया? तो पोती ने बताया कि हमारे स्कूल में हम गणित की कक्षा में कुछ खेल ऐसे ही खेलते हैं। दादी उसकी बातें सुनकर फूली न समा रही थी। उन्होंने पोती को गले से लगा लिया और बोलीं, "मैडम जी, आपने तो मेरा काम हल्का कर दिया है। अब रोज़ मैं भी इसी तरह मिठाई बेचा करूँगी।"

कहानी को सभी बच्चे बड़े ही ध्यान से सुन रहे थे। कहानी सुनने में उन्हें बड़ा ही मज़ा आ रहा था। कहानी खत्म होते ही मैंने बच्चों से एक सवाल किया कि आप सब बच्चे भी सिलाई-बिनाई मिठाई बनाने का खेल खेलना चाहोगे? बच्चों ने ख़ुशी-ख़ुशी हामी भर दी। फिर क्या था, बच्चों के 4 समूह बनाकर उन्हें खूब सारी तीलियाँ दे दी गईं। साथ ही बण्डल को बाँधने के लिए रबर बैण्ड व एक पासा प्रत्येक समूह को दे दिया गया। खेल शुरू हो गया था। खेल कुछ इस प्रकार था कि यदि पासा फेंकने पर पासे में 5 आता है तो मैं 5 तीलियाँ उठाकर अपने पास रख लूँगा। दूसरे बच्चे भी अपनी बारी खेलेंगे और तीलियाँ उठाकर रख लेंगे। पुनः यदि मेरी बारी आने पर पासे में यदि 6 लिखा आता है तो मेरे पास अब कुल 11 तीलियाँ हो जाएँगी। मैं इन 11 तीलियों में से 10 तीलियों का 1 बण्डल बनाकर रख लूँगा। और 1 तीली अलग रख लूँगा। फिर से बारी आने पर पुनः बण्डल बनाने का कार्य चलता रहेगा।

खेल अपनी पूरी चरम सीमा पर था। बच्चे पूरे उत्साह के साथ खेल का मज़ा ले रहे थे। थोड़ी देर बाद मैंने समूह में जाकर हल्की-फुल्की बात करना शुरू कर दिया। मैंने बच्चों से बारी-बारी से सवाल पूछे कि जैसे आप मुझे 25 सिलाई-बिनाई मिठाई दो। उनके बण्डल देने पर उनसे मैं पूछता कि 25 में कितने बण्डल आपने बनाए और कितने खुले आपके पास थे। पूरी प्रक्रिया गजब की चल रही थी। मैं समूह में घूम-घूमकर बच्चों से सवाल-जवाब कर रहा रहा था। और सभी बच्चे समझ के साथ बता रहे थे। बाद में उनके द्वारा बनाई गई सिलाई-बिनाई मिठाई की संख्या को हमने बोर्ड पर लिख दिया। जैसे 5 दस के बण्डल और 8 खुले, मतलब 58।

कहानी व उसके बाद खेल ने बच्चों को एक नई दिशा प्रदान की। बच्चे हर रोज़ बण्डल गेम खेलते तथा समझ पा रहे थे। मुझे स्वयं पर यकीन नहीं हो पा रहा था कि बच्चे बण्डल की समझ को स्थानीय मान की समझ से जोड़ पा रहे थे। बच्चों से मैं पूछता कि 35 का मतलब क्या है? तो बच्चे कहते कि (3 दस के बण्डल व 5 खुले) 30 और 5। कुल मिलाकर बच्चे एक-दूसरे से सीखकर आगे बढ़ रहे थे। इस पूरी प्रकिया ने स्थानीय मान की समझ को बच्चों में मजबूती से रख दिया था। बण्डल से बच्चे धीरे-धीरे स्थानीय मान की ओर स्वतः ही बढ़ रहे थे।

ये सिलाई-बिनाई मिठाई की कहानी उसी कक्षा तक सीमित न रहकर उनके घरों व आस-पड़ोस में भी फैल गई। मैंने ख़ुद इस कहानी को सरकारी स्कूल के शिक्षकों व अपने साथी शिक्षकों के साथ प्रशिक्षण के दौरान साझा करने का प्रयास किया। साथ ही आज जब भी मुझे कोई मौक़ा मिलता है तो मैं इस सिलाई-बिनाई मिठाई की कहानी ज़रूर सबको सुनाता हूँ।

प्रमोद काण्डपाल अज़ीम प्रेमजी स्कूल उत्तरकाशी के साथ प्राथमिक शिक्षक के तौर पर काम कर रहे हैं। उन्हें विभिन्न स्कूलों में शिक्षण का 9 वर्ष का अनुभव है। उनसे pramod.kandpal@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

गणित में भाषा का विकास

राहुल सिंह राठौर

अगर हम अपने किसी साथी या परिचित से यह पूछें कि गणित और भाषा का सीखना आपस में जुड़ा हुआ है या नहीं, तो शायद वे "नहीं" कहेंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनको यह नहीं पता कि गणित का भाषा से किस-किस प्रकार सम्बन्ध है। मैं अपने अनुभवों को साझा करना चाहता हूँ कि भाषा का गणित में क्या योगदान है और हो सकता है। यह इस प्रकार से है :

आम भाषा का उपयोग : शिक्षक कक्षा-कक्ष में गणित (अवधारणाएँ, सूत्र, संक्रियाएँ, प्रमेय इत्यादि) के शिक्षण में आम भाषा का उपयोग करें तो बच्चे उसको जल्दी से ग्रहण करते हैं। उदाहरण : जब हम किसी बच्चे को कोई अंक जैसे 4 सिखा रहे हैं तो उसे 4-4 के समूह को ठोस चीज़ों से जोड़कर समझाते हैं, ताकि वह अमूर्त चीज़ों पर अपनी समझ बना सके।

इसी तरह गणित की कोई भी बात समझाने के लिए हमें बच्चों की पहली भाषा या वह भाषा जो वह समझते हैं उसका सहारा लेना चाहिए। बच्चों को गणित कठिन लगता है क्योंकि हम गणित में आम भाषा का बहुत कम उपयोग करते हैं।

सवालों को समझकर हल करने की भाषा : हमारे गणित सीखने का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है कि हम गणित के द्वारा अपनी दैनिक जीवन के कार्यों को और आसान बना सकें। बच्चे अपनी कक्षा के दौरान इबारती सवालों के माध्यम से यह उद्देश्य प्राप्त करने की कोशिश करते हैं।

गणित की भाषा : गणित ख़ुद एक भाषा है जिसमें गणित में उपयोग होने वाले विभिन्न संकेत, चिन्ह, ख़ुद के शब्द, प्रतीक व व्याकरण के नियम हैं। यह पहले से सुसंगित पूर्व अवधारणाओं पर आधारित है एवं तर्क के नियमों के आधार पर निर्मित हुआ है। गणितीय सोच के विकास के लिए इस तर्क को समझना एवं उपयोग करना ज़रूरी है और यह क्षमता आम भाषा के निर्माण पर निर्भर करती है। मसलन 'और', 'लेकिन', 'इसलिए', 'या' जैसे समुच्चयबोधक शब्दों के उपयोग की क्षमता हासिल करने के बाद ही बच्चे गणितीय तर्क के ऐसे वाक्यों को समझ पाएँगे : "प्रत्येक वर्ग एक आयत होता है लेकिन प्रत्येक आयत वर्ग नहीं होता है।"

दो भाषाओं के बीच में पारस्परिक क्रिया का एक पहलू यह भी है कि दोनों में कुछ सामान्य शब्दों का उपयोग होता है। गणित में आम भाषा के कुछ शब्दों का भी उपयोग होता है, लेकिन गणित के एक निश्चित अर्थ के साथ जैसे, संक्रियाएँ।

गणित शिक्षण में भाषा की भूमिका : हम कक्षा में किसी बच्चे को संख्याओं की अवधारणा हासिल करने में मदद करते हैं जैसे कि 4 की अवधारणा हासिल करने में वस्तुओं के विभिन्न समूह (जैसे पेंसिल, किताबें, बच्चे, पेड़) में मौजूद 4 पन को समझने में। इसी प्रकार बच्चे को अमूर्त अवधारणाओं तथा उनसे सम्बन्धित शब्दों के लिए तैयार करने के लिए हम ठोस वस्तुओं का सहारा लेते हैं। साथ ही हम उसे हर बात आम भाषा में समझाते हैं।

इसी तरह, गणित की कोई भी बात समझाने के लिए हम बच्चों की पहली भाषा का या जो भी भाषा वह बच्चा समझता है उसी का प्रयोग करते हैं। इसके अलावा आम भाषा का उपयोग भी उसी स्तर तक करना चाहिए जिस स्तर तक बच्चा समझ पाए।

यदि हम शुरू से ही इन पहलुओं का ख़्याल नहीं रखेंगे तो बच्चों को आगे आने वाली अवधारणाएँ व प्रक्रियाएँ कभी स्पष्ट नहीं हो पाएँगी। वे गणित की भाषा को लेकर कभी भी सहज नहीं हो पाएँगे। हर मोड़ पर वे संकेतों एवं सुरागों की तलाश में रहेंगे जिनकी मदद से वे परिभाषा या सूत्र को याद तो रख लेंगे, लेकिन फिर जैसे ही जरा भी अपरिचित सवालों से पाला पड़ेगा तो वे तरह-तरह की गलतियाँ करेंगे।

इबारती सवाल

जब बच्चों को इबारती सवालों से रूबरू करवाते हैं तो हमें सही तरह के इबारती सवालों के द्वारा बच्चों को गणितीय अवधारणाओं व प्रक्रियाओं से परिचित कराने की आवश्यकता है। इन सवालों से उन्हें ऐसे सन्दर्भ मिलते हैं जो उन्हे प्रोत्साहित करें। अलबत्ता, बच्चों को इबारती सवाल देते समय ध्यान रखना चाहिए कि सवाल सरल शब्दों में हों तथा बच्चों के दैनिक जीवन से जुड़ते हुए हों।

इबारती सवालों को हल करते हुए यह समझना होता है कि सवाल में कहा क्या गया है। इसके बाद सवाल को वास्तविक जीवन के सन्दर्भ से उपयुक्त गणितीय रूप में बदलना होता है और इसे गणितीय संक्रियाओं के रूप में लिखना होता है। और अन्त में उत्तर को वापिस उस वास्तविक जीवन के सन्दर्भ में रखकर समझना होता है, जहाँ से शुरू किया था।

यानी किसी इबारती सवाल को हल करने के निम्नांकित चरण हो सकते हैं :

1. वास्तविक जीवन के सवाल को समझना
2. गणितीय कथनों में बदलना
3. संक्रियाओं की मदद से सवाल की रचना करना
4. गणितीय सवाल को हल करना
5. सवाल को फिर से अपने वास्तविक जीवन से जोड़कर उत्तर को जाँचना।

अधिकांश बच्चों का इबारती सवालों से सामना नहीं होता है। अधिकांश शिक्षक और पाठ्यपुस्तकें अवधारणाएँ सिखाने के लिए सीधे अमूर्त संख्या-सवालों पर चले जाते हैं या फिर शब्दहीन चित्रों का उपयोग करते हैं। इबारती सवालों पर तो वे साल के अन्त में ही आते हैं जिसके कारण बच्चों को सवालों को हल करने में बहुत ही दिक़्क़तें आती हैं।

जो थोड़े बच्चे इबारती प्रश्नों को करने की कोशिश करते हैं, वे थोड़ा हिचकिचाते हैं। उनमें आत्मविश्वास की कमी साफ़ नज़र आती है। वे कई अटकलें आजमाते हैं। इसमें से कुछ बच्चे ज़्यादातर कुछ संख्याओं को जोड़कर शुरू करते हैं। इसके बाद वे आसपास के बच्चों की कॉपियों में झाँकते हैं कि उन्होंने वही किया है या नहीं।

स्थिति और भी पेचीदा हो जाती है जब हममें से कई लोग बच्चों को अटकल लगाने के ऐसे कारगर तरीक़े सिखा देते हैं जिनसे पता चलता है कि कौन-सी संक्रिया करनी है। हम उन्हें शॉर्टकट और अल्गोरिदम सिखा देते हैं। इन तरीकों से जाने-पहचाने सवालों के अपेक्षित उत्तर निकालने में तो ज़रूर मदद मिलती है लेकिन बच्चे समझ नहीं पाते कि हो क्या रहा है और क्यूँ। नतीजा यह होता है कि अगर उसी सवाल की भाषा में भी थोड़ा बहुत फेर-बदल कर दिया जाए तो उनकी मुश्किल और बढ़ जाती है।

जैसा कि आपने देखा कि इबारती सवालों के सन्दर्भ में बच्चों को कई स्तर पर दिक़्क़तें आती हैं। मुख्य बाधा यह रहती है कि वे वास्तविक जीवन की किसी स्थिति को गणितीय रूप में प्रकट नहीं कर पाते हैं और किसी गणितीय कथन का अर्थ वास्तविक ज़िन्दगी में समझ नहीं पाते। इस हेतु यह ज़रूरी है कि बच्चे आम भाषा को गणितीय प्रतीकों व संक्रियाओं से जोड़ पाएँ। इस सम्बन्ध को जोड़ने हेतु सहायक की आवश्यकता होती है। सवालों को ठोस वस्तुओं से जोड़कर उन्हें चित्रात्मक प्रतीकों की सहायता से उचित हाव-भावों की सहायता के द्वारा समझाना चाहिए जिसके माध्यम से बच्चे उनको समझ पाएँ।

उदाहरण : मैंने यह प्रश्न पूछा

प्रश्न : सन् 2011 की जनगणना के अनुसार सांकरिया गाँव में 4632 महिलाएँ तथा 4598 पुरुष हैं, तो बताओ गाँव की कुल जनसंख्या कितनी है?

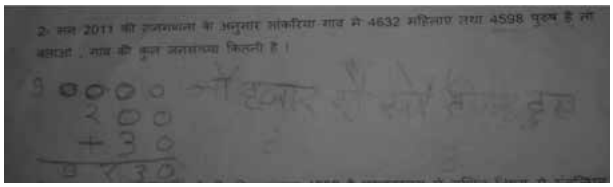

हल :

जब इसको हल करने के बारे में बच्चे से पूछा तो उसने यह कहा कि इसमें पहले उसने प्रश्न को समझा कि इसमें पूछा क्या है। इसके बाद में उसने अपने गाँव से तुलना की कि क्या ऐसा हमारे गाँव में भी हो सकता है। उसके बाद गणितीय प्रक्रिया से हल किया, जिसमें उससे एक ग़लती हो गई थी जिसको उसने बाद में सुधार दिया। उसने 9000 को 90,000 लिख दिया था, लेकिन प्रश्न का हल सही निकाला क्योंकि उसने उस इबारती सवाल को समझा था।

गणित की भाषा सीखना : गणित की भाषा है? क्या किसी भी अन्य भाषा की तरह यह भी ऐसी अवधारणाओं, शब्दों, प्रतीकों, अल्गोरिदम और व्याकरण से मिलकर बनी है, जो ख़ास इसी के लिए बने हैं? बच्चे इस भाषा को तभी समझ सकते हैं जब बच्चे इसका इस्तेमाल करें, यानी इसे बोलें, इसे लिखें, इसे सुनें। बच्चों के साथ गणित की बातचीत, जो कुछ वे कर रहे हैं उसके बारे में उन्हें बताने को प्रेरित करने और गणित की चर्चा के जरिए उनकी समझ को आकार देती है, उनकी गणितीय भाषा व सोच को बेहतर बनाती है।

हाँ, यह ज़रूर है कि जब बच्चे यह बताने की कोशिश करते हैं कि वे क्या कर रहे हैं तो ज़रूरी नहीं कि उनकी बात सुसंगत या तर्कपूर्ण हो। ऐसा इसलिए है क्योंकि सही ढंग से बताने के लिए बच्चे इस बात पर ग़ौर करना शुरू करें। ऐसा करते हुए उनको मौक़ा मिलेगा कि वह क्रिया में शामिल विभिन्न गणितीय प्रक्रियाओं को साथ-साथ रखने की, उन्हें व्यवस्थित करने तथा शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता का विकास कर पाएँ। गणित की उनकी समझ तथा गणित के प्रति उनका लगाव विकसित करने में इसका दूरगामी प्रभाव होता है।

बहुत सारे बच्चे गणना प्रक्रियाओं को सही-सही निपटा लेते हैं हालाँकि वे इसमें निहित गणित को नहीं समझ पाते हैं। उदाहरण के लिए, जब हम किसी भी कक्षा में जाकर 5 अंकों की संख्याओं के बारे में पूछते हैं तो वे सही से नहीं बता पाते हैं जबकि वे संक्रियाओं को सही से कर लेते हैं।

किसी अल्गोरिदम का आधार न समझ पाने का कारण अक्सर यह होता है कि बच्चों को इस बात की अधिक समझ नहीं होती कि हम संख्याओं को एक विशेष ढंग से ही क्यों लिखते हैं। इसी कारण से बच्चे भिन्न-भिन्न प्रकार की ग़लतियाँ करते हैं। अत: उन्हें अवधारणाओं की पूरी समझ होनी चाहिए।

अत: संक्षिप्त में हमें निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए :

1. भाषा के उपयोग का असर बच्चों द्वारा गणित की अवधारणाएँ सीखने पर पड़ सकता है। क्योंकि भाषा की मदद से यह अवधारणाएँ उनके दिमाग़ में बैठ जाती हैं।
2. इबारती सवालों को करते वक़्त, गणित की किताबें पढ़ते वक़्त या उन्होंने जो कुछ समझा है उसे समझाते वक़्त बच्चों को गणितीय भाषा के साथ-साथ रोज़मर्रा की भाषा का भी उपयोग करना होता है।
3. बच्चे इबारती सवालों के प्रति किस प्रकार का रवैया दिखाते हैं? इसका कारण क्या है?
4. बच्चों को इबारती सवालों को समझने में और हल करने में मदद कैसे करें?
5. किसी अल्गोरिदम को लागू कर पाने का मतलब यह नहीं होता कि उसे सीखा जा चुका है।
6. अल्गोरिदम याद रखने के लिए किसी विशिष्ट सन्दर्भ या अवधि में उपयोगी शॉर्टकट या गुर पकड़ लेना खतरनाक भी हो सकता है। इनकी वजह से बच्चे कई बार गलत व्यापकीकरण करते हैं और गलत अवधारणा पकड़ लेते हैं।
7. गणितीय भाषा से बच्चों का परिचय धीरे-धीरे, सही जगह पर, काफ़ी अभ्यास के साथ इस ढंग से कराना चाहिए कि वे इस भाषा को ज़्यादा गहराई से समझने व जानने लगें।

कुछ सुझाव

1. एक ही गणितीय कथन कई अलग-अलग स्थितियों को निरूपित कर सकता है। एक ही स्थिति को अलग-अलग इबारती सवालों के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इबारती सवालों को किसी अल्गोरिदम तरीक़े से प्रस्तुत नहीं किया जाता है। इसलिए इन्हें समझने में देर लगती है। कई अन्य कारण भी हो सकते हैं जो बच्चों से सम्पर्क के दौरान शायद आपको नज़र आएँ।
2. हम ऐसे सवाल बना सकते हैं जिसमें कुछ बच्चों के बीच 4-4 कंकड़ बाँटने हों या अन्य कोई कार्य गणित से सम्बन्धित।
3. '3 + 5 = 8' को निम्नानुसार कम से कम दस तरीक़ों से व्यक्त किया जा सकता है :
   - तीन और पाँच आठ।
   - तीन और पाँच मिलकर आठ होते हैं।
   - तीन जमा पाँच आठ होते हैं।
   - तीन और पाँच का जोड़ आठ होता है।
   - तीन और पाँच का योग आठ होता है।
   - आठ, तीन से पाँच ज़्यादा है।
   - तीन, आठ से पाँच कम है।
   - तीन में पाँच जोड़ें तो आठ आता है।
   - तीन धन पाँच बराबर आठ।
   - तीन धन पाँच आठ होता है।
4. उदाहरणों से एक बात जाहिर है कि ऐसे बच्चे, और कई वयस्क भी, जो जल्द से किसी सवाल को सही-सही हल कर देते हैं, कई बार उसमें शामिल गणित को नहीं जानते। विधि को ठीक से लागू कर पाने का मतलब यह नहीं है कि हम उन संक्रियाओं को समझते हैं जिनके लिए ये विधियाँ बनी हैं। बतौर शिक्षक हमें इस बात के प्रति सचेत रहना चाहिए।
5. हम गणितीय प्रतीकों और कथनों को कैसे प्रस्तुत करते हैं? सोचते वक़्त इस बात पर ध्यान दीजिए कि बच्चों में इन प्रतीकों का अर्थ तथा उनके परस्पर सम्बन्धों की समझ विकसित करना है।
6. गणित की प्रतीकात्मक भाषा की समझ हासिल करने के लिए बच्चों को अवसर प्रदान करने के लिए क्या किया जाना चाहिए? ऐसे कौन-से अनुभव होंगे जिनसे बच्चों को कोष्ठक सहित गणितीय समीकरण और व्यंजक समझने में मदद मिलेगी?

राहुल सिंह राठौर अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन सिरोही, राजस्थान में फरवरी 2012 से कार्यरत हैं। इससे पहले वे अजीत सीनियर सेकण्डरी स्कूल, सिरोही में ही गणित के शिक्षक थे। उन्होंने एम.एससी. (गणित), बी.एड., आरटीईटी और सीटीईटी की उपाधियाँ प्राप्त की हैं। उनसे rahul.rathore@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

पाठ-योजना तैयार करना

रमेश एस.राठौड़

अगर हम चाहते हैं कि कक्षा में सही मायनों में अधिगम हो तो इसके लिए यह ज़रूरी है कि शिक्षक की तैयारी बहुत अच्छी हो। हम शिक्षकों को यह पता होना चाहिए कि किस तरह की तैयारी करनी है। 'बच्चे को कैसे सिखाया जाए?' इसके बारे में सोचने की बजाय हमें यह सोचना चाहिए कि 'बच्चा कैसे सीखता है?' क्योंकि बच्चा तभी सीखता है जब वह सीखने के लिए तैयार हो। सीखने की कोई सीमा नहीं है, शिक्षा तो एक सतत प्रक्रिया है। अगर स्कूल में सीखना एक चरण है तो जीवन में इसे लागू करना या अपनाना एक अन्य चरण है। बाद में तो जीवन ही हमें कोई-न-कोई सबक़ सिखाता रहता है। स्कूल में बच्चे को हम जो शिक्षा देते हैं वह उसके भावी जीवन की नींव होनी चाहिए और जैसी नींव डाली जाएगी, भावी जीवन उसी के अनुसार विकसित होगा। इसलिए बच्चे को सीखने के लिए तैयार करने के लिए यह ज़रूरी है कि शिक्षक अपनी भूमिका को पूर्व-निर्धारित करें और बच्चों के अधिगम के लिए सही गतिविधियों और संसाधनों का उपयोग करें। इसके लिए शिक्षक को अनेक महत्त्वपूर्ण क़दम उठाने होते हैं जिनमें से एक है उचित पाठ-योजना तैयार करना।

पाठ-योजना तैयार करने से पहले हमें इन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे :

1. बच्चे को क्या सीखना है? (अवधारणा/थीम)
2. बच्चा इस विषय को क्यों सीखे? (उद्देश्य)
3. बच्चा कैसे सीखता है? (गतिविधियाँ)
4. मैं बच्चे के सीखने के स्तर का आकलन कैसे करूँ? (मूल्यांकन)
5. इसमें मेरी क्या भूमिका है?
6. इसमें कौन से संसाधनों का उपयोग किया जा सकता है?

जब हम यह कहते हैं कि शिक्षक को शिक्षण के दौरान प्रत्येक विद्यार्थी पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना चाहिए तो इसका यह मतलब है कि हमारे लिए केवल शिक्षण में दक्ष होना पर्याप्त नहीं है बल्कि हमें तो उन विद्यार्थियों की ज़रूरतों के प्रति भी बेहद संवेदनशील होना चाहिए जो सीखने में थोड़ा पीछे रह जाते हैं। हममें उन बच्चों को प्रोत्साहित करने की क्षमता होनी चाहिए जो पढ़ाई में पिछड़ जाते हैं ताकि वे भी अन्य विद्यार्थियों की सीखने की गति से ही सीख पाएँ। इसके अलावा हमें उन्हें पढ़ाने में नवाचारी गतिविधियों और तरीक़ों का उपयोग करने में भी सक्षम होना चाहिए। जो पाठ योजना हम बनाएँ वह ऐसी न हो जो पूरी कक्षा पर समान रूप से लागू होती हो बल्कि ऐसी हो जिसमें प्रत्येक बच्चे के सीखने के स्तर और गति का ध्यान रखा गया हो।

मेरा अनुभव

जब मैं तालिकोटे के ब्रिलियंट स्कूल में काम कर रहा था तो मैं कन्नड़ भाषा को व्याख्यान विधि से पढ़ाता, उसके बाद में प्रश्नों के उत्तर बोलकर लिखवा देता और इस तरह पाठ का शिक्षण पूरा कर देता। लेकिन जब मैं अज़ीम प्रेमजी स्कूल में आया तो मैंने सीखा कि बच्चों में चार मुख्य कौशल विकसित करना कितना ज़रूरी है। जब मैंने इन पर काम करना शुरू किया तो मेरे सामने कई समस्याएँ आईं लेकिन साथ ही मैं कई नई बातें भी सीख रहा था जो मुझे इस राह पर चलते रहने के लिए प्रेरित करती रहीं।

बच्चे के सीखने के स्तर के अनुसार शिक्षण

जब मैं एक ऐसी पाठ-योजना लेकर कक्षा में गया जो सभी बच्चों के लिए समान थी तो मुझे कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा। कुछ बच्चे बहुत परेशान कर रहे थे और कुछ किसी भी गतिविधि में भाग नहीं ले रहे थे। इस वजह से बाक़ी के विद्यार्थियों को दिक्क़त हो रही थी। जब बच्चों के साथ बातचीत के दौरान यह समस्याएँ सामने आईं तो मुझे एहसास हुआ कि कक्षा में हर बच्चे के सीखने का स्तर अलग था। तब मैंने इस समझ के साथ काम करना शुरू किया कि, पहले इस बात का आकलन करना उचित होगा कि हर बच्चे के सीखने का स्तर क्या है और वे कैसे सीखेंगे। इसके लिए मैंने बच्चों के साथ मिलकर काम किया और पाया कि जब उन्हें उनके सीखने के स्तर के मुताबिक़ अलग-अलग प्रकार के काम दिए गए तो वे पूरी रुचि के साथ उन कामों को कर रहे थे। इस अनुभव से मैंने कई नए विचार सीखे और हमने बच्चों को उनके अधिगम-स्तर और गति के अनुसार सीखने में मदद करने की कोशिश की।

पिछले साल से हमने कन्नड़ भाषा में पढ़ने और लिखने का कौशल सिखाने को उप-चरणों के रूप में लिया और उनके लिए उपयुक्त शिक्षण गतिविधियाँ और वर्कशीट तैयार कीं। उसके बाद हमने बच्चों के सीखने की क्षमता के अनुसार उनका मूल्यांकन किया, उनके सीखने के स्तर की पहचान की और फिर उन्हें उस स्तर से पढ़ाना शुरू किया जिस पर वे थे।

परिणामस्वरूप हमने देखा कि बच्चे लगातार काम में जुटे रहते थे। इस अभ्यास से मैंने भी बहुत कुछ सीखा।

सीखने के चरणों की तैयारी करना

कर्नाटक सरकार द्वारा प्रकाशित *कलिका सामर्थ्यगळा कइपिडी* (सीखने की क्षमताओं की पुस्तिका) और कक्षा एक से छह तक के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तकों की सहायता से पढ़ने व लिखने के कौशलों के उप-चरणों का निर्माण किया गया।

पढ़ने व लिखने के कौशलों के उप-चरणों का निर्माण करना आसान था लेकिन सुनने व बोलने के कौशलों के चरणों का विकास करते समय कई मुद्दे सामने आए। इन मुद्दों का हल ढूँढ़ने के लिए मैंने अपने सहयोगियों के साथ चर्चा की और उनके दिए सुझावों के अनुसार चरण तैयार किए। लेकिन इन चरणों के बन जाने के बावजूद कक्षा में काम करते समय मुझे कुछ बदलाव करने पड़े।

वर्कशीट के निर्माण में अधिक समय लगा। आगे का रास्ता निर्धारित करने के लिए हर बच्चे को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक गतिविधि को अन्तिम रूप दिया गया। वर्कशीट इस तरह से बनाई गईं जो हमारे उद्देश्यों की पूर्ति करती हों और बच्चों के उपयुक्त और रुचिकर हों ताकि बच्चे ख़ुशी-ख़ुशी उन्हें हल करें।

शुरू में तो हमने प्रत्येक चरण के लिए एक या दो ही वर्कशीट बनाईं। कक्षा में काम करते समय इन्हें बदला गया और धीरे-धीरे कई और वर्कशीट जोड़ दी गईं।

बच्चों को अधिगम के साथ जोड़ना

अपनी योजना के अनुसार हमने पहले बच्चों के बुनियादी अधिगम-स्तर (बेसलाइन) का मूल्यांकन किया, उसके बाद मैंने चौथी, पाँचवीं और छठी कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों का बेसलाइन समझने के लिए चार या पाँच वर्कशीट बनाईं। यह सुनिश्चित किया कि इन वर्कशीट्स में सभी चरणों के मूल्यांकन तत्व शामिल किए जाएँ। इस तरीके का प्रयोग करने से कुछ बच्चों के सीखने का स्तर तो पहली वर्कशीट से ही पता चल गया जबकि कुछ अन्य बच्चों की सारी वर्कशीट और श्रुतलेख देखने पड़े।

जब हमें हर बच्चे का अधिगम-स्तर पता लग गया तब हमने कक्षा में उनके साथ काम किया। कक्षा में कई तरह की गतिविधियाँ की गईं : सामूहिक गतिविधियाँ और प्रत्येक बच्चे के अधिगम स्तर से शुरू होने वाली व्यक्तिगत गतिविधियाँ। जब बच्चों के अधिगम स्तर के उपयुक्त गतिविधियाँ करवाईं जाती तो वे तुरन्त दिलचस्पी के साथ काम करने लगते। मैं बच्चों को पहले अवधारणा बताता और फिर उन्हें कुछ अभ्यास करने के लिए देता और अगले बच्चे के पास जाता। बच्चे लगातार अपने काम में जुटे रहते। कुछ बच्चों को बीच में मदद की ज़रूरत पड़ती। इसके लिए बच्चों से अलग-अलग समूहों में और व्यक्तिगत रूप से गतिविधियाँ करवाई गईं और ऐसा करने से बच्चों में दिलचस्पी बढ़ी, वे बड़े उत्साह के साथ इनमें भाग लेने लगे और अधिगम के अच्छे परिणाम भी सामने आए।

कुछ उदाहरण

चौथी कक्षा में *वीरमाते जीजाबाई* पाठ का अपेक्षित उद्देश्य है 'निर्देशों का पालन करते हुए और विराम चिह्नों का उपयोग करते हुए लिखने की क्षमता प्राप्त करना'। लेकिन सभी विद्यार्थी इस उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर पाए क्योंकि सबकी क्षमताएँ अलग थीं। हर विद्यार्थी के लिए एक अलग व्यक्तिगत पाठ-योजना और गतिविधियों की ज़रूरत थी। इसलिए हर पाठ की समूह गतिविधियाँ सामूहिक रूप से करवाई गईं, जबकि व्यक्तिगत गतिविधियाँ और वर्कशीट, हर बच्चे की आवश्यकता और उसके स्तर के अनुसार दी गईं।

मैं एक साथ सभी बच्चों पर व्यक्तिगत ध्यान नहीं दे पाता था, अतः मैं कुछ कक्षाओं में उनकी मदद करता। मैंने पहली कक्षा के बच्चों को पढ़ाने/उनका मूल्यांकन करने में पाँचवी कक्षा के बच्चों की मदद भी ली। गतिविधियाँ और मूल्यांकन लगातार चलते रहने चाहिए और रोज़ पाठ पढ़ाने के बाद अपने चिन्तन को दर्ज़ करते रहना चाहिए।

गृहकार्य

इन सब तरीक़ों को अपनाने के बाद भी कुछ बच्चे अपना गृहकार्य नहीं कर रहे थे। तो मुझे लगा कि बच्चों के सीखने के स्तर के उपयुक्त विभिन्न प्रकार का गृहकार्य देना बेहतर होगा। इसलिए मैंने उन्हें वर्कशीट, सारांश कार्य, पठन, अवलोकन, पूछताछ आदि के रूप में गृहकार्य दिए और फिर शनिवार को हम उन पर चर्चा करते। ऐसा करने से लगभग 60%-70% बच्चे समय पर अपना गृहकार्य पूरा करने लगे।

इन परिवर्तनों के लाभ

- बच्चे लगातार काम में लगे रहते।
- प्रत्येक चरण में नए तरीक़े और वर्कशीट होने के कारण बच्चों ने बहुत रुचि के साथ काम किया।
- बच्चों के अधिगम में भी तेज़ी आई क्योंकि बच्चे अपने अधिगम के स्तर पर सीख रहे थे।
- यह बाल-केन्द्रित दृष्टिकोण था जो बच्चों की रुचि से प्रेरित था।
- बच्चों के अधिगम का आकलन और रिकॉर्ड करने में आसानी हुई।
- इसने प्रत्येक बच्चे पर व्यक्तिगत ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित किया।
- इससे मुझे निरन्तर सक्रिय रहने के लिए प्रोत्साहन मिला और मैं रोज़ नई बातें सीख रहा हूँ।

इस विधि में मुझे इन मुद्दों का सामना करना पड़ा :

- इसके लिए मुझे अधिक समय की आवश्यकता हुई।
- इसके लिए मुझे अतिरिक्त काम करना पड़ा क्योंकि मुझे स्वयं ही सारी वर्कशीट बनानी थीं।
- कभी-कभी वर्कशीट नियत उद्देश्य को पूरा नहीं कर पाती थीं।

बच्चों का अधिगम-स्तर

इन चरणों को कक्षा एक से छह की क्षमताओं के लिए बनाया गया है। यह आरोही क्रम में हैं और लगातार बच्चों के अधिगम का आकलन करते हैं जिससे आगे के अधिगम का मार्गदर्शन करने में आसानी होती है। इसके लिए मैंने चार चरण और उप-चरण बनाए हैं व प्रत्येक चरण के लिए गतिविधियाँ निर्धारित की गई हैं।

चरण 1 : लेखन- साफ़ और सुस्पष्ट लेखन

1. सरल शब्द
2. वर्तनी
3. संयुक्त व्यंजन

अ - समान व्यंजन संयोग

ब - भिन्न व्यंजन संयोग

स - मिश्र व्यंजन संयोग

4. वाक्य रचना

   अ - सरल वाक्य निर्माण

   ब - मिश्र वाक्य निर्माण

5. साफ और सुस्पष्ट लेखन
6. व्यवस्थित लेखन
7. सामान्य रूप से प्रयोग किए जाने वाले विराम चिह्नों का उपयोग करते हुए श्रुतलेख लिखना
8. उचित विराम चिह्नों का उपयोग करते हुए सुनी या पढ़ी हुई चीज़ों के बारे में सार्थक वाक्य लिखना

चरण 2 : प्रश्नोत्तर लिखना

1. भाषा सीखना
2. श्रुतलेख लिखना
3. मिलान करने का कार्य

चरण 3 : निर्देश के अनुसार लिखना

1. भाषा के नियमों (व्याकरणिक) को समझकर सरल, गतिशील वाक्य लिखना

   (दिए गए डेटा पर)
2. व्यवस्थित लेखन
3. किसी भ्रमण या उत्सव की रिपोर्ट लिखना

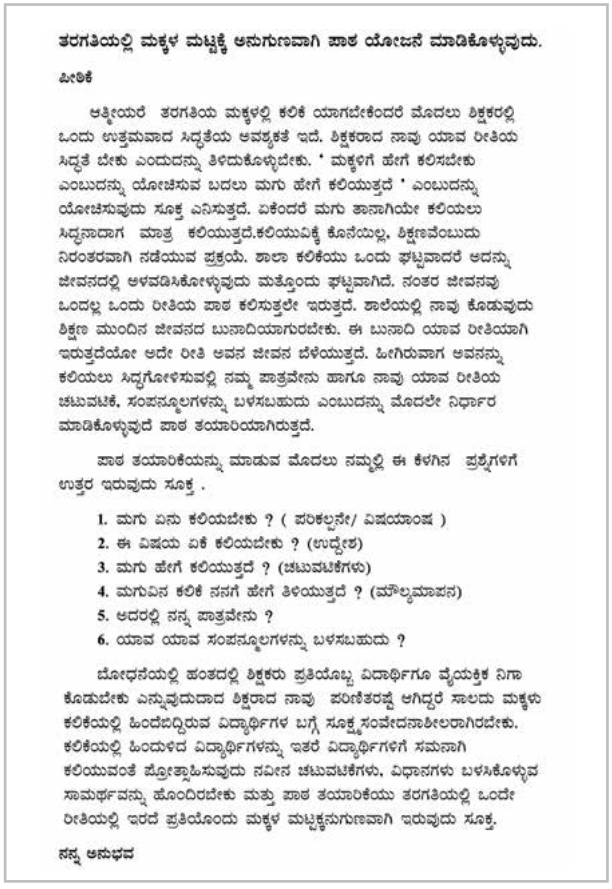

ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಮಕ್ಕಳ ಮಟ್ಟಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ ಪಾಠ ಯೋಜನೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದು.

ಪೀಠಿಕೆ

ಆತ್ಮೀಯರೆ ತರಗತಿಯ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ಕಲಿಕೆ ಯಾಗಬೇಕೆಂದರೆ ಮೊದಲು ಶಿಕ್ಷಕರಲ್ಲಿ ಒಂದು ಉತ್ತಮವಾದ ಸಿದ್ಧತೆಯ ಅವಶ್ಯಕತೆ ಇದೆ. ಶಿಕ್ಷಕರಾದ ನಾವು ಯಾವ ರೀತಿಯ ಸಿದ್ಧತೆ ಬೇಕು ಎಂದುದನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಬೇಕು. ' ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಹೇಗೆ ಕಲಿಸಬೇಕು ಎಂಬುದನ್ನು ಯೋಚಿಸುವ ಬದಲು ಮಗು ಹೇಗೆ ಕಲಿಯುತ್ತದೆ ' ಎಂಬುದನ್ನು ಯೋಚಿಸುವುದು ಸೂಕ್ತ ಎನಿಸುತ್ತದೆ. ಏಕೆಂದರೆ ಮಗು ತಾನಾಗಿಯೇ ಕಲಿಯಲು ಸಿದ್ಧನಾದಾಗ ಮಾತ್ರ ಕಲಿಯುತ್ತದೆ.ಕಲಿಯುವಿಕ್ಕೆ ಕೊನೆಯಿಲ್ಲ. ಶಿಕ್ಷಣವೆಂಬುದು ನಿರಂತರವಾಗಿ ನಡೆಯುವ ಪ್ರಕ್ರಿಯೆ. ಶಾಲಾ ಕಲಿಕೆಯು ಒಂದು ಘಟ್ಟವಾದರೆ ಅದನ್ನು ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸಿಕೋಳ್ಳುವುದು ಮತ್ತೊಂದು ಘಟ್ಟವಾಗಿದೆ. ನಂತರ ಜೀವನವು ಒಂದಲ್ಲ ಒಂದು ರೀತಿಯ ಪಾಠ ಕಲಿಸುತ್ತಲೇ ಇರುತ್ತದೆ. ಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ ನಾವು ಕೊಡುವುದು ಶಿಕ್ಷಣ ಮುಂದಿನ ಜೀವನದ ಬುನಾದಿಯಾಗುರಬೇಕು. ಈ ಬುನಾದಿ ಯಾವ ರೀತಿಯಾಗಿ ಇರುತ್ತದೆಯೋ ಅದೇ ರೀತಿ ಅವನ ಜೀವನ ಬೆಳೆಯುತ್ತದೆ. ಹೀಗಿರುವಾಗ ಅವನನ್ನು ಕಲಿಯಲು ಸಿದ್ಧಗೋಳಿಸುವಲ್ಲಿ ನಮ್ಮ ಪಾತ್ರವೇನು ಹಾಗೂ ನಾವು ಯಾವ ರೀತಿಯ ಚಟುವಟಿಕೆ, ಸಂಪನ್ಮೂಲಗಳನ್ನು ಬಳಸಬಹುದು ಎಂಬುದನ್ನು ಮೊದಲೇ ನಿರ್ಧಾರ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದೆ ಪಾಠ ತಯಾರಿಯಾಗಿರುತ್ತದೆ.

ಪಾಠ ತಯಾರಿಕೆಯನ್ನು ಮಾಡುವ ಮೊದಲು ನಮ್ಮಲ್ಲಿ ಈ ಕೆಳಗಿನ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳಿಗೆ ಉತ್ತರ ಇರುವುದು ಸೂಕ್ತ .

1. ಮಗು ಏನು ಕಲಿಯಬೇಕು ? (ಪರಿಕಲ್ಪನೇ/ ವಿಷಯಾಂಷ)
2. ಈ ವಿಷಯ ಏಕೆ ಕಲಿಯಬೇಕು ? (ಉದ್ದೇಶ)
3. ಮಗು ಹೇಗೆ ಕಲಿಯುತ್ತದೆ ? (ಚಟುವಟಿಕೆಗಳು)
4. ಮಗುವಿನ ಕಲಿಕೆ ನನಗೆ ಹೇಗೆ ತಿಳಿಯುತ್ತದೆ ? (ಮೌಲ್ಯಮಾಪನ)
5. ಅದರಲ್ಲಿ ನನ್ನ ಪಾತ್ರವೇನು ?
6. ಯಾವ ಯಾವ ಸಂಪನ್ಮೂಲಗಳನ್ನು ಬಳಸಬಹುದು ?

ಬೋಧನೆಯಲ್ಲಿ ಹಂತದಲ್ಲಿ ಶಿಕ್ಷಕರು ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬ ವಿದಾರ್ಥಿಗೂ ವೈಯಕ್ತಿಕ ನಿಗಾ ಕೊಡುಬೇಕು ಎನ್ನುವುದುದಾದ ಶಿಕ್ಷರಾದ ನಾವು ಪರೀಕ್ಷೆತರಷ್ಟೆ ಆಗಿದ್ದರೆ ಸಾಲದು ಮಕ್ಕಳು ಕಲಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಹಿಂದೆಬಿದ್ದಿರುವ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳ ಬಗ್ಗೆ ಸೂಕ್ಷ್ಮಸಂವೇದನಾಶೀಲರಾಗಿರಬೇಕು. ಕಲಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಹಿಂದುಳಿದ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳನ್ನು ಇತರೆ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳಿಗೆ ಸಮನಾಗಿ ಕಲಿಯುವಂತೆ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುವುದು ನವೀನ ಚಟುವಟಿಕೆಗಳು, ವಿಧಾನಗಳು ಬಳಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವನ್ನು ಹೊಂದಿರಬೇಕು ಮತ್ತು ಪಾಠ ತಯಾರಿಕೆಯು ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಒಂದೇ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಇರದೆ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಮಕ್ಕಳ ಮಟ್ಟಕ್ಕನುಗುಣವಾಗಿ ಇರುವುದು ಸೂಕ್ತ.

ನನ್ನ ಅನುಭವ

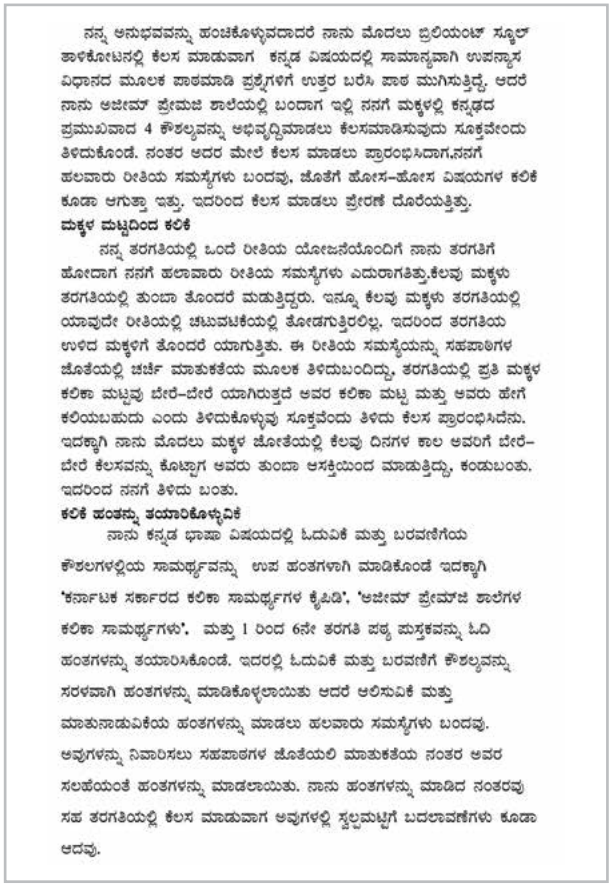

ನನ್ನ ಅನುಭವವನ್ನು ಹಂಚಿಕೊಳ್ಳುವದಾದರೆ ನಾನು ಮೊದಲು ಬ್ರಿಲಿಯಂಟ್ ಸ್ಕೂಲ್ ತಾಳಿಕೋಟನಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವಾಗ ಕನ್ನಡ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಉಪನ್ಯಾಸ ವಿಧಾನದ ಮೂಲಕ ಪಾಠಮಾಡಿ ಪ್ರಶ್ನೆಗಳಿಗೆ ಉತ್ತರ ಬರೆಸಿ ಪಾಠ ಮುಗಿಸುತ್ತಿದ್ದೆ. ಆದರೆ ನಾನು ಅಜೀಮ್ ಪ್ರೇಮಜಿ ಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ ಬಂದಾಗ ಇಲ್ಲಿ ನನಗೆ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ಕನ್ನಡದ ಪ್ರಮುಖವಾದ 4 ಕೌಶಲ್ಯವನ್ನು ಅಭಿವೃದ್ಧಿಮಾಡಲು ಕೆಲಸಮಾಡಿಸುವುದು ಸೂಕ್ತವೇಂದು ತಿಳಿದುಕೊಂಡೆ. ನಂತರ ಅದರ ಮೇಲೆ ಕೆಲಸ ಮಾಡಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದಾಗ,ನನಗೆ ಹಲವಾರು ರೀತಿಯ ಸಮಸ್ಯೆಗಳು ಬಂದವು. ಜೊತೆಗೆ ಹೊಸ-ಹೊಸ ವಿಷಯಗಳ ಕಲಿಕೆ ಕೂಡಾ ಆಗುತ್ತಾ ಇತ್ತು. ಇದರಿಂದ ಕೆಲಸ ಮಾಡಲು ಪ್ರೇರಣೆ ದೊರೆಯತ್ತಿತ್ತು.

ಮಕ್ಕಳ ಮಟ್ಟದಿಂದ ಕಲಿಕೆ

ನನ್ನ ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಒಂದೆ ರೀತಿಯ ಯೋಜನೆಯೊಂದಿಗೆ ನಾನು ತರಗತಿಗೆ ಹೋದಾಗ ನನಗೆ ಹಲವಾರು ರೀತಿಯ ಸಮಸ್ಯೆಗಳು ಎದುರಾಗತಿತ್ತು.ಕೆಲವು ಮಕ್ಕಳು ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ತುಂಬಾ ತೊಂದರೆ ಮಡುತ್ತಿದ್ದರು. ಇನ್ನೂ ಕೆಲವು ಮಕ್ಕಳು ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಯಾವುದೇ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಚಟುವಟಿಕೆಯಲ್ಲಿ ತೋಡಗುತ್ತಿರಲಿಲ್ಲ. ಇದರಿಂದ ತರಗತಿಯ ಉಳಿದ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ತೊಂದರೆ ಯಾಗುತ್ತಿತು. ಈ ರೀತಿಯ ಸಮಸ್ಯೆಯನ್ನು ಸಹಪಾಠಿಗಳ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಚರ್ಚೆ ಮಾತುಕತೆಯ ಮೂಲಕ ತಿಳಿದುಬಂದಿದ್ದು, ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿ ಮಕ್ಕಳ ಕಲಿಕಾ ಮಟ್ಟವು ಬೇರೆ-ಬೇರೆ ಯಾಗಿರುತ್ತದೆ ಅವರ ಕಲಿಕಾ ಮಟ್ಟ ಮತ್ತು ಅವರು ಹೇಗೆ ಕಲಿಯಬಹುದು ಎಂದು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವು ಸೂಕ್ತವೆಂದು ತಿಳಿದು ಕೆಲಸ ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದೆನು. ಇದಕ್ಕಾಗಿ ನಾನು ಮೊದಲು ಮಕ್ಕಳ ಜೋತೆಯಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ದಿನಗಳ ಕಾಲ ಅವರಿಗೆ ಬೇರೆ-ಬೇರೆ ಕೆಲಸವನ್ನು ಕೊಟ್ಟಾಗ ಅವರು ತುಂಬಾ ಆಸಕ್ತಿಯಿಂದ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದು, ಕಂಡುಬಂತು. ಇದರಿಂದ ನನಗೆ ತಿಳಿದು ಬಂತು.

ಕಲಿಕೆ ಹಂತನ್ನು ತಯಾರಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ

ನಾನು ಕನ್ನಡ ಭಾಷಾ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಓದುವಿಕೆ ಮತ್ತು ಬರವಣಿಗೆಯ ಕೌಶಲಗಳಲ್ಲಿಯ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವನ್ನು ಉಪ ಹಂತಗಳಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡೆ ಇದಕ್ಕಾಗಿ 'ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರದ ಕಲಿಕಾ ಸಾಮರ್ಥ್ಯಗಳ ಕೈಪಿಡಿ', 'ಅಜೀಮ್ ಪ್ರೇಮ್‌ಜಿ ಶಾಲೆಗಳ ಕಲಿಕಾ ಸಾಮರ್ಥ್ಯಗಳು', ಮತ್ತು 1 ರಿಂದ 6ನೇ ತರಗತಿ ಪಠ್ಯ ಪುಸ್ತಕವನ್ನು ಓದಿ ಹಂತಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸಿಕೊಂಡೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ಓದುವಿಕೆ ಮತ್ತು ಬರವಣಿಗೆ ಕೌಶಲ್ಯವನ್ನು ಸರಳವಾಗಿ ಹಂತಗಳನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲಾಯಿತು ಆದರೆ ಆಲಿಸುವಿಕೆ ಮತ್ತು ಮಾತುನಾಡುವಿಕೆಯ ಹಂತಗಳನ್ನು ಮಾಡಲು ಹಲವಾರು ಸಮಸ್ಯೆಗಳು ಬಂದವು. ಅವುಗಳನ್ನು ನಿವಾರಿಸಲು ಸಹಪಾಠಿಗಳ ಜೊತೆಯಲಿ ಮಾತುಕತೆಯ ನಂತರ ಅವರ ಸಲಹೆಯಂತೆ ಹಂತಗಳನ್ನು ಮಾಡಲಾಯಿತು. ನಾನು ಹಂತಗಳನ್ನು ಮಾಡಿದ ನಂತರವು ಸಹ ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವಾಗ ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ವಲ್ಪಮಟ್ಟಿಗೆ ಬದಲಾವಣೆಗಳು ಕೂಡಾ ಆದವು.

ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಗಳ ತಯಾರಿಕೆ

ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಯನ್ನು ತಯಾರಿಸಲು ಹೆಚ್ಚು ಸಮಯಬೇಕಾಯಿತು. ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಹಂತವು ಸಾಗುವ ರೀತಿ ನಿರ್ಧಾರವಾಗಲು ಚಟುವಟಿಕೆಗಳು ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಗಳ ಅವಶ್ಯಕತೆ ಇದೆ. ಅವುಗಳು ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಮಗುವನ್ನು ಗಮನದಲ್ಲಿ ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ಚಟುವಟಿಕೆಯನ್ನು ನಿರ್ಧರಿಸುವುದು ಮತ್ತು ಅವು ನಾನು ಇಟ್ಟುಕೊಂಡಿರುವ ಉದ್ದೇಶವನ್ನು ಇದರಿಂದ ಎಷ್ಟರಮಟ್ಟಿಗೆ ಇಡೆರಬಹುದು ಎಂಬುದನ್ನು ಗಮನದಲ್ಲಿ ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ಮತ್ತು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಇದನ್ನು ಸುಲಭವಾಗಿ , ಆಸಕ್ತಿಯಿಂದ ಮಾಡುವಂತಹ ಅಭ್ಯಾಸಹಾಳೆಗಳನ್ನು ಮಾಡಲಾಗಿತ್ತು.

ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಹಂತದಲ್ಲಿ 1–2 ಅಬ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಯನ್ನು ತಯಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲಾಗಿತ್ತು ನಂತರ ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವಾಗ ಮತ್ತೆ ಬದಲಾವಣೆಯಾದವು ಹಾಗೂ ಬೇರೆ–ಬೇರೆ ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಗಳು ಸಹ ಸೇರಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಲೆ ಇವೆ.

ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಕಲಿಕೆಯಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿಸಿಕೊಳ್ಳುವಿಕೆ.

ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ಮೋದಲು ನಮ್ಮ ಯೋಜನೆಯ ಪ್ರಕಾರ ಮಕ್ಕಳ ಕಲಿಕಾ ಹಂತ (ಬೆಸಲೈನ್) ತಿಳಿಯಲು ಪ್ರಯತ್ನಿಸಲಾಯಿತು, ನಂತರ ನಾನು 4,5,ಮತ್ತು6ನೇ ತರಗತಿಯ ಮಕ್ಕಳ ಬೆಸಲೈನ್‌ನನ್ನು ತೀಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು 4ರಿಂದ5 ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಯನ್ನು ಮಾಡಿದೆ, ಅದರಲ್ಲಿ 1ನೇ ಹಂತದಿಂದ ಎಲ್ಲಾ ಹಂತದ ಮೌಲ್ಯಮಾಪನದ ಅಂಶಗಳು ಒಳಗೊಂಡಿರುವಂತೆ ನೋಡಿಕೊಳ್ಳವಾಗಿತ್ತು. ಇದರಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ಮಕ್ಕಳ ಹಂತ 1ನೇ ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಯಿಂದ ತಿಳಿಯಿತು ಆದರೆ ಕೆಲವು ಮಕ್ಕಳಿಗಾಗಿ ಎಲ್ಲಾ ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆ, ಉಕ್ತಲೇಖನಗಳನ್ನು ನೋಡಬೇಕಾಯಿತು.ಇದಾದ ನಂತರ ಮಕ್ಕಳ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡಲಾಯಿತು, ಅಲ್ಲಿಯೂ ಸಹ ಕೆಲವು ಮಕ್ಕಳ ಹಂತ ಬದಲಾಯಿತು.

ಮಕ್ಕಳ ಹಂತವನ್ನು ತಿಳಿದನಂತರ ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಅವರ ಜೊತೆಯಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡಲಾಯಿತು, ತರಗತಿಯಲ್ಲಿಯ ಸಾಮೂಹಿಕ ಮತ್ತು ವೈಯಕ್ತಿಕ ಚಟುವಟಿಕೆಗಳು ಯಾವುವು ಎಂದು ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲಾಗುತ್ತಿತ್ತು. ಸಾಮೋಹಿಕ ಚಟುವಟಿಕೆಯನ್ನು ಸಾಮೋಹಿಕವಾಗಿಯೇ ಮಾಡಿ, ವೈಯಕ್ತಕ ಚಟುವಟಿಕೆ ಮ್ಕ್ಕ ಹಂತದಿಂದ ಮಾಡಲಾಗುತ್ತಿತ್ತು. ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ತಮ್ಮ ಹಂತದ ಕೆಲಸವನ್ನು ಕೊಟ್ಟ ತಕ್ಷಣ ತುಂಬಾ ಆಸಕ್ತಿಯಿಂದ ಮಾಡಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದರು, ಮೊದಲು ನಾನು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಪರಿಕಲ್ಪನೆಯನ್ನು ಪರಿಚಯಮಾಡಿ ನಂತರ ಅವರಿಗೆ ಅಭ್ಯಾಸ ನೀಡಿ ಮುಂದಿನ ಮಗುವಿನ ಬಳಿ ಹೋಗುತ್ತಿದೆ. ಮಕ್ಕಳು ನಿರಂತರವಾಗಿ ತಮ್ಮ–ತಮ್ಮ ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿರುತ್ತಿದ್ದರು. ಮದ್ಯದಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ಮಕ್ಕಳು ಸಹಾಯ ಬಯಸುತ್ತಿದ್ದರು ಅವರಿಗೂ ಸಹಾಯ ಮಾಡುತ್ತ ಮುಂದೆ ಸಾಗುವುದು.

ಇದರಲ್ಲಿ ಮಕ್ಕಳ ಆಸಕ್ತಿಯನ್ನು ಕೇರಳಿಸುವಂತಹ ಬೇರೆ–ಬೇರೆ ಗುಂಪಿನಲ್ಲಿ ಮತ್ತು ವೈಯಕ್ತಿಕ ಚಟುವಟಿಕೆಯನ್ನು ಮಾಡಿಸುವುದು ನಡೆಯುತ್ತಿರುತ್ತದೆ. ಇದರಿಂದ ಮಕ್ಕಳ ತುಂಬಾ ಅಸಕ್ತಿಯಿಂದ ಭಾಗವಹಿಸುವಿಕೆ ಕಂಡುಬರುತ್ತಿತ್ತು ಹಾಗೂ ಕೆಲವು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಇದಕಿಂತ ಭಿನ್ನವಾದ ಕೆಲಸವನ್ನು ಕೂಡಾ ಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ. ಮಕ್ಕಳು ಕೆಲಸ ಮಾಡಿದ ನಂತರ ಹೊರಬರುವ ಕಲಿಕೆಕೂಡಾ ಉತ್ತಮವಾಗಿರುತ್ತದೆ.

ಉದಾ:

4ನೇ ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ "ವೀರಮಾತೆ ಜೀಜಾಬಾಯಿ" ಪಾಠದ ಉದ್ದೇಶ ಬಂದು 'ಸೂಚನೆಗಳನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ಲೇಖನ ಚಿಹ್ನೆ ಸಹಿತ ಬರೆಯುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಹೊಂದುವುದು' ಇದೆ ಅದನ್ನು ತರಗತಿಯ ಎಲ್ಲಾ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳಲ್ಲಿ ಸಾಧಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ, ಏಕೆಂದರೆ ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲಾ ಮಕ್ಕಳ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಒಂದೆ ಇರುವುದಿಲ್ಲಾ. ಆದ ಕಾರಣ ಪ್ರತಿ ಮಕ್ಕಳ ವೈಯಕ್ತಿಕ ಯೋಜನೆ ಮತ್ತು ಚಟುವಟಿಕೆಗಳ ಅವಶ್ಯಕತೆ ಇದೆ.

ಇದನ್ನು ನಾನು ಆಯಾ ಪಾಠದಲ್ಲಿಯ ಸಾಮೋಹಿಕ ಚಟುಚಟಿಕೆಯನ್ನು ಒಟ್ಟಾರೆಯಾಗಿ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದು, ವೈಯಕ್ತಿಕ ಚಟುವಟಿಕೆಯನ್ನು ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಾಸ ಚಟುವಟಿಕೆಯನ್ನು ಅವರವರ ಹಂತದಿಂದ ಮಾಡುತ್ತನೆ. ಇಲ್ಲಿ ಒಂದೇ ಅವದಿಯಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲಾ ಮಕ್ಕಳ ಕಡೆ ವೈಯಕ್ತಿಕ ಗಮನಹರಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗುವುದಿಲ್ಲಾ ಆಗ ನಾನು ಒಂದು ಅವಧಿಗೆ ಕೆಲವು ಮಕ್ಕಳನ್ನು ಮಾತ್ರ ಆಯ್ಕೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಿದೆ. ಮತ್ತು 5ನೇ ಗುಂಪಿನ ಮಕ್ಕಳ ಸಹಾಯ ಪಡೆದು ಒಂದನೇ ಗುಂಪಿನ ಮಕ್ಕಳ ಕಲಿಕೆ / ಮೌಲ್ಯಮಾಪನ ಮಾಡಿಸುವದು. ಇದು ನಿರಂತರವಾಗಿ ಚಟುವಟಿಕೆ ಮತ್ತು ಮೌಲ್ಯಮಾಪನ ನಡೆಯಬೇಕು. ಹಾಗೂ ಪಾಠದ ನಂತರ ಪ್ರತಿದಿನವು ರಿಫ್ಲ್ಯಾಕ್ಷನ್ ಬರೆದರೆ ಉತ್ತಮ.

ಮನೆ ಕೆಲಸ

ಈ ಮೇಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ರೀತಿಯ ವಿಧಾನವನ್ನು ಬಳಸಿದರೂ ಸಹ ಮಕ್ಕಳು ಮನೆಗೆಲಸವನ್ನು ಮಾಡುತ್ತರಲಿಲ್ಲಾ, ಆಗ ನಾನು ಮಕ್ಕಳು ಮನೆಗೆಲಸ ಮಾಡದಿರಲು ಕಾರಣ ಹುಡಕಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದೆ. ಆಗ ನನಗೆ ತಿಳಿದು ಬಂದಿದ್ದು ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಮನೆಗೆಲಸವನ್ನು ವಿಭಿನ್ನ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ನೀಡುವುದು ಮತ್ತು ಅವರ ಹಂತದ ಕೆಲಸ ನೀಡುವುದು.ಹಾಗೂ ಅವು ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆ, ಸಂಗ್ರಹ, ಓದು, ವಿಕ್ಷಣೆ.ವಿಚಾರಣೆ ಇತ್ಯಾದಿ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ನೀಡುವುದು, ಮತ್ತು ಅದರ ಕುರಿತು ಪ್ರತಿ ಶನಿವಾರ ಚರ್ಚೆಯನ್ನು ಮಾಡಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿದ್ದರಿಂದ ಸುಮಾರು 60%–70% ಮಕ್ಕಳು ಪ್ರತಿ ನಿತ್ಯ ಮನೆಗೆಲಸ ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದಾರೆ.

ನನಗೆ ಈ ವಿಧಾನದಿಂದಾದ ಅನೂಕುಲ ಮತ್ತು ಸಮಸ್ಯೆಗಳು.

ಈ ವಿಧಾನದಿಂದಾದ ಅನೂಕುಲಗಳು

- ಮಕ್ಕಳು ನಿರಂತರವಾಗಿ ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ತೊಡಗುವಿಕೆ ಕಂಡು ಬಂತು.
- ಪ್ರತಿ ಹಂತಕ್ಕೂ ಹೊಸ–ಹೊಸ ರೀತಿಯ ವಿಧಾನ ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಗಳು ಇರುವುದರಿಂದ ಮಕ್ಕಳ ಆಸಕ್ತಿಯನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವಂತೆ ಅನೂಕೂಲವಾಯಿತು.
- ಮಕ್ಕಳ ಕಲಿಕಾ ಮಟ್ಟದ ಕಲಿಕೆ ಇರುವುದರಿಂದ ಕಲಿಕೆಯು ಸ್ವಲ್ಪ ಮಟ್ಟದಲ್ಲಿ ವೇಗವಾಗಿ ನಡೆಯುವುದು ಕಂಡು ಬಂತು.
- ಇದು ಮಗು ಕೇಂದ್ರಿತ ಪದ್ಧತಿಯಾಗಿದ್ದು, ಮಗುವಿನ ಆಸಕ್ತಿಯಂತೆ ಕಲಿಕೆಯಾಗುತ್ತಿದೆ ಎಂದು ತಿಳಿದು ಬಂತು.
- ಮಕ್ಕಳ ಕಲಿಕೆಯನ್ನು ಸುಲಭವಾಗಿ ಮೌಲ್ಯಮಾಪನ ಮತ್ತು ದಾಖಲೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಲು ಅನೂಕೂಲ ವಾಗುತ್ತಿದೆ.
- ಪ್ರತಿ ಮಗುವಿಗೂ ವೈಯಕ್ತಿಕ ಗಮನಕೊಡುವಂತೆ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುತ್ತಿದೆ.
- ನಾನು ಸದಾ ಕ್ರಿಯಾಶೀಲರನಾಗಿ ಇರಲು ಪ್ರೋತ್ಸಾಹಿಸುತ್ತಿದೆ ಹಾಗೂ ಪ್ರತಿದಿನವು ಹೊಸ–ಹೊಸ ವಿಷಯವನ್ನು ಕಲಿಸುತ್ತಿದೆ.

ಈ ವಿಧಾನದಿಂದಾದ ಸಮಸ್ಯೆಗಳು

- ಇಲ್ಲಿ ನನಗೆ ಹೆಚ್ಚಿನ ಸಮಯದ ಬೇಕಾಯಿತು.
- ಇಲ್ಲಿ ನಾನು ಎಲ್ಲಾ ವಿಧಾನದ ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಗಳನ್ನು ಸಿದ್ಧಮಾಡಿಕೊಳ್ಳಬೇಕಾಗಿದ್ದರಿಂದ ಇದು ಹೊರೆ ಅನಿಸಿತು.
- ನಾನು ತಯಾರಿಸಿದ ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಯಲ್ಲಿ ಉದ್ದೇಶ ಪೂರ್ತಿಯಾಗದೆ ಹೋಗಬಹುದು ಅದಕ್ಕಾಗಿ ಹೆಚ್ಚಿನ ಕಾರ್ಯದ ಅವಶ್ಯಕ ಇದೆ.

ನನ್ನದೊಂದು ಯೋಜನೆ.

ಮಕ್ಕಳ ಕಲಿಕೆಯ ಹಂತಗಳು

ಈ ಹಂತಗಳನ್ನು 1–6ನೇ ತರಗತಿಯ ಸಾಮರ್ಥ್ಯಗಳು ಒಳಗೊಳ್ಳುವಂತೆ ರಚಿಸಲಾಗಿದೆ.ಇವುಗಳು ಏರಿಕೆ ಕ್ರಮದಲ್ಲಿದ್ದು, ಮಗುವಿನ ಕಲಿಕೆಯನ್ನು ನಿರಂತರವಾಗಿ ಮೌಲ್ಯಮಾಪನ ಮಾಡಿ ಮುಂದಿನ ಕಲಿಕೆಗೆ ಮಾರ್ಗದರ್ಶನ ಮಾಡಲು ಸುಲಭವಾಗುತ್ತದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ನಾಣು ಒಟ್ಟಾರೆಯಾಗಿ 4 ಹಂತಗಳು ಮತ್ತು ಉಪ ಹಂತಗಳಾಗಿ ಮಾಡಿದ್ದು, ಪ್ರತಿಯೊಂದಕ್ಕೂ ಚಟುವಟಿಕೆಗಳನ್ನು ನಿರ್ಧರಿಸಲಾಗಿದೆ.

ಬರವಣಿಗೆ

ಹಂತ : 1 ಸ್ಪಷ್ಟ ಮತ್ತು ಶುದ್ಧಬರಹ

1. ಸರಳ ಪದ
2. ಕಾಗುಣಿತ
3. ಒತ್ತಾಕ್ಷರ
   1. ಸಜಾತಿ ಒತ್ತಾಕ್ಷರ
   2. ವಿಜಾತಿ ಒತ್ತಾಕ್ಷರ
   3. ಮಿತ್ರ ಒತ್ತಾಕ್ಷರ
4. ವಾಕ್ಯರಚನೆ
   1. ಸರಳ ವಾಕ್ಯರಚನೆ
   2. ಸಂಯುಕ್ತ ವಾಕ್ಯರಚನೆ
5. ಅಚ್ಚುಕಟ್ಟಾಗಿ ಮತ್ತು ಸ್ಪುಟವಾಗಿ ಬರೆಯುವುದು.
6. ಕ್ರಮಬದ್ಧವಾಗಿ ಬರೆಯುವುದು.
7. ಉಕ್ತಲೇಖನದ ಮೂಲಕ ಹೆಚ್ಚು ಬಳಕೆಯಲ್ಲಿರುವ ಲೇಖನ ಚಿಹ್ನೆಗಳನ್ನು ಬಳಸಿ ಬರೆಯುವುದು
8. ಆಲಿಸಿದ ಮತ್ತು ಓದಿದ ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಸೂಕ್ತ ಲೇಖನಚಿಹ್ನೆಗಳನ್ನು ಬಳಸಿ ಅರ್ಥಪೂರ್ಣ ವಾಕ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಬರೆಯುವುದು.

ಹಂತ : 2 ಪ್ರಶ್ನೆ ಉತ್ತರ ಬರವಣಿಗೆ

1. ಭಾಷಾಬ್ಯಾಸ
2. ಉಕ್ತಲೇಖನ
3. ಹೊಂದಿಸಿ ಬರೆಯಿರಿ

ಹಂತ : 3 ನಿರ್ದೇಸಿತ ಬರವಣಿಗೆ

1. ಸರಳ ಕ್ರಿಯಾತ್ಮಕ, ಸಾಂರ್ಭಿಕ ಭಾಷಾಂಶ ನಿಯಮಗಳನ್ನು ಅರ್ಥ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ವಾಕ್ಯಗಳನ್ನು ರಚಿಸುವುದು ದತ್ತಕಾರ್ಯ
2. ಕ್ರಮಬದ್ಧ ಬರವಣಿಗೆ
3. ಹೊರಸಂಚಾರ, ಆಚರಣೆಗಳ ವರಧಿ ಬರವಣಿಗೆ
4. ಪದಪುಂಜ,ನುಡಿಗಟ್ಟು,ಮತ್ತು ಗಾದೆ ಮಾತುಗಳನ್ನು ಸ್ವಂತ ವಾಕ್ಯದಲ್ಲಿ ಬಳಸುವುದು.

ಹಂತ : 4 ಸ್ವತ: ಬರವಣಿಗೆ/ ಸೃಜನಾತ್ಮಕ ಬರವಣಿಗೆ

1. ಅನೌಪಚಾರಿಕ ಪತ್ರ , ಕುಶಲೋಪಚಾರಿ ಪತ್ರಗಳು, ಪ್ರವಾಸಲೇಖನಗಳು ಮತ್ತು ಚಿಕ್ಕ ಪ್ರಬಂಧಗಳನ್ನು ಸ್ವತಂತ್ರವಾಗಿ ಬರೆಯುವುದು.
2. ಪಾಠದಲ್ಲಿ ಬರುವ ವಿಚಾರಗಳನ್ನು ಕಥೆ,ಸಂಭಾಷಣೆ, ಸಾರಂಶ ರೂಪದಲ್ಲಿ ಬರೆಯುವುದು.
3. ನಮ್ಮ ಪುಸ್ತಕ
4. ಕಿರು ಟಿಪ್ಪಣಿ
5. ಸ್ವತ: ಕಥೆಬರವಣಿಗೆ
6. ಪದ್ಯ ಬರವಣಿಗೆ
7. ಚಿತ್ರನೋಡಿ ಬರವಣಿಗೆ
8. ಆಡುಭಾಷೆಯಿಂದ ಗ್ರಾಂಥಿಕಭಾಷೆಗೆ ವರ್ಗಾವಣೆ

ಈ ರೀತಿಯಾಗಿ ಹಂತಗಳನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಂಡು , ಅದಕ್ಕೆ ತಕ್ಕಂತೆ ಅಭ್ಯಾಸ ಚಟುವಟಿಕೆ ಮತ್ತು ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆಗಳನ್ನು ಮಾಡಿಕೊಂಡು ತರಗತಿಯಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡುವಾಗ ಹಲವಾರು ರೀತಿಯ ಕಲಿಕೆ ಮತ್ತು ಸಮಸ್ಯೆಗಳು ನನಗಾಯಿತು. ಅದನ್ನು ಆಧಾರವಾಗಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಮುಂದಿನ ಯೋಜನೆಯನ್ನು ತಯಾರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲಾಯಿತು.

4. अपने वाक्यों में मुहावरे, पदबन्धों और कहावतों का प्रयोग करना

चरण 4 : स्वलेखन/रचनात्मक लेखन

1. स्वतंत्र रूप से अनौपचारिक पत्र, औपचारिक पत्र, यात्रा वृत्तान्त और लघु निबन्ध लेखन
2. पाठ में वर्णित बातों को कहानी, संवाद या सारांश के रूप में लिखना
3. हमारी पुस्तक
4. लघु नोट
5. स्वतंत्र रूप से कहानी लेखन
6. कविताएँ लिखना
7. चित्र देखकर उसके बारे में लिखना
8. बोलचाल की भाषा को लिखित भाषा में परिवर्तित करना

इन चरणों का अनुसरण करने के बाद और गतिविधियों पर आधारित अभ्यास और वर्कशीट बनाने के बाद मैंने अपनी कक्षा में बहुत सारी बातें सीखीं। यहाँ तक कि समस्याओं से भी मैंने बहुत कुछ सीखा। मैंने अपनी अगली पाठ योजनाएँ इन्हीं अनुभवों के आधार पर बनाई।

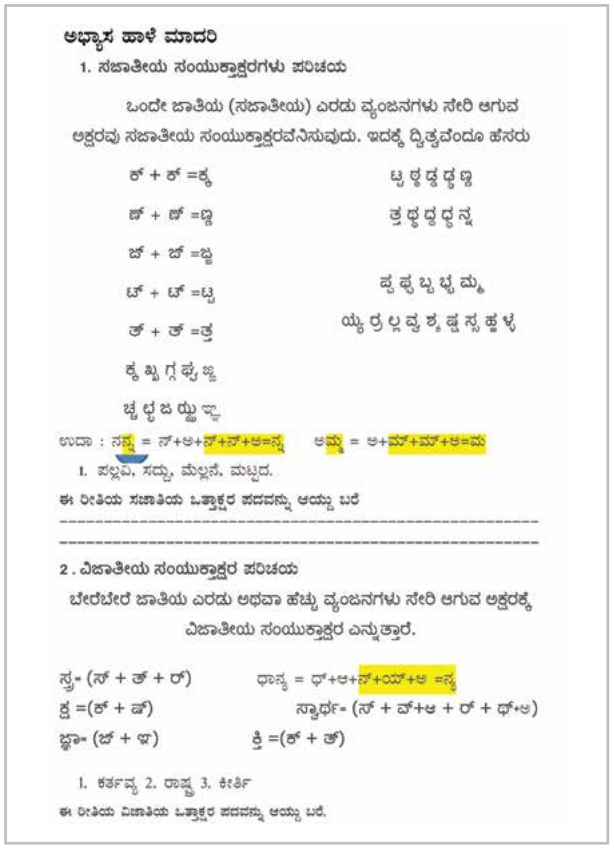

ಅಭ್ಯಾಸ ಹಾಳೆ ಮಾದರಿ

1. ಸಜಾತೀಯ ಸಂಯುಕ್ತಾಕ್ಷರಗಳು ಪರಿಚಯ

ಒಂದೇ ಜಾತಿಯ (ಸಜಾತೀಯ) ಎರಡು ವ್ಯಂಜನಗಳು ಸೇರಿ ಆಗುವ ಅಕ್ಷರವು ಸಜಾತೀಯ ಸಂಯುಕ್ತಾಕ್ಷರವೆನಿಸುವುದು. ಇದಕ್ಕೆ ದ್ವಿತ್ವವೆಂದೂ ಹೆಸರು

ಕ್ + ಕ್ =ಕ್ಕ ಟ್ಟ ಠ್ಠ ಡ್ಡ ಢ್ಢ ಣ್ಣ

ಙ್ + ಙ್ =ಙ್ಙ ತ್ತ ಥ್ಥ ದ್ದ ಧ್ಧ ನ್ನ

ಜ್ + ಜ್ =ಜ್ಜ

ಟ್ + ಟ್ =ಟ್ಟ ಪ್ಪ ಫ್ಫ ಬ್ಬ ಭ್ಭ ಮ್ಮ

ತ್ + ತ್ =ತ್ತ ಯ್ಯ ರ್ರ ಲ್ಲ ವ್ವ ಶ್ಶ ಷ್ಷ ಸ್ಸ ಹ್ಹ ಳ್ಳ

ಕ್ಕ ಖ್ಖ ಗ್ಗ ಘ್ಘ ಙ್ಙ

ಚ್ಚ ಛ್ಛ ಜ್ಜ ಝ್ಝ ಞ್ಞ

ಉದಾ : ನನ್ನ = ನ್+ಅ+ನ್+ನ್+ಅ=ನ್ನ ಅಮ್ಮ = ಅ+ಮ್+ಮ್+ಅ=ಮ್ಮ

1. ಪಲ್ಲವಿ, ಸದ್ದು, ಮೆಲ್ಲನೆ, ಮಟ್ಟದ.

ಈ ರೀತಿಯ ಸಜಾತಿಯ ಒತ್ತಾಕ್ಷರ ಪದವನ್ನು ಆಯ್ದು ಬರೆ

2 . ವಿಜಾತೀಯ ಸಂಯುಕ್ತಾಕ್ಷರ ಪರಿಚಯ

ಬೇರೆಬೇರೆ ಜಾತಿಯ ಎರಡು ಅಥವಾ ಹೆಚ್ಚು ವ್ಯಂಜನಗಳು ಸೇರಿ ಆಗುವ ಅಕ್ಷರಕ್ಕೆ ವಿಜಾತೀಯ ಸಂಯುಕ್ತಾಕ್ಷರ ಎನ್ನುತ್ತಾರೆ.

ಸ್ತ್ರ= (ಸ್ + ತ್ + ರ್) ಧಾನ್ಯ = ಧ್+ಅ+ನ್+ಯ್+ಅ =ನ್ಯ

ಕ್ಷ =(ಕ್ + ಷ್) ಸ್ವಾರ್ಥ= (ಸ್ + ವ್+ಆ + ರ್ + ಥ್+ಅ)

ಜ್ಞಾ= (ಜ್ + ಞ) ಕ್ತಿ =(ಕ್ + ತ್)

1. ಕರ್ತವ್ಯ 2. ರಾಷ್ಟ್ರ 3. ಕೀರ್ತಿ

ಈ ರೀತಿಯ ವಿಜಾತಿಯ ಒತ್ತಾಕ್ಷರ ಪದವನ್ನು ಆಯ್ದು ಬರೆ.

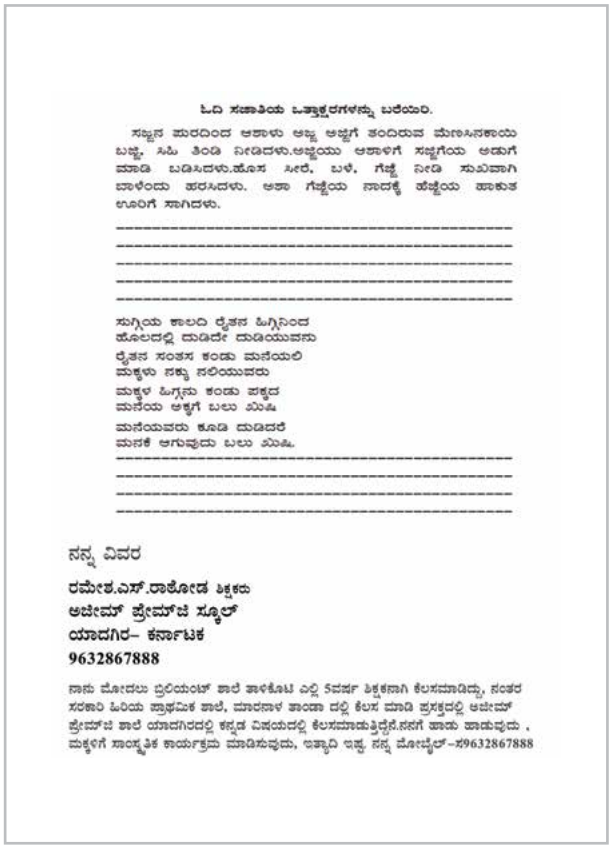

ಓದಿ ಸಜಾತಿಯ ಒತ್ತಾಕ್ಷರಗಳನ್ನು ಬರೆಯಿರಿ.

ಸಜ್ಜನ ಪುರದಿಂದ ಆಶಾಳು ಅಜ್ಜ ಅಜ್ಜಿಗೆ ತಂದಿರುವ ಮೆಣಸಿನಕಾಯಿ ಬಜ್ಜಿ, ಸಿಹಿ ತಿಂಡಿ ನೀಡಿದಳು.ಅಜ್ಜಿಯು ಆಶಾಳಿಗೆ ಸಜ್ಜೆಗೆಯ ಅಡುಗೆ ಮಾಡಿ ಬಡಿಸಿದಳು.ಹೊಸ ಸೀರೆ, ಬಳೆ, ಗೆಜ್ಜೆ ನೀಡಿ ಸುಖವಾಗಿ ಬಾಳೆಂದು ಹರಸಿದಳು. ಆಶಾ ಗೆಜ್ಜೆಯ ನಾದಕ್ಕೆ ಹೆಜ್ಜೆಯ ಹಾಕುತ ಊರಿಗೆ ಸಾಗಿದಳು.

ಸುಗ್ಗಿಯ ಕಾಲದಿ ರೈತನ ಹಿಗ್ಗಿನಿಂದ
ಹೊಲದಲ್ಲಿ ದುಡಿದೇ ದುಡಿಯುವನು
ರೈತನ ಸಂತಸ ಕಂಡು ಮನೆಯಲಿ
ಮಕ್ಕಳು ನಕ್ಕು ನಲಿಯುವರು
ಮಕ್ಕಳ ಹಿಗ್ಗನು ಕಂಡು ಪಕ್ಕದ
ಮನೆಯ ಅಕ್ಕಗೆ ಬಲು ಖುಷಿ
ಮನೆಯವರು ಕೂಡಿ ದುಡಿದರೆ
ಮನಕೆ ಆಗುವುದು ಬಲು ಖುಷಿ.

ನನ್ನ ವಿವರ

ರಮೇಶ.ಎಸ್.ರಾಠೋಡ ಶಿಕ್ಷಕರು
ಅಜೀಮ್ ಪ್ರೇಮ್‌ಜಿ ಸ್ಕೂಲ್
ಯಾದಗಿರ– ಕರ್ನಾಟಕ
9632867888

ನಾನು ಮೊದಲು ಬ್ರಿಲಿಯಂಟ್ ಶಾಲೆ ತಾಳಿಕೋಟ ಎಲ್ಲಿ 5ವರ್ಷ ಶಿಕ್ಷಕನಾಗಿ ಕೆಲಸಮಾಡಿದ್ದು, ನಂತರ ಸರಕಾರಿ ಹಿರಿಯ ಪ್ರಾಥಮಿಕ ಶಾಲೆ, ಮಾರನಾಳ ತಾಂಡಾ ದಲ್ಲಿ ಕೆಲಸ ಮಾಡಿ ಪ್ರಸಕ್ತದಲ್ಲಿ ಅಜೀಮ್ ಪ್ರೇಮ್‌ಜಿ ಶಾಲೆ ಯಾದಗಿರದಲ್ಲಿ ಕನ್ನಡ ವಿಷಯದಲ್ಲಿ ಕೆಲಸಮಾಡುತ್ತಿದ್ದೇನೆ.ನನಗೆ ಹಾಡು ಹಾಡುವುದು , ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮ ಮಾಡಿಸುವುದು, ಇತ್ಯಾದಿ ಇಷ್ಟ. ನನ್ನ ಮೊಬೈಲ್–ನ9632867888

रमेश एस.राठौड़ अज़ीम प्रेमजी स्कूल, यादगीर, कर्नाटक में कन्नड़ भाषा के शिक्षक हैं। इसके पहले उन्होंने मरनाल तण्डा के सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय और तालिकोटे के ब्रिलियंट स्कूल में अध्यापन कार्य किया। वे गायन और बच्चों को सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए तैयार करने में रुचि रखते हैं। उनसे ramesh.rathod@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल

एक पन्ना मेरी डायरी से

रवि प्रताप सिंह

15 मार्च, 2013 शुक्रवार

जब दिन शुरू हुआ तो मुझे इस बात का ज़रा भी आभास नहीं था कि आज इतनी भावनाओं से भरे माहौल से गुज़रना पड़ेगा। एक घटना जिसके लिए मैं पहले से तैयार था और वह होनी ही थी। मैं बात कर रहा हूँ नीलम के जाने की। आज स्कूल में उसका अन्तिम दिन था क्योंकि उसकी शादी होने वाली थी। दूसरी जो बात हुई उसका अन्देशा तो था। एक दिन पहले ही मैंने मोनू सर से इस बात को शेयर किया था। लेकिन मुझे लगता था कि इस घटना के होने में समय लगेगा, शायद एक साल। सुबह स्कूल की शुरुआत हुई। मेरी कक्षा 2 के बच्चों ने नृत्य-गाना प्रस्तुत किया। मनोरंजक प्रश्नोत्तर के बाद कक्षाएँ प्रारम्भ हो गईं। अपनी पहली कक्षा 2 में गणित का पीरियड लेने के बाद मैं कक्षा 3 में गणित का पीरियड लेने के लिए गया। अभी दस मिनट ही बीते थे कि मैंने आदित्य की मम्मी को आते हुए देखा। उनको देखते ही मेरे मन में अचानक से अजीब-से ख़्याल आने लगे। एक डर, जैसा जब हम छोटे थे तब रिज़ल्ट आने से पहले होता था। मैं कमरे से बाहर आया और बरामदे में उनसे मिला। वे कुछ बोल पातीं इससे पहले मैंने कहा, "मैं आपको फ़ोन करने वाला था। दो दिन से आदित्य स्कूल नहीं आ रहा था।" उस समय उन्होंने जो भी कहा, मुझे पता नहीं उसे मेरे कानों ने ठीक से सुना कि नहीं, परन्तु उस बात का सम्प्रेषण मेरे दिमाग़ में नहीं हुआ क्योंकि मेरा मन उस बात के लिए तैयार नहीं था। अचानक ही मन, कान और दिमाग़ पर हावी हो गया था। फिर जब मैंने ध्यान दिया तब मेरे पैर के नीचे से ज़मीन खिसक गई। ऐसा लगा कि अचानक ही किसी ने मुझे हज़ारों फ़ीट गहरी खाई में धकेल दिया हो। बस मुझे एक ही बात समझ आई कि वे आदित्य की टी. सी. के लिए आई थीं। क्योंकि उसके दादाजी नाराज़ थे और उसका एडमिशन हिम क्रिस्चियन अकादमी में करा दिया था। मैंने अपने-आप को सम्भालते हुए उनसे कहा कि मैं शाम को आपको फ़ोन पर बता दूँगा कि टी. सी. कब मिलेगी।

अपनी कक्षा से किसी बच्चे का चले जाना कोई असाधारण बात नहीं थी। एक शिक्षक के जीवन में यह कोई नई बात नहीं होती, और ऐसा पहले भी मेरे साथ कई बार हुआ है। परन्तु कुछ था जिसने इस घटना को इस पेज पर स्थान दिया। न मैं असाधारण था, न आदित्य की मम्मी की फरमाइश। यदि कोई असाधारण है, तो वह है आदित्य और आज उसका ज़िक्र बहुत ज़रूरी है।

कक्षा 2 में पढ़ने वाला आदित्य, 9-10 साल का बच्चा है। स्वास्थ्य ठीक-ठाक, भरा-पूरा चेहरा, ढीली-ढाली पैन्ट, बेअसर-सी बैल्ट, पैन्ट से बाहर आने को आतुर शर्ट, और नाक सिकोड़कर आँखें छोटी करके किसी चीज़ को देखने की आदत। आदित्य हमारी दुनिया में रहते हुए भी अपनी दुनिया में मस्त, कोई ज़्यादा मतलब नहीं जब तक कि हम ख़ुद उसकी दुनिया में दख़ल न दें। एक प्यारी-सी दुनिया है उसकी। उसमें उसकी गाड़ियाँ, सड़कें, ट्रैफिक, पुलिस, आर्मी, हेलीकॉप्टर, मुख्यमंत्री, भारत–पाकिस्तान, दिल्ली, पेट्रोल पम्प, रैली, झण्डा, साइकिल, पुल, सुरंग और न जाने क्या-क्या। स्कूल के अन्दर आने के बाद बैग क्लास के दरवाज़े पर रखता और फिर मैदान के एक कोने से दूसरे कोने तक दौड़ता। कभी किसी गाड़ी का पीछा करता, कभी गाड़ी बैक करता और कभी ट्रैफिक जाम में फँसा हुआ। पूरे स्कूल यहाँ तक कि पूरे फ़ाउण्डेशन में आदित्य अपनी इस बात के लिए जाना जाता था। उसकी पहाड़ के परिवहन की समझ हमें मजबूर कर देती थी आश्चर्यचकित होने पर। मैंने अब तक की अपनी ज़िन्दगी में ऐसा कल्पनाशील बच्चा नहीं देखा था। सोने पर सुहागा उसकी ड्राइंग। एक ए-4 शीट पर हेलीकॉप्टर, ट्रैफिक में फँसी गाड़ियों की कतार, उन्हें सम्भालती ट्रैफिक पुलिस, उसकी अपनी गाड़ी, एम्बुलेंस, साइकिल से स्कूल जाता बच्चा और न जाने क्या-क्या। पेज का एक-एक इंच प्रयोग होता है। सभी जगहों पर उपयुक्त चीज़ और एक तर्क के साथ सभी बातें एक कहानी के रूप में और उस कहानी को सुनाने के लिए हमेशा उत्सुक मेरा–हमारा आदित्य। इस एक साल में जब से मैंने देखा कि उसका रुझान ड्राइंग में है, मैंने उसे पूरा मौक़ा दिया इस काम को करने का। जब-जब उसने ड्राइंग करनी चाही मैंने उसे करने दिया। जब वह कहानी सुनाना चाहता उसे सुनाने दिया। कभी-कभी तो लगता कि शायद मैं आदित्य के लिए काबिल टीचर नहीं हूँ। ड्राइंग के अलावा हर विषय में हमेशा आगे, निर्भीक, सच्चा और ईमानदार। हम तो कहते भी थे कि हमारे लैसन प्लान तो आदित्य ही सफल बनाता है। साल भर में आदित्य से जुड़ी बहुत-सी कहानियाँ हैं। मैं सारी लिखना चाहता हूँ, पर लिखने की अपनी सीमाएँ हैं। अभी कुछ दिन पहले की बात

है। लंच के समय वो भागा-भागा मेरे पास आया। एक हाथ से अपनी पैन्ट सम्भालते और दूसरे हाथ में किसी गाड़ी की टूटी हुई हैडलाइट का फ्रेम लिए हुए, "सर ये लोग मुझसे ये छीन रहे हैं, आप इसे सम्भालकर रख दो।" मैंने उसे धोकर टॉयलेट की छत पर रख दिया और वह तब तक देखता रहा जब तक उसे सन्तुष्टि नहीं हुई कि वह चीज़ सुरक्षित रहेगी। जब पिछली पीटीएम में मेरी उसकी मम्मी से बात हुई तब वह कह रही थीं कि उनका अकेला लड़का है और उन्हें डर है कि कहीं वह पीछे न रह जाए। मैंने पूरी कोशिश उनके बेटे की विशेषता बताई और विषयवार उसकी रिपोर्ट भी दिखाई। अँग्रेज़ी माध्यम और अनुशासन, बच्चे में टीचर के डर को लेकर उनकी सुई अटकी हुई थी।

आज उनकी निर्णायक बात सुनकर मुझे तथाकथित पढ़े-लिखे और समझदार माता-पिता पर तरस भी आता है और ग़ुस्सा भी। और सबसे ज़्यादा दुःख तो मुझे आदित्य के लिए है। हो सकता है जैसे उसके माता-पिता चाहते हैं वैसे करके वे कुछ कर लें, लेकिन जहाँ उसका मन लगता है और जो वह करना चाहता है शायद ही कर पाएगा। एक नायाब कलाकार पिस जाएगा किताबों के बोझ और ज़िन्दगी की जद्दोजहद में। इन सबमें सबसे बड़ा नुक़सान होगा तो एक बच्चे का, जिसमें उसका कोई दोष नहीं है। यही वेदना, दुःख मुझसे सहन नहीं हो रहा है। और मैं इतना बेबस, लाचार हूँ कि कुछ भी नहीं कर पा रहा हूँ। मैंने अपने मेंटर प्रसाद जी से बात की। उन्होंने कहा कि कल उसकी मम्मी को बुलाना। मैं बात करूँगा, आप भी करना। अब मेरी सारी उम्मीदें कल की बात पर टिकी हैं।

16 मार्च, 2013 शनिवार

सुबह 10 बजे आदित्य की मम्मी आईं। मैंने और प्रसाद जी ने बात की, कारण जानने की कोशिश की। अँग्रेज़ी माध्यम न होने की वजह से आदित्य की मम्मी उसे दूसरे स्कूल में डाल रही थीं। मैंने जान-बूझकर आदित्य को भी बुलाया था ताकि मैं एक बार उससे मिल सकूँ। और आख़िरी बार वो मुझे अपनी स्टाइल में मुस्कराते हुए दिखा।

आज इस घटना को बीते हुए चार साल हो गए हैं। उसी गाँव में रहने के कारण कई बार रास्ते में जाते हुए, दुकान पर कुछ सामान लेते हुए आदित्य दिख जाता है लेकिन उसके चेहरे की वह जादुई चमक, विश्वास से भरा हुआ उसका व्यक्तित्व नहीं नज़र आता। ऐसा लगता है कि आदित्य से वह जादुई चीज़ छिन गई है। मैं अपने मन को समझाता हूँ कि ऐसा न हुआ हो तो अच्छा है।

रवि प्रताप सिंह अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी में 2012 से शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। वे प्राथमिक कक्षाओं में सभी विषय पढ़ाते हैं। उनसे ravi.singh@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

बच्चों के अनुभव एवं सामाजिक मुद्दों के साथ जुड़ाव

साहबुद्दीन अंसारी

प्रस्तावना

सामाजिक विज्ञान पढ़ते समय बच्चे समसामयिक मुद्दों एवं कक्षा-कक्ष के अनुभव एवं अपने सामाजिक अनुभव को समझ सकें व विषय के साथ जोड़कर देख पाएँ। मूल्यांकन का सिर्फ एक तरीक़ा नहीं है। यह देखना होगा कि बच्चों ने विषय को कितनी गहराई से समझा तथा क्या वे उसे अपने दैनिक जीवन से जोड़कर देख पा रहे हैं। यदि वे अपनी बात को लिखकर अभिव्यक्त कर पा रहे हैं जो कि उनके अनुभवों से जुड़ा है, तो यह शिक्षा के उद्देश्यों को भी पूरा करता है।

भारतीय संविधान में भारत के नागरिकों के लिए अनेक प्रावधान किए गए हैं जिसमें समानता, बन्धुत्व, धर्मनिरपेक्षता आदि शामिल हैं। भारत के नागरिकों को कुछ अधिकार भी दिए गए हैं जैसे शिक्षा का अधिकार एवं बाल अधिकार। शिक्षा के महत्त्व को देखते हुए संविधान में 86वाँ संशोधन करके इसमें शिक्षा के अधिकार को मौलिक अधिकार में सम्मिलित किया गया है। भारत के संविधान में अनुच्छेद 45(1), 21 में शिक्षा का अधिकार दिया गया है जिसमें 6-14 वर्ष के सभी बच्चों के लिए निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया गया है, जिसमें बिना भेदभाव सभी लिंग,जाति,धर्म के बच्चों को शिक्षा का अधिकार प्राप्त है। साथ ही बच्चों के कुछ अधिकार भी हैं जिसमें जाति, क्षेत्र, सम्प्रदाय, भाषा, लिंग के आधार पर भेदभाव किए बिना उनके विचारों को सुना जाए व सम्मान किया जाए। घरेलू हिंसा, यातना, शोषण से बचाया जाए तथा विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के गौरव की रक्षा की जा सके। बच्चे के विकास के लिए पर्याप्त अवसर मिलें तथा बच्चों को जोख़िम भरे कार्यों से दूर रखा जाए।

इस बात की समझ बनाने के लिए कि बच्चों ने जो कुछ पढ़ा व समझा है उसको अपनी असल ज़िन्दगी में भी महसूस करें तथा उनके आसपास इस तरह की कोई घटना या ऐसा बच्चा है जिसके अधिकारों का हनन होता हो या शिक्षा के अधिकार से वंचित हो, मैंने कक्षा 8 के बच्चों को एक प्रोजेक्ट कार्य सौंपा। जिसमें उन्हें छूट दी गई थी कि वे अपने आसपास जाकर सर्वे करें, लोगों से बात करें या ऐसे 5 बच्चों को चिन्हित करें। यदि शिक्षा के अधिकार या बाल अधिकारों से वंचित हैं तो उसके क्या कारण हैं? उन्होंने ऐसा क्यों किया? इस कार्य को करने के उद्देश्य थे पहला, बच्चों ने बाल अधिकार व शिक्षा के अधिकार को कितना समझा है? दूसरा, समाज में अनेक ऐसी घटनाएँ हैं जिन्हें हम अपनी पुस्तक के साथ जोड़कर नहीं देख पाते हैं। उन्हें अपनी पुस्तक व जीवन से जोड़कर देखना तथा संवेदनशीलता का विकास करना।

इस कार्य को बच्चों ने बड़ी ख़ुशी-ख़ुशी किया। पर जब कक्षा में इस पर बात हुई तो इस प्रोजेक्ट कार्य में समाज में वंचित वर्ग, जिनके पास धन का अभाव है, जिनके माता-पिता नहीं हैं या जिनके यहाँ कोई कमाने वाला नहीं है, उनके प्रति उनकी संवेदना देखने को मिली।

साथ ही कई प्रश्न खड़े हो गए कि यदि किसी के पास धन का अभाव है, बच्चों की मजबूरी है फिर वे किसको चुनें? यदि स्कूल जाते हैं तो घर बिखर जाता है, और काम करते हैं तो बाल अधिकारों का हनन होता है। जब बच्चों ने अपने अनुभव को साझा किया तो समाज के वंचित वर्गों के प्रति एक चिन्ता थी कि सरकार ने यह लागू तो कर दिया है कि बाल अधिकार, शिक्षा का अधिकार हर बच्चे को मिले लेकिन क्या वास्तव में यह सम्भव है? और यदि है तो कैसे? सिर्फ काग़ज़ों में ही इसे किया जा सकता है तो वे बच्चे कैसे स्कूल जाएँगे जो होटलों या गैराजों में काम करते हैं? यदि वे स्कूल जाएँगे तो उन्हें दुकान में कौन रखेगा? वे काम करने कब जाएँगे? कानून हमारे अधिकारों का संरक्षण करता है तथा हमारे अधिकारों का हनन होने से बचाता है। हमें मजबूरी में जोखिम भरे कार्य करना पड़ता है फिर भी हम उसकी शिकायत नहीं कर सकते हैं। यदि हम ऐसा करते हैं तो परिवार के अन्य सदस्यों का क्या होगा? और भी यक्ष प्रश्न थे जिनके उत्तर उन्हीं से जानने का प्रयास किया।

बच्चों से कहा कि वे अपने अनुभव लिखकर अभिव्यक्त करें कि उन्होंने क्या महसूस किया, उन्हें क्या अच्छा लगा व समाज में सर्वे करने के बाद उनकी सोच में क्या परिवर्तन आया। क्या जो पुस्तक कह रही है, सही है? बच्चों के अनुभव बिलकुल अलग थे। वे इतने भावुक हो गए और बोले कि उन्हें बिलकुल भी अच्छा नहीं लगा क्योंकि सरकार के हिसाब से कानून तो है पर वास्तव में ज़मीनी हक़ीक़त अलग है। जो समस्याएँ हैं उन्हें क़ानून बना देने से ही दूर नहीं किया जा सकता है। कुछ और तरीक़े सोचने की ज़रूरत है, जैसे ऐसे बच्चों के लिए अलग से स्कूल खोलने की आवश्यकता है जिनके घर

में वास्तव में समस्या है। वे काम तो बन्द नहीं कर सकते पर उनके लिए सामान्य समय से अलग समय पर स्कूल खोलने की आवश्यकता है ताकि उन्हें उनके काम के साथ-साथ शिक्षा भी मिल सके। तभी सही मायने में संविधान द्वारा प्रदत्त शिक्षा के अधिकार एवं बाल अधिकारों को अमली जामा पहनाया जा सकता है।

बच्चों के अनुभव

- इस कार्य को करने में मुझे बहुत अच्छा लगा। मुझे यह पता चला कि हमारे गाँव में इतने बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं और उन बच्चों के बाल अधिकारों का हनन होता है। मुझे घर से बाहर जाने, घूमने का मौक़ा भी मिला और मुझे अच्छा भी लगा क्योंकि यह पता चला कि जो बच्चे स्कूल जाना चाहते हैं उन्हें नहीं जाने दिया जाता है। उनसे मैंने इसका कारण जानने का प्रयास किया तो डाँट भी पड़ी क्योंकि वे बताना नहीं चाहते थे।
- मैं छुट्टी के दिनों में सर्वे करने गई। मैंने कुछ बच्चों के नाम लिखे जिनके बाल अधिकारों का हनन हो रहा था। मैंने जगह-जगह जाकर बच्चों के बारे में जानकारी इकट्ठा की। मैं एक घर में गई और सुमन (काल्पनिक नाम) की मम्मी से कहा कि वे सुमन को खेलने, घूमने क्यों नहीं भेजती हो? तो उसकी मम्मी ने कहा कि मेरी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। मैं रज़ाई सिलती हूँ जिससे महीने में 800 रुपए मिल जाते हैं। अगर सुमन काम करेगी तो मेरी सहायता भी होगी और ससुराल में भी अच्छे से काम करेगी। मैंने सुमन से कहा कि तुम अपना काम जल्दी समाप्त करके खेलने आ जाया करो। इस पर सुमन की माँ मुझे डाँटने लगीं तो मुझे दुःख हुआ कि समाज के लोग अपने बच्चों को खेलने नहीं देते। और बहुत सारे बच्चों को पढ़ने का भी मौक़ा नहीं देते और वे पढ़ नहीं पाते हैं। इससे भविष्य में भारत में तरक्की कैसे होगी? भारत कैसे आगे बढ़ेगा?
- मुझे यह कार्य करने में अच्छा और बुरा दोनों लगा। मैं यह जान पाया कि हमारे गाँव, शहर एवं हमारे समाज में कितने बच्चे शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं? मुझे लगता है कि जो अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजते हैं उनके बारे में मीडिया के माध्यम से सरकार तक बात पहुँचाई जाए। संविधान में यह कहा गया है कि हर बच्चे को शिक्षा का अधिकार है चाहे वे ग़रीब हों या अमीर हों, लड़की हो या लड़का, हर बच्चा शिक्षा प्राप्त कर सकता है। और यह भी कहा जाता है कि जो माँ-बाप अपने बच्चे को स्कूल जाने से रोकते हैं उनके साथ क़ानूनी कार्यवाही भी हो सकती है। परन्तु देखा जा रहा है किसी भी माँ-बाप को क़ानून ने आज तक सज़ा नहीं दी। उनसे घर का सारा काम करवाते हैं ज़्यादातर लड़कियों के साथ ऐसा किया जाता है। जबकि यह सबको पता है कि लड़की पढ़ी-लिखी हो क्योंकि वह जननी है, यदि स्त्री नहीं होगी तो पुरुष पैदा नहीं होंगे।
- मेरे गाँव में ऐसे बच्चे नहीं हैं जिनके बाल अधिकारों का हनन होता है। जो हमारे गाँव के पास दूसरा गाँव है मैं वहाँ गई। वहाँ जाकर हमने लोगों से बातचीत की। वहाँ हमें 3 बच्चे मिले जो पढ़ना तो चाहते हैं पर उनकी आर्थिक स्थिति ख़राब है। पूछने पर पता चला कि उनके पापा नहीं हैं और सिर्फ मम्मी कमाती हैं और बहुत-से छोटे-बड़े भाई-बहन हैं। मुझे यह कार्य करने में तो मज़ा आया पर दुःख हुआ कि समाज में ऐसे बच्चे भी हैं जो पढ़ना तो चाहते हैं, पर उसके बाद भी नहीं पढ़ पा रहे हैं और वे छोटी उम्र में ही काम करने लगे हैं। उनके पास खेलने-कूदने, घूमने-फिरने की आज़ादी नहीं है।
- मुझे यह कार्य करने में अच्छा लगा क्योंकि मुझे बहुत-से लोगों से बात करने का मौक़ा मिला और जानकारी भी मिली। मुझे यह अच्छा नहीं लगा कि आज भी बहुत से बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हैं।

इस प्रोजेक्ट को करते हुए बच्चों ने बहुत कुछ सीखा :

- समाज में कई ऐसे बच्चे भी हैं जो स्कूल नहीं जाना चाहते हैं और उनके माता-पिता भी उन्हें स्कूल नहीं भेजते हैं। बच्चे इधर-उधर दुकानों में, होटलों में काम करते हैं और जो कमाते हैं उसे उल्टी-सीधी जगह ख़र्च कर देते हैं और नशे के शिकार हो जाते हैं।
- जो बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं उनकी समस्याएँ सुनने का मौक़ा मिला। कुछ घरों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। मैंने उन्हें सरकारी स्कूल में पढ़ने की सलाह दी जहाँ पर बिना फीस के पढ़ाई की जा सकती है। माता-पिता को अपने बच्चों को स्कूल ज़रूर भेजना चाहिए जिससे सरकार द्वारा चलाए गए अभियान को सफल बनाया जा सके।
- समाज में कुछ लोग हैं जो कि छोटी उम्र में ही अपने बच्चों की शादी करवा देते हैं और कुछ माँ-बाप अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजते हैं और मज़दूरी करवाते हैं।
- मैंने दो भाइयों को देखा और उनके पास जाने की कोशिश की पर जा नहीं सका तो एक दिन मैंने अपने दोस्त को भेजा। वह उनके पास जाकर पूछने लगा कि तुम्हारा नाम क्या है उसने मेरे दोस्त को बिहारी भाषा में बताया। मेरा दोस्त मेरे पास आया और बोला कि उसकी भाषा समझ

में नहीं आ रही है। मैं उन दोनों भाइयों को देखता रहा। मैंने देखा कि वे दोनों एक दुकान में रहते हैं। पहला भाई हमारे पास की दुकान में काम करता है तथा दूसरा भाई लोहे की चीज़ें बनने वाली दुकान में काम करता है।

बच्चों के सुझाव

- देश की तरक़्क़ी के लिए सभी को शिक्षा मिलनी चाहिए।
- जो बच्चे दुकानों, गैराजों में काम करते हैं उनके लिए सामान्य स्कूल से हटकर अलग से पढ़ाने की व्यवस्था हो।
- जिनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है उनके पास कोई दूसरा रास्ता नहीं है, वे क्या करें उनके सामने दो रास्ते होते हैं या तो स्कूल जाएँ या तो काम करें। प्राथमिकता किसे दें? यह बड़ा प्रश्न है पर, आज की ज़रूरत तो अपना जीवन चलाना है। ऐसे मेंइन बच्चों को हॉस्टल में रखकर पढ़ाई के साथ-साथ कुछ काम सिखाया जाए जिससे उनकी आमदनी भी हो और अपने घर वालों की मदद भी कर सकें।
- प्रोजेक्ट कार्य के तौर पर बड़ी कक्षाओं के बच्चों को ऐसे बच्चों को पढ़ाने की ज़िम्मेदारी देनी चाहिए जिससे समाज में वंचित बच्चे भी पढ़ सकें व उसमें समाज का सहयोग भी हो।

निष्कर्ष

इस कार्य को करने के बाद दो बातें सामने आईं। पहला कि बच्चे इस कार्य को करने में आनन्द का अनुभव कर रहे थे और उनको यह कार्य करने में अच्छा लगा। उसका कारण यह भी रहा कि वे घर से बाहर निकले और लोगों से बातचीत की जिससे उनके अन्दर आत्मविश्वास की भावना आई और वे समाज के वास्तविक रूप को नजदीक से समझ पाए। यदि इस तरह के अनुभव उन्हें नहीं दिए जाते तो वे सिर्फ़ किताबी बातें तो समझ जाते पर वास्तविकता से अनभिज्ञ रहते। बाल अधिकार एवं शिक्षा के अधिकार को समझने का मौक़ा मिला। साथ ही यह जानने का भी कि सरकारी कार्य, नियमों को लागू करने में किस-किस तरह की कमी रह जाती है,अभिभावक इन बातों को समझ नहीं पाते हैं और अपने थोड़े से लालच के कारण अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजते हैं। साथ ही वे दुकानदार जो कि ऐसे बच्चों को अपने यहाँ काम देते हैं वे भी नियमों को अनदेखा करते हैं और छोटे बच्चों से काम करवाते हैं। यद्यपि इसके अनेक पहलू हो सकते हैं जिसको सोचना व समझना चाहिए कि यदि वे इन्हे काम में न रखें तो उनके सामने खाने के भी लाले पड़ सकते हैं।

दूसरा कि वे समस्यों को कैसे सुलझाएँ इसके लिए भी मौक़े मिले। इसके लिए उनका अनुभव काम आया कि किस तरह की समस्याएँ हैं और इसे कैसे बेहतर ढंग से सुलझाया जा सके इसके लिए बच्चों को एक मौका मिला, जहाँ वे अपनी बात को बेबाक़ी के साथ रख पाए बिना इस चिन्ता के कि उनकी बातों को कोई सुनेगा या नहीं। लेकिन कुछ सुझाव वाकई बेहतर हैं जैसे, मीडिया के द्वारा अपनी बात को सरकार तक पहुँचाना और प्रोजेक्ट कार्य के तौर पर बड़े बच्चों को पढ़ाने का सुझाव। जो बच्चे काम में लगे हैं उनके लिए अलग से हॉस्टल की संकल्पना जहाँ रहकर पढ़ाई के साथ-साथ उत्पादन वाले कार्य को करना, जिससे उनकी आमदनी भी हो और उनकी आर्थिक स्थिति में कुछ मदद मिल सके।

साहबुद्दीन अंसारी अज़ीम प्रेमजी स्कूल, दिनेशपुर, उधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड में शिक्षक हैं। वे 5 साल से अज़ीम प्रेमजी स्कूल में अध्यापन कर रहे हैं। उसके पहले 3 साल तक अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में मूल्यांकन के काम से जुड़े रहे हैं। 10 साल खाद्य उद्योग में भी काम किया है। वर्तमान में वे उच्च प्राथमिक कक्षाओं में सामाजिक विज्ञान और प्राथमिक कक्षाओं में अन्य विषय पढ़ाते हैं। उनके पास शिक्षा में स्नातक की डिग्री और राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र और शिक्षा में स्नातकोत्तर डिग्री है। उनसे sahabuddin.ansari@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

बच्चों के व्यवहार पर चिन्तन

शिप्रा अग्रवाल

मैं 2012 से अज़ीम प्रेमजी स्कूल दिनेशपुर, उत्तराखण्ड में अध्यापिका के रूप में काम कर रही हूँ तथा कक्षा में नियमित रूप से व्यवहार को लेकर बातचीत करती हूँ। इस समय मैं कक्षा 4 की कक्षा अध्यापिका हूँ। कक्षा में पाँच बच्चे ऐसे हैं जो कि शिक्षिका की अनुपस्थिति में दूसरे बच्चों को अपशब्द बोलते हैं, गाली देते हैं तथा नाम बिगाड़ते हैं। इस कारण मारपीट की नौबत भी आ जाती है। इससे कक्षा का संचालन एवं शिक्षण कार्य बाधित होता है। कभी-कभी तो कक्षा का काफ़ी समय उनके झगड़े सुलझाने में व्यतीत हो जाता है।

केस स्टडी

मेरी कक्षा में पाँच बच्चे ऐसे थे जो किसी-न-किसी कारण झगड़ा करते या फिर गाली बोलते। इन बच्चों के व्यवहार एवं बोलचाल में अधिक मात्रा में अपशब्द प्रयुक्त होते थे। मैंने इन बच्चों के साथ काम करने का सोचा। वैसे तो कहते हैं -

- शारीरिक दण्ड सबसे आसान तरीक़ा होता है जिससे बच्चों को काबू में किया जा सकता था। लेकिन बच्चों को शारीरिक दण्ड देने से उनकी पढ़ाई पर असर पड़ता। उनका ध्यान अपनी तकलीफ पर जाता व मुझसे भयभीत होने की सम्भावना का एहसास भी था।
- एक विचार आया कि इन बच्चों को कक्षा के बाहर कर दूँ। पर इससे उनकी पढ़ाई प्रभावित होती और यह सम्भावना अधिक थी कि उन्हें बाहर रहने में मज़ा आने लगता व समस्या कम होने के बजाए बढ़ सकती थी।
- उनके अभिभावकों को बुलाकर उनसे बातचीत की जाए। इससे स्कूल में बच्चों की नियमित उपस्थिति बनी रहेगी। या उनके मन में स्कूल के प्रति बगैर डर के उपस्थिति होगी। अन्त में मैंने उन बच्चों से कक्षा के बाद अलग से बातचीत करने का विचार मन में बनाया।

कार्य योजना : मैंने इस समस्या को कम करने के लिए कक्षा के बाद अलग से, नियमित रूप से इन पाँचों बच्चों के साथ बात करने की योजना बनाई। ऐसा मैंने ये सोचकर किया जिससे बाक़ी तरीक़ों में उन बच्चों की पढ़ाई प्रभावित न हो।

प्रक्रिया : मैंने इन पाँच बच्चों के साथ सामान्य बात करनी शुरू की। मैंने बच्चों से पूछा कि आप स्कूल में क्या-क्या करते हो? सभी बच्चों के उत्तर अलग-अलग थे।

एक बच्चे ने कहा, "पढ़ाई करते हैं।"

एक बच्चे ने कहा, "खेलते हैं।"

एक ने कहा, "खाना भी खाते हैं।"

फिर मैंने पूछा, "आपको स्कूल में क्या करना सबसे अच्छा लगता है?"

सभी ने एक साथ कहा, "खेलना अच्छा लगता है।"

फिर मैंने पूछा, "क्या कोई आपको अपशब्द भी बोलता है?" मेरा यह पूछना था कि सभी ने एक साथ अपने-अपने अनुभव शेयर करने शुरू कर दिए।

एक ने कहा कि प्रिया हमें गाली देती है।

दूसरे ने कहा कि कई बच्चे मेरा नाम बिगाड़कर बोलते हैं।

तो मैंने पूछा, "तुम भी उनको जवाब देते होगे?" तो सभी ने "हाँ" कहकर जवाब दिया।

मैंने कहा कि उस समय जवाब देने की बजाए चुप रह सकते हो? तो सभी ने कहा, "हाँ, रह सकते हैं।"

मैंने कहा, "हम स्कूल में पढ़ाई के साथ-साथ अच्छी बातें तथा अच्छा व्यवहार सीखने भी आते हैं। यदि हम दूसरों द्वारा बोले गए अपशब्द का जवाब न दें तो क्या लड़ाई कम हो सकती है?" तो सभी ने कहा "हाँ।" मैंने कहा, "यदि आप सहमत न हो तो बगैर संकोच के बात कर सकते हैं क्योंकि अपने बारे में अपशब्द सुनना किसी को भी अच्छा नहीं लगेगा और उस समय चुप रहना बहुत मुश्किल है। क्या तुम सब यह कर पाओगे?" तो सभी ने कहा, "हाँ, कर पाएँगे।" मैंने कहा, "ठीक है, कल बात करेंगे कि कितने बच्चे दूसरों द्वारा कही गई ग़लत बातों व अपशब्दों का जवाब नहीं देंगे।"

अगले दिन बच्चों ने अपने-अपने अनुभव शेयर किए। किसी ने कहा कि उसने मुझे ऐसा कहा पर मैं चुप रहा और घर चला आया। एक ने कहा कि जब मैं घर के बाहर खेलने के लिए गई तो उसने मुझे गाली दी पर मैं चुप रही। इसके बाद मैंने कहा, "क्या तुम में से भी कोई किसी को अपशब्द बोलता है?" तो सब एक-दूसरे का नाम लेने लगे कि यह गाली देता है, यह अपशब्द बोलता है। मैंने कहा, "केवल अपने बारे में बात करें, दूसरे के बारे में न बताएँ।" फिर सबने कहा कि कभी-कभी बोलते हैं। मैंने कहा कि आगे से क्या आप ध्यान रख सकते

हैं कि अपशब्द न बोलें? सबने अपनी सहमति प्रदर्शित की व कहा कि हम ध्यान रखेंगे तथा अपशब्द नहीं बोलेंगे।

आज दिनांक 5 नवम्बर 2016 को दीपावली की छुट्टियों के बाद बच्चे स्कूल आए थे। उस दिन इन पाँच बच्चों में से तीन उपस्थित थे। मैंने कक्षा से अलग इन तीन बच्चों से बात की। मैंने बच्चों से पूछा, "छुट्टियाँ कैसे बिताईं?" इस बात से शुरुआत की जिससे बच्चे बात करने में सहज हो सकें। सबने अपने-अपने अनुभव शेयर किए। फिर मुद्दे को लेकर बात की। सबने सहमति जाहिर की कि हम न तो अपशब्द बोलते हैं और यदि कोई बोलता है तो उसको जवाब नहीं देते। "लेकिन कक्षा में बोलते समय क्या अपनी बारी का इन्तजार करते हो?" उस पर जवाब था – "ऐसा नहीं कर पाते, कोशिश करते हैं पर भूल जाते हैं।" मैंने कहा, "ठीक है, जैसे और बातों का ध्यान रहता है इसका भी ध्यान रहेगा और फिर आदत हो जाएगी।"

सबने कहा कि हम कोशिश करेंगे। अभी भी उनके इस व्यवहार में कोई अन्तर नहीं दिख रहा था। मेरे साथ तो सहजता से बात करते थे परन्तु और जगह से अभी भी व्यवहार सन्तोषजनक नहीं दिख रहा था। मैं समुदाय भ्रमण में राजकुमार (काल्पनिक नाम) के घर गई। जिस टोन में मैंने उसको बात करते देखा मुझे अच्छा नहीं लगा। मैंने इन बच्चों से बात करते हुए भाषा की टोन के बारे में बात की, जिस पर सबकी सहमति थी कि हमें अपने से बड़ों-छोटों व सहपाठियों के साथ किस टोन में बोलना चाहिए। व्यवहार में परिवर्तन आसान नहीं है। उसके लिए लगातार बात व ऐसे वातावरण की आवश्यकता है। वातावरण देना तो हमारे हाथ में नहीं है। उसका प्रभाव उसके समुदाय, सहपाठियों-मित्रों का होगा। पर, बातचीत से जितना सम्भव हो पाए, मैं कोशिश करती हूँ।

उसके बाद मैं रिपोर्ट-कार्ड लिखने में व्यस्त होने के कारण कई दिन बात नहीं कर पाई। इस कारण उनका व्यवहार फिर पहले जैसा नजर आने लगा। मैंने सोचा, बात करना छोड़ने से पहले की गई बात भी बेकार हो जाएगी। जैसे भी समय मिले बात करनी चाहिए। चाहे वह समय लंच ब्रेक में मिले या किसी और समय। बात करना नहीं छोड़ना चाहिए।

15 दिसम्बर 2016 को मैंने कमल, राजकुमार, विकास, कविता व प्रेमा (काल्पनिक नाम) को बुलाया। मेरा काफ़ी समय उन बच्चों की बातें सुनने में चला गया जो वे मुझसे करना चाहते थे। सही भी हुआ कम-से-कम वे बच्चे अपनी बात कर पाए। पर बातों में अधिकतर दूसरे बच्चों की शिकायतें ही थीं। धीरे-धीरे पता चला कि उन शिकायतों का उन्होंने पहले ही रेस्पोंस दे रखा था। जैसे इसने मुझे ऐसा कहा इसलिए मैंने उसका जवाब दिया। उसने वैसा कहा तथा मैंने ऐसा जवाब दिया इत्यादि। मैंने केवल एक बात बोली, "जवाब देने की अपेक्षा जब कोई ऐसा कहता है तो उसे दिनांक व समय डालकर लिख लो। जब भी बात करते हैं तो केवल अपने बारे में बात करें कि तुम दूसरों के साथ कैसा व्यवहार कर सके।" बच्चों के साथ बात करने से बच्चों के व्यवहार में अन्तर तो दिखाई दे रहा है परन्तु व्यवहार में यह बदलाव जब तक बात की जाती, तब तक ही दिखाई देता है। बातचीत बन्द करने से फिर पहले जैसा ही व्यवहार दिखाई देने लगता है।

18 जनवरी, 2017 को शिक्षक साथियों के साथ मीटिंग के दौरान जब बच्चों से व्यवहार पर बातचीत की शेयरिंग हुई तो मुझे पता चला कि राजकुमार (काल्पनिक नाम), जो कि पहले अँग्रेज़ी का एक शब्द पढ़ने से कतराता था, आज खुद अँग्रेज़ी की कहानी की किताब पढ़ने के लिए माँगता है। पता नहीं उसमें यह बदलाव कैसे आया, लेकिन यह बदलाव आया है। दूसरे शिक्षक ने कविता (काल्पनिक नाम) के बारे में बताया गया कि वह खेल खेलने के लिए पहले तैयार ही नहीं होती थी लेकिन अब खुद आकर लीडरशिप लेना चाहती है। खेल दिवस के दौरान भी देखा गया कि उसने फुटबॉल मैच में कप्तान की भूमिका में कार्य किया व अपनी टीम को विजयी बनाया। बात करने के अन्दाज़ में भी बदलाव नज़र आता है।

23 जनवरी, 2017 को कई दिन बाद मैं बच्चों से मिल पाई। पहले सर्दियों का अवकाश चल रहा था। फिर डीएम द्वारा घोषित अवकाश। उसके बाद दो दिन मैं निजी कार्य से छुट्टी पर थी। इसलिए मैंने आज बच्चों से बात करने की योजना बनाई। लेकिन स्कूल में पूरे पीरियड्स पढ़ाने व लंच समय में ड्यूटी होने के कारण मैं बात नहीं कर सकी। मैंने अपनी परेशानी स्कूल प्रधानाचार्य जी के समक्ष रखी। उनका कहना था कि लंच उन बच्चों के साथ किया जा सकता है। मुझे भी सुझाव सही लगा। नहीं तो बात करना छूट जाएगा। इससे बेहतर है थोड़ी देर के लिए ही सही पर बच्चे अपनी बात कर पाएँ। अगले दिन मैंने लंच के समय बच्चों से बात की। लंच करने के बाद जब इस बारे में प्रधानाचार्य जी से बात हुई तो उनका सुझाव था कि औपचारिक बात की अपेक्षा अनौपचारिक बात ज़्यादा बेहतर होगी क्योंकि उसमें बच्चे बिना किसी झिझक के बात कर सकते हैं। उसमें शिक्षक व विद्यार्थी की हेरारकी नहीं रहती। लेकिन मेरा अनुभव कुछ अलग ही था। मुझे अलग बैठकर बात करना ज़्यादा बेहतर लग रहा था। शायद क्योंकि उसमें मैं अधिक सहज थी। लेकिन बच्चे किसमें ज़्यादा सहज होंगे ये बच्चे ही बेहतर बता पाएँगे।

अगले दिन मैंने बातचीत में बच्चों से यही जानने का प्रयास किया। लेकिन इस दिन इनमें से तीन बच्चे ही उपस्थित थे जिसमें तीनों के अलग-अलग मत थे। एक बोला, "लंच के समय।" दूसरे ने कहा, "यहाँ डिस्टर्ब होता है, पहले जहाँ बात

करते थे वहीं पर चलते हैं।" तीसरे ने कहा, "कहीं भी बैठ सकते हैं।"

मुझे अलग बैठकर बात करना इसलिए ज़्यादा बेहतर लगा क्योंकि उसमें डिस्टर्बेंस नहीं था। बाहर बच्चे कभी आसमान में हेलीकॉप्टर के बारे में, कभी दूसरी कक्षा के खेल देखने में व्यस्त हो जाते। फिर उनका ध्यान अपनी ओर लाना होता। इसी तरह खाना खाने के बाद बाहर फील्ड में बैठकर बात करने में भी डिस्टर्बेंस हुआ। बात के दौरान कभी एक क्लास के बच्चे तो कभी दूसरी क्लास के बच्चे अपनी-अपनी शिकायतें लेकर आने लगे। इस दौरान कुछ ही बात हो पाई। बात का लिंक टूट जाने पर व्यवहार पहले जैसा दिखने लगता है। कक्षा में ढंग से न बैठना, दूसरे बच्चों को मारना, कक्षा में बीच-बीच में टॉपिक से अलग बात बोलना। इन बातों को ध्यान में लाया। इसके अतिरिक्त बच्चों ने अपनी बातें शेयर कीं कि आज हमने आपको स्कूटी चलाते हुए देखा। तुषार बोला, "मैं भी स्कूटी चलाना जानता हूँ।" सौरभ ने कहा, "मुझे भी स्कूटी चलाना आता है।" रश्मि बोली, "अगले साल तक मुझे भी आ जाएगी।" तब तक लंच ब्रेक का समय समाप्त हो गया। अगले दिन लंच ब्रेक में लंच करने के बाद फील्ड से अलग एक कमरे में बैठे। थोड़ी बात के उपरान्त मैंने बच्चों से जानना चाहा कि उन्हें कहाँ बैठकर बात करना अच्छा लगता है? तो सभी ने कहा, "फील्ड से अलग बैठकर क्योंकि यहाँ दूसरे बच्चे डिस्टर्ब नहीं करते।" आज पाँच में से चार बच्चे उपस्थित थे जिनमें से दो बच्चों से एक जगह बैठा नहीं जा रहा था। एक तो मुझे लगता है कि इस कमरे में चेयर्स ज़्यादा आरामदेय थीं। कक्षा में वुडेन चेयर्स हैं या उनमें एकाग्रता की कमी के कारण भी एक जगह थोड़ी देर तक बैठने में परेशानी होती है। कक्षा में भी उन्हें एक जगह बैठने के लिए बार-बार आग्रह करना पड़ता है। मैंने इस ओर उनका ध्यान आकर्षित किया व इसमें सुधार करने के लिए प्रोत्साहित किया।

4 फरवरी, 2017 को मैंने इन बच्चों से बात की। बच्चे अलग से बात करने में सहज होकर बात कर पाते हैं। ये स्वयं बच्चों ने बताया कि सबके सामने बोलने में शर्म आती है। सही भी है एक वयस्क होने के नाते भी जितना कम्फर्ट हम अनौपचारिक चर्चा में रहते हैं उतना औपचारिक में नहीं। जैसा कि पिछली चर्चा में आया था कि जब बड़े समूह में बात हो रही हो तो एक जगह बैठकर बात सुननी चाहिए, उसमें सुधार नहीं है। सौरभ ने कहा, "मैडम ध्यान नहीं रहता।" और मुझे भी लगता है कि आदत में बदलाव एक बार बोल देने से नहीं होगा। बार-बार उस ओर ध्यान दिलाना पड़ेगा। तुषार ने बोला कि असेंबली के समय कक्षा पाँच का नारायण मेरा नाम बिगाड़ रहा था। मैंने उसका जवाब नहीं दिया। मैंने कहा, "तुमने ठीक किया। उसके कक्षा अध्यापक को बताना चाहिए। वह उससे बात करेंगे। इससे पहले कक्षा चार की कृष्णा के साथ तुम्हारी लड़ाई इसलिए बढ़ी कि तुमने उसका जवाब दिया व दोनों ने एक-दूसरे को मारा और उसके पैर में चोट लगी। ऐसा नहीं होना चाहिए।" इसी प्रकार थोड़ी देर बात के बाद हम अपनी-अपनी कक्षाओं में चले गए।

निष्कर्ष : इस प्रकार सत्र की समाप्ति तक मैंने इन बच्चों के व्यवहार को लेकर काम किया व कई बार व्यवहार में बदलाव देखने को मिला। इन बच्चों के व्यवहार में कुछ तो परिवर्तन दिखता है। लेकिन आगे भी अभी और काम करने की आवश्यकता है।

शिप्रा अग्रवाल अज़ीम प्रेमजी स्कूल, दिनेशपुर, उत्तराखण्ड में शिक्षिका हैं। वे 1997 से शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। उनसे shipra.agarwal@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

जब प्रश्न, उत्तर बन जाते हैं

श्री सिंह कुरियल

प्रश्न एक ऐसा ज़रिया है जो अवधारणाओं, परिस्थितियों और विचारों की हमारी समझ पर सवाल उठाता है। और इस बात पर कोई सवाल नहीं उठाया जा सकता। इस लेख में यही बताया गया है कि किंज़म खम्पा नामक एक शिक्षिका ने किस तरह से बच्चों को प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने के लिए प्रेरित किया।

किंज़म अँग्रेज़ी भाषा की शिक्षिका हैं जो पाँच साल से शिक्षण कार्य कर रही हैं और इन दिनों उत्तरकाशी के जीआईसी पुजर गाँव में कार्यरत हैं। उन्हें इस निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए किसी भारी-भरकम अकादमिक शोध पत्र को पढ़ने की ज़रूरत नहीं पड़ी। किंज़म में इस बात का जुनून था कि वे बच्चों को न केवल अँग्रेज़ी भाषा में बल्कि स्कूल के अन्दर और बाहर के सभी विषयों में कुशल बनाएँ और इसीलिए उन्होंने जल्दी ही प्रश्नों की शक्ति को पहचान लिया।

किंज़म की कक्षा में बच्चे रटने के अभ्यस्त थे। तो अकादमिक सत्र के शुरू के कुछ हफ़्तों तक तो वे यह देखकर बहुत ख़ुश हुईं कि बच्चे पाठों का जवाब कितनी अच्छी तरह से दे रहे हैं। लेकिन जल्द ही उनका उत्साह निराशा में तब्दील हो गया, जब उन्हें यह पता लगा कि बच्चे पाठ में दिए गए सरल शब्दों के अर्थ, उपयोग और अनुप्रयोग को नहीं समझते थे। उन्हें इस बात का एहसास भी हुआ कि पाठ्यपुस्तक तो अधिगम की प्रक्रिया को जारी रखने का साधन मात्र थी और उसे भी पूर्णतया आदर्श साधन नहीं माना जा सकता। उसके बाद उन्होंने कक्षा में प्रयोग करने शुरू किए। उन्होंने पाठ्यपुस्तक बन्द कर दी जिसे देखकर बच्चे हक्का-बक्का रह गए। और उन्होंने बच्चों से भी ऐसा ही करने को कहा।

पाठ्यपुस्तक का हर पाठ किसी थीम, विचार और/या धारणा का सूचक मात्र है। एक बार जब वह मूल विचार बच्चे तक पहुँच जाता है और वे उसे आत्मसात कर लेते हैं तो सब कुछ समझ में आ जाता है। और किंज़म ने यहीं से शुरुआत की।

उन्होंने कक्षा में अनेक बातों पर चर्चा शुरू की। फिर तो कक्षा में हर तरह के विषय, विचार और ख़्याल प्रवाहित होने लगे। बच्चों में सोच-विचार की प्रक्रियाओं को उजागर करने में बेशक उन्हें समय लगा लेकिन एक बार जब बच्चे गम्भीर रूप से विचार करने के अभ्यस्त हो गए तो बातचीत में रवानी आ गई और विचार फलने-फूलने लगे। सच पूछा जाए तो बच्चे शिक्षक से बात करने के आदी नहीं थे। इसके पहले उनसे सिर्फ़ बात की जाती थी, उन्हें कभी सुना नहीं जाता था। अब किंज़म ने अपना अकादमिक साल बातचीत के पाठ्यक्रम के साथ शुरू किया।

जब बच्चे अपने विचार प्रकट करने में सहजता महसूस करने लगे तो किंज़म ने प्रश्नों का खेल शुरू किया। पहले उन्होंने एक विषय दिया, उस पर चर्चा शुरू हुई, विचारों ने ठोस रूप लिया और तब उन विचारों पर सवाल किए गए। वे जानती थीं कि विचारों के बारे में यह पूछताछ बहुत नरमी से करनी चाहिए अन्यथा बच्चे फिर अपने में सिमट जाएँगे, वह बिलकुल नहीं चाहती थीं कि ऐसा हो। क्योंकि अगर ऐसा होता तो बच्चे समीक्षात्मक चिन्तन नहीं करते। इसलिए कभी-कभी एक सप्ताह या पूरा महीना किसी विशेष चर्चा से सम्बन्धित ऐसे प्रश्नों को चुनने में लग जाता जो अन्ततः पाठ्यपुस्तक के पाठों के मूल विचार तक ले जाएँ। इसका नतीज़ा यह हुआ कि जब बच्चे पाठ पढ़ना शुरू करते तो उसके पहले ही वे एक ऐसी तार्किक समझ से लैस हो गए होते थे जो बड़ी होशियारी से चुने गए प्रश्नों की झड़ी का सामना कर चुकी थी।

बच्चों को शिक्षक एवं एक-दूसरे से सवाल करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। किंज़म का दृढ़ विश्वास है कि एक ऐसा सकारात्मक वातावरण बनाया जाना चाहिए जहाँ हर बच्चे की आवाज़ सुनी जाए और उसका सम्मान किया जाए।

धीरे-धीरे किंज़म समझ गईं कि अपने प्रश्नों के ख़ज़ाने के रूप में उन्हें एक शक्तिशाली हथियार मिल गया है। उन्होंने यह भी पाया कि पाठ्यपुस्तक में आमतौर पर ऐसे प्रश्न दिए जाते हैं जिनका उत्तर हाँ या नहीं में होता है (क्लोज़-एंड प्रश्न)। ऐसे प्रश्न समझ विकसित करने में सहायक नहीं होते। इनसे रट कर सीखने को प्रोत्साहन मिलता है और वह बिलकुल नहीं चाहती थीं कि ऐसा हो। उन्होंने कड़ी मेहनत करके प्रत्येक पाठ के लिए अपने ही प्रश्नों की सूची तैयार की। ये प्रश्न बच्चों की समझ का परीक्षण करते थे, बच्चों को पाठ से परे जाकर सोचने के लिए प्रोत्साहित करते थे और पाठ को बच्चे के सन्दर्भ से जोड़ते थे। पहली बार ऐसा हुआ कि जब प्रश्न चिह्न दोस्त बन गए!

इसके अलावा उन्होंने शुरुआती प्रश्न आसान ही बनाए और फिर कठिनाई के विभिन्न स्तरों वाले प्रश्न बनाए। इससे विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक क्षमता के इस्तेमाल पर भी ज़ोर पड़ा। अनजाने में ही सही लेकिन वास्तव में किंज़म ब्लूम वर्गीकरण के अनुसार कार्य कर रही थीं और बच्चों को ज्ञान, समझ, उपयोग, विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन जैसे साधनों से लैस करने की कोशिश कर रही थीं।

किंज़म जो कुछ कर रही हैं उसे लेकर उनके मन में यह बात स्पष्ट है कि जब बच्चे पाठ समझ लेंगे तो वे अँग्रेज़ी में पढ़ने (अर्थ समझते हुए),लिखने (मौलिक रूप से) और बोलने (बिना झिझके) में भी सक्षम हो जाएँगे।

वे मानती हैं कि प्रश्नों की वजह से बच्चों में समीक्षात्मक चिन्तन और बेहतर सम्प्रेषण कौशल का विकास हुआ है तथा उनके रचनात्मक कौशल में संवर्धन हुआ है। साथ ही वे अच्छे श्रोता भी बन गए हैं और यह सारी बातें उनकी कक्षा में साफ़ नज़र आती हैं जहाँ बच्चे आत्मविश्वास के साथ बातें करते हैं और प्रश्न पूछने से डरते नहीं।

हो सकता है कि किंज़म अपना पाठ्यक्रम समय पर समाप्त न कर पाएँ, लेकिन वे जानती हैं कि उनके बच्चे यह ज़रूर सीख जाएँगे कि तर्कसंगत तरीक़े से सवाल कैसे करें और यही बात उनके लिए सबसे बड़ा इनाम है।

यह लेख टीचर प्लस, मार्च 2018 के अंक में भी प्रकाशित हुआ है। (http://www.teacherplus.org/ profile/ when-questions-turn-into-answers)

श्री सिंह कुरियल अँग्रेज़ी के स्रोत व्यक्ति के रूप में कार्यरत हैं और उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड के अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में विषय आधारित शिक्षक-प्रशिक्षण में मदद करती हैं। वे बेहद गम्भीरता के साथ सरकारी स्कूलों का दौरा करती हैं और ज़मीनी स्तर पर द्वितीय भाषा अर्जन/ सीखने विशेष रूप से अँग्रेज़ी, के बारे में अपनी समझ को बेहतर बनाने का प्रयास करती हैं। उनसे shree.kuriyal@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल

सीखने में कठिनाई महसूस करने वाले विद्यार्थियों को समझ के साथ पढ़ने में सहायता देने के लिए पाठ का अनुकूलन

वीना वेंकटरामू, श्वेता चन्द्रशेखर, नेहा पन्त

जब आप गूगल पर पठन-बोध या समझ के साथ पढ़ने से सम्बन्धित वर्कशीट ढूँढ़ते हैं तो आपको ढेर सारे ऐसे अनुच्छेद मिलते हैं जिनके अन्त में प्रश्न दिए होते हैं। काफ़ी जानी-पहचानी सी बात लगती है न? अक्सर ऐसा माना जाता है कि पढ़ने की समझ को जानने का एकमात्र तरीक़ा प्रश्न पूछना ही है। अँग्रेज़ी भाषा के सन्दर्भ में तो निश्चित तौर पर यही होता है, सामाजिक विज्ञान में भी शायद ऐसा ही हो, भगवान न करे कि गणित की कक्षा या रसायन शास्त्र के प्रश्नपत्र में भी यही बात देखने को मिले! ख़ैर, अनुच्छेद के अन्त में प्रश्न पूछने के इस तरीक़े का उपयोग अधिकतर समझ के साथ पढ़ने का मूल्यांकन करने के लिए होता है। अगर समझ के साथ पढ़ने को ही ख़ासतौर से पढ़ाया जाए तो? अपने अनुभवों को साझा करने से पहले हम बहुत संक्षेप में समझ के साथ पढ़ने के सन्दर्भ और उसे पढ़ाने के दृष्टिकोणों के बारे में बताना चाहेंगे और उसके बाद इस आलेख के मूल विषय पर बात करेंगे।

समझ के साथ पढ़ना

'पढ़ना व्यक्ति को पूर्ण बनाता है' यह उक्ति आज भी सही है। यह दुनिया विभिन्न स्रोतों से जानकारी लेकर आगे बढ़ती रहती है फिर चाहे वे पुरानी शैली की क़िताबें हों या किंडल। आज के पाठक को इन जटिलताओं का प्रबन्धन करने की आवश्यकता है। भाषा कौशल को अर्जित करने के क्रम में दो बातें हैं - पढ़ना और समझ के साथ पढ़ना तथा यह दोनों मौखिक भाषा और लिखित अभिव्यक्ति के बीच में स्थित हैं। इसे सम्प्रेषण के दो आवश्यक कौशलों, ज्ञान के अर्जन और साक्षरता, के बीच का पुल माना जाता है।

पाठक का लिखित शब्द के साथ एक रिश्ता होता है, इस नाते समझ के साथ पढ़ना एक जटिल प्रक्रिया है। पाठक जो कुछ पढ़ता है उससे गहन अर्थ का निर्माण करता है। यह अर्थ पाठक के पूर्व ज्ञान, अनुभव और पढ़ने के वातावरण से प्रभावित होता है। परिस्थिति सम्बन्धी सन्दर्भ या सेटिंग : चाहे घर हो या कक्षा, पुस्तकालय जैसा शान्त स्थान हो या परीक्षा के दौरान कुछ पढ़ा जा रहा हो, यह सारी बातें इस बात पर प्रभाव डालती हैं कि पढ़ी जाने वाली सामग्री को कैसे समझा जा रहा है। प्रवाह के समान ही समझ के साथ पढ़ने की कुछ पूर्व-आवश्यकताएँ हैं जैसे विकोडन (डिकोडिंग) में स्वचालितता, मुद्रित सामग्री से परिचय और ज्ञान, शब्द-भण्डार कौशल, ध्यान और स्मृति। हालाँकि प्रवाह स्वचालितता से अलग होता है। प्रवाह का अर्थ पढ़ना, सम्बन्ध बैठाना और पाठ्य सामग्री को आसानी से और भाव के साथ पढ़ना है। यहाँ वाइगोत्सकी के अधिगम के सामाजिक निर्माण और सन्दर्भ सम्बन्धी विचारों का उल्लेख करना उचित होगा। वैसे तो समझ के साथ पढ़ना एक व्यक्तिगत गतिविधि है, पर सामाजिक गतिविधि के रूप में इसका संवर्धन किया जा सकता है, जैसे कि कक्षा-कक्ष में जहाँ शिक्षक और विद्यार्थी या फिर माता-पिता या बच्चे एक साथ पढ़ते हैं और चर्चा के माध्यम से अर्थ-निर्माण करते हैं।

पढ़ने की रणनीतियाँ और अधिगम एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं अर्थात अगर कोई शिक्षार्थी किसी पाठ्य या कार्य की विषयवस्तु नहीं समझ पाता तो उसका सीखना असम्भव है। जैसे-जैसे विद्यार्थी अपने स्कूल की पढ़ाई में आगे बढ़ता है, वैसे-वैसे उसकी विषय-सामग्री अधिक जटिल और गहन होती जाती है तथा पढ़ने और सटीकता में कहीं अधिक दक्षता की आवश्यकता होती है। पढ़ने की रणनीतियाँ जितनी अच्छी होंगी और जितनी जल्दी अर्जित की जाएँगी, प्रभावी अधिगम की सम्भावना उतनी ही अधिक होगी। जिन पाठकों को पढ़ने में कठिनाई होती है उन्हें उस पाठ्य सामग्री को समझने में भी दिक्क़त पेश आती है। इसके कई कारण हो सकते हैं जैसे नाना प्रकार के और समृद्ध शब्द-भण्डार की कमी, ध्वन्यात्मक प्रक्रियाओं का अभाव, पाठ्य-बोधन के शिक्षण के लिए पर्याप्त रणनीतियों की कमी, प्रेरणा की कमी और ध्यान का अभाव।

बृन्दावन एजुकेशन ट्रस्ट उन विद्यार्थियों के लिए एक विशेष उपचार केन्द्र है जो अधिगम की गम्भीर एवं विशिष्ट कठिनाइयों, ध्यानाभाव एवं अति-सक्रियता विकार (Attention Deficit Hyperactivity Disorder), स्वलीनता (Autism) के स्पेक्ट्रम पर अति सक्रियता,(high functioning children on Autism Spectrum) स्कूल अस्वीकृति तथा अन्य मनोवैज्ञानिक विकारों से ग्रसित हैं। यहाँ का जूनियर प्रोग्राम प्रासंगिक दायरे और अनुक्रम के अनुसार अकादमिक कौशल विकास और अवधारणा सीखने पर केन्द्रित है। सीनियर प्रोग्राम में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (NIOS) के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं (10वीं और 12वीं कक्षा) के विषयों के शिक्षण पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। पाठ्यचर्या पर आधारित कौशल-विकास जारी रहता है क्योंकि विद्यार्थियों को अकादमिक मुद्दों को लेकर कठिनाइयाँ रहती ही हैं।

परीक्षा पर ध्यान केन्द्रित करने के कारण, बृन्दावन में, समझ

के साथ पढ़ने के शिक्षण पर हर रोज़ बहुत ध्यान दिया जाता है। अकादमिक सन्दर्भ में समझ के साथ पढ़ने को व्यवस्थित तरीक़े से विकसित करने के लिए विशेषतौर पर उसका शिक्षण किया जाना चाहिए। अतः अधिकतर पाठ्य को वर्णनात्मक रूप में बाँटा जाता है। कई सालों के निरन्तर शोध, प्रयत्न-त्रुटि शिक्षण और प्रशिक्षण के बाद, अपने विद्यार्थियों में समझ के साथ पढ़ने की क्षमता बढ़ाने के लिए बृन्दावन में शिक्षण के ठोस तरीक़ों और रणनीतियों का पालन किया जाता है, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं : पूर्व ज्ञान को सक्रिय करना, (ग्राफ़िक ऑर्गनाइज़र), अवधारणा का मानचित्रण (कॉन्सेप्ट मैपिंग), शब्द-जाल आदि।

- प्रश्न पूछना (ब्लूम वर्गीकरण) - ज्ञान, समझ, उपयोग, विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन
- दृश्य छवियाँ बनाना
- संक्षेपण- रिक्त पूर्ति अनुच्छेद
- मेटा-संज्ञानात्मक रणनीतियाँ- स्वयं नियामक जाँच-सूची, पत्रिकाएँ
- पारस्परिक शिक्षण
- तकनीकी सहायता
- पाठ्य संरचना का विश्लेषण- अनुच्छेदों को छोटे टुकड़ों में विभाजित करना, पाठ अनुकूलन

इस लेख का केन्द्रबिन्दु पाठ अनुकूलन है जो हर बच्चे की आवश्यकतानुसार अलग-अलग प्रकार के शिक्षण का ही एक रूप है और यह समझ के साथ पढ़ने का संवर्धन करके अधिगम में सहायता करने का एक साधन है। अधिगम की विभिन्न ज़रूरतों को पूरा करने के लिए यह एक मान्य एवं आवश्यक तरीक़ा है, ख़ासकर ऐसी कक्षाओं में जहाँ विशेष शिक्षा एक ज़रूरत है और बृन्दावन में ऐसी ही शिक्षा दी जाती है। पढ़ना और समझना सिखाने के लिए तीन चरण अपनाए जाते हैं- पूर्व पठन, पठन और पश्च-पठन।

हमारी कक्षा में सामान्यतः आठ बच्चे होते हैं। साठ सामान्य मानसिक क्षमता वाले विद्यार्थियों की तुलना में यह संख्या बहुत छोटी है। लेकिन हर विद्यार्थी की विविध जटिल आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्हें व्यक्तिगत रूप से पढ़ाना होता है और इसके लिए कक्षा छोटी हो तो ठीक रहता है।

पढ़ने और समझ के साथ पढ़ने के सन्दर्भ में अनुकूलन और अनुकूलित पाठ्यों के बीच भ्रमित नहीं होना चाहिए। अनुकूलित पाठ्य में, उदाहरण के लिए टॉलस्टॉय के *वॉर एंड पीस* जैसे ग्रन्थों के प्रारूप को आधिकारिक रूप से बदलकर प्रकाशित करके बेचा जाता है ताकि ऐसी रचनाएँ बच्चों सहित कई लोगों तक पहुँच सकें।

अकादमिक पाठ-अनुकूलन एक रणनीति है, विधि है, एक साधन है, जिसके द्वारा पाठ को संशोधित या रूपान्तरित किया जाता है जिससे कि बेहतर अधिगम हो सके। अनुकूलन तीन क्षेत्रों में हो सकता है और इसे हमने आगे पढ़ने और समझ के साथ पढ़ने के सन्दर्भ में समझाया है।

1. विषयवस्तु : वह वास्तविक गद्यांश जो विद्यार्थी को सीखना है। मुख्य अवधारणाओं और शब्दावली को बरक़रार रखते हुए विषयवस्तु को अनुकूलित किया जा सकता है। इससे विद्यार्थी पर पढ़ने का भार कम हो जाता है। डिस्लेक्सिया वाले विद्यार्थियों के लिए यह विशेष रूप से उपयोगी है। किसी विशिष्ट विद्यार्थी की ज़रूरतों के अनुरूप गद्यांश को और भी अनुकूलित किया जा सकता है।
2. शिक्षण की प्रक्रिया या विद्यार्थियों तक पहुँचना, उन्हें पाठ्य पढ़ाना। इसमें विद्यार्थी पाठ्य के साथ जुड़ता है। समझ के साथ पढ़ना सिखाने के लिए कई अच्छे तरीक़े मौजूद हैं, उनमें तीन चरण वाला तरीक़ा भी काफ़ी अच्छा है- पूर्व पठन, पठन और पश्च-पठन। इसमें उपर्युक्त रणनीतियों के द्वारा अपनी क्षमता का बेहतरीन ढंग से उपयोग करते हुए पाठ्य को समझने में पाठक की मदद की जाती है।
3. परिणाम : पाठ्य का मूल्यांकन जहाँ विद्यार्थी को इस बात का अवसर दिया जाता है कि उसने जो कुछ सीखा है उसका प्रदर्शन करे। पाठ्य का मूल्यांकन करने के लिए कठिनाई के स्तर, व्यक्तिगत या समूह कार्य, अधिगम शैली आदि सभी बातों का अनुकूलन किया जा सकता है।
4. अधिगम का वातावरण : इसमें कक्षा अनुकूलन और प्रबन्धन के भौतिक और भावात्मक पहलू आ जाते हैं। वातावरण का सुरक्षित होना एक बहुत ज़रूरी तत्व है क्योंकि इसी से पाठक पढ़ने के लिए प्रेरित होता है। कक्षा का अनुकूलन करके वहाँ पर एक पठन-कोना बनाया जा सकता है और बैठने की ऐसी व्यवस्था की जा सकती है जो सहयोगी अधिगम को बढ़ावा दे।
5. यहाँ पर शिक्षण को अनुकूलित करने के दो नमूने दिए गए हैं। आशा है कि हम समझ के साथ पढ़ने और अधिगम में मदद करने वाली शिक्षण प्रक्रिया व रणनीतियों को सफलतापूर्वक प्रदर्शित कर पाएँगे। पहला नमूना एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक से, पूर्व-राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय स्तर (मोटेतौर पर कक्षा 9) के लिए, अनुकूलित किया गया है। दूसरा नमूना अँग्रेज़ी में जूनियर राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय (कक्षा 10) के लिए है।

नमूना 1 : थार मरुस्थल/रेगिस्तान

थार मरुस्थल को विशाल भारतीय मरुस्थल भी कहा जाता है।

भारतीय मरुस्थल अरावली पर्वत के पश्चिमी किनारे पर स्थित है। इसमें राजस्थान और गुजरात राज्य के कुछ भाग भी शामिल हैं। यह अर्धचन्द्राकार रेत के टीलों (जिन्हें बारचन्स कहते हैं) से ढका हुआ एक तरंगित मैदान है।

शब्दकोश

1. लहरदार – ऊपर और नीचे,सागर की तरंगों की तरह लहरदार रूप
2. अर्धचन्द्राकार –

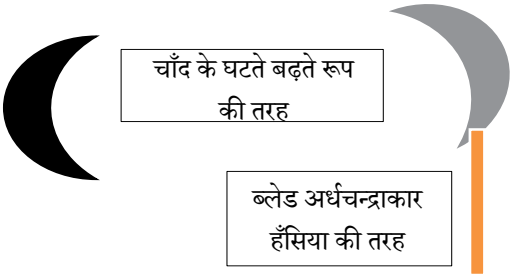

इस क्षेत्र में वार्षिक वर्षा की दर बहुत कम है 150 मि.मी. से भी कम। यहाँ की जलवायु शुष्क है और वनस्पति भी कम है। बारिश के मौसम में बरसाती नाले दिखाई देते हैं लेकिन जल्द ही वे रेत में गायब हो जाते हैं क्योंकि उनमें समुद्र तक पहुँचने के लिए पर्याप्त पानी नहीं होता। इस क्षेत्र में लूनी एकमात्र बड़ी नदी है।

चित्र- 2 अर्धचन्द्राकार रेत के टीले- बारचन्स

चित्र- 3 लहरदार रेतीले मैदान

शब्दकोश

शुष्क*- बहुत कम वर्षा, सूखा, बहुत कम वनस्पति*

वनस्पति*- किसी विशेष क्षेत्र में जो कुछ प्राकृतिक रूप से उगता है; खेती के रूप में नहीं*

रेगिस्तानी वनस्पति

अरावली की अवस्थिति के कारण वर्षा वाहक हवाएँ उसके पीछे चली जाती हैं। अगर अरावली की अवस्थिति अलग होती (**चित्र- 5** देखिए) तो यहाँ भारी वर्षा की सम्भावना होती।

शिक्षक चित्र बनाते हैं और बच्चों से भी चित्र बनवाते हैं ताकि समझने में सहायता मिले। **चित्र- 5** अवधारणा की समझ को मज़बूत करने में सहायक होगा।

पाठ योजना : थार मरुस्थल

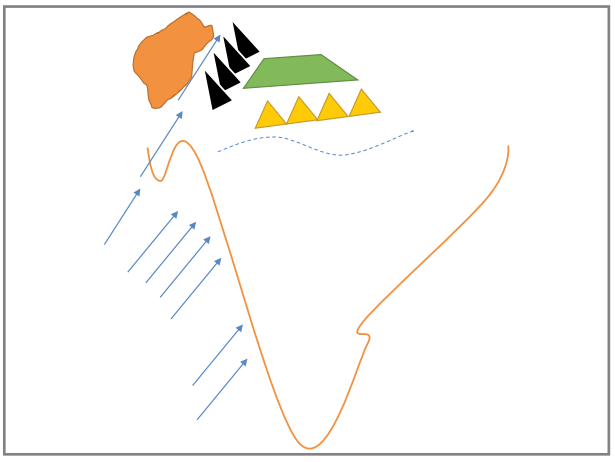

चित्र- 4

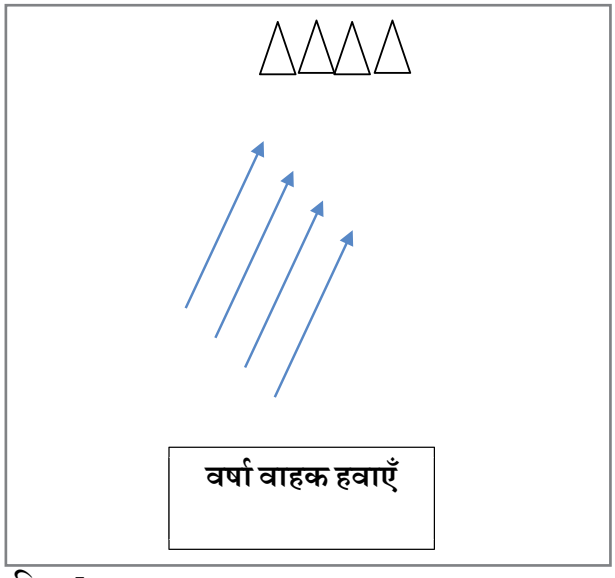

चित्र- 5

पाठ योजना : थार मरुस्थल

उद्देश्य	गतिविधि और रणनीति	आवश्यकतानुसार बदलाव	सामग्री	मूल्यांकन
पूर्व-पठन : रेगिस्तान के पूर्व-ज्ञान का स्थापन	**रणनीति :** विचार-मन्थन **गतिविधि :** शब्द सम्बन्ध - उन शब्दों के बारे में सोचिए जिन्हें आप रेगिस्तान के साथ जोड़ेंगे। **कौशल विकास :** शब्द भण्डार पठन अवबोधन	उन लोगों को संकेत दिया गया जिन्हें इसकी आवश्यकता है।	श्यामपट्ट जिस पर या तो शिक्षक द्वारा या फिर विद्यार्थी द्वारा शब्द लिखे गए हों।	श्यामपट्ट पर दिए शब्दों की सहायता से रेगिस्तान का चित्र बनाइए। अथवा रेगिस्तान का संक्षिप्त विवरण लिखिए (जो चित्र नहीं बना सकते उनके लिए)।
पठन के दौरान की जाने वाली गतिविधि - थार मरुस्थल की अवस्थिति के बारे में ज्ञान प्राप्त करना इस बात को समझना कि यह स्थान रेगिस्तान क्यों है?	**रणनीति :** दृश्य-सहायक सामग्री की सहायता से शिक्षक द्वारा स्पष्टीकरण; पाठ्य को विभाजित करना - (तीन अनुच्छेद) विद्यार्थी पाठ का भाग पढ़ते हैं। समझ के लिए मौखिक प्रश्न पूछे जाते हैं।	मुख्य शब्दों को सचित्र दर्शाया गया बड़े चित्र	थार मरुस्थल को दर्शाने वाले भारत के मानचित्र अरावली की स्थिति और वर्षा पर इसके प्रभाव को दर्शाने वाले चित्र मुख्य शब्दों के लिए- शब्द-दीवार शब्दावली फ्लैश कार्ड	भारत के दिए गए मानचित्र पर निम्नलिखित को चिह्नित कीजिए - थार मरुस्थल अरावली दक्षिण-पश्चिमी मानसून की दिशा थार मरुस्थल के मरुस्थल होने के कारण बताइए।

उद्देश्य	गतिविधि और रणनीति	आवश्यकतानुसार बदलाव	सामग्री	मूल्यांकन
पश्च-पठन के दौरान की जाने वाली गतिविधि - विद्यार्थियों से, रेगिस्तान के बारे में उनके ज्ञान का प्रयोग करवाना	**गतिविधि :** विद्यार्थी अरावली की स्थिति को दर्शाते हुए शंकु (कोन) रखेंगे और बताएँगे कि थार मरुस्थल में कम बारिश क्यों होती है। (शंकु के स्थान पर विद्यार्थी खुद पहाड़ों,हवाओं और उसके प्रभाव की स्थिति बताने के लिए खड़े होते हैं।) **कौशल विकास** सुनना समझना पढ़ना मौखिक भाषा स्थानिक और मोटर कौशल **रणनीति :** मानसिक चित्रण **गतिविधि :** “अगर आप रेगिस्तान में फँस जाएँ तो कैसे जीवित रहेंगे?” उनसे कहा जाएगा कि उन्होंने अवधारणा से जो कुछ सीखा है उसके आधार पर एक कहानी लिखें और फिर पढ़कर सुनाएँ। **कौशल विकास :** रचनात्मक लेखन पढ़ना समझना लिखित अभिव्यक्ति अनुक्रमण	लेखन विकार (डिस्ग्रेफिया) वाले विद्यार्थी के लिए सहायक लेखक मौखिक उत्तर- कक्षा में रिकॉर्ड किए हुए या व्यक्त किए गए। चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्ति	रिक्त पूर्ति अनुच्छेद- नीचे नमूना दिया गया है।	अनुकूलित पाठ को दो बार पढ़िए। अब उसे बिना देखे रिक्त पूर्ति अनुच्छेद का उत्तर दीजिए। समाचार पत्र का लेख पढ़िए संक्षेपण कीजिए और उसके लिए प्रश्न बनाइए। (यह आलेख, आगे के लिए सोची गई, शोध आधारित गतिविधि की पूर्ववर्ती सामग्री के रूप में कार्य करेगा।)

रिक्त पूर्ति अनुच्छेद का नमूना

सारांश को पूरा करने के लिए बॉक्स में दिए गए शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

थार मरुस्थल (अ) ---------- के पश्चिमी किनारे पर स्थित है। यह मुख्य रूप से (आ) ---------- और (इ) ---------- राज्यों में पाया जाता है। इसमें (ई) ---------- अर्धचन्द्राकार (उ) ---------- होते हैं जिन्हें बारचन्स कहते हैं। यह एक (ऊ) ---------- क्षेत्र है जहाँ बहुत ही (ए) ---------- वर्षा होती है। यहाँ वनस्पति भी कम है। अरावली की (ऐ) ---------- के परिणामस्वरूप दक्षिण-पश्चिम मानसून (ओ) ---------- के पास से निकल जाता है।

आवश्यकतानुसार बदलाव : पढ़ने में कठिनाई महसूस करने वाले विद्यार्थी के लिए रिकॉर्ड किया गया पाठ्य,कम दृष्टि वाले विद्यार्थियों के लिए बड़े अक्षरों में लिखना। (यह सुविधा इसलिए दी जाती है ताकि इन विशेष विद्यार्थियों को स्वतन्त्र रूप से कार्य करने में मदद मिल सके।)

समाचार पत्र का विश्लेषण

निम्नलिखित अनुच्छेद पढ़िए। फिर इस अनुच्छेद के आधार पर कम-से-कम तीन उपयुक्त प्रश्न बनाइए।

बात बहुत पुरानी नहीं है। राजस्थान के जैसलमेर जिले के दूरस्थ समुदाय बाजरे की एकमात्र वार्षिक फसल पर अपना गुज़ारा किया करते थे और यह फसल भी इन्द्र देव के रहमोकरम पर निर्भर थी। कठोर ग्रीष्मकालीन सूर्य की 48 डिग्री सेल्सियस गर्मी, निरन्तर आने वाले रेतीले तूफ़ान और पानी की कमी के कारण जीवन-यापन करना किसी चुनौती से कम नहीं था। सूखे का प्रकोप और दूर तक दिखाई देने वाले रेत के टीलों पर ऊँट व अन्य पशुओं के अस्थि-कंकाल की काली धुन्धली छाया। लेकिन 1980 के दशक के मध्य में इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना के शुरू होने के बाद सब कुछ बदल गया। इस परियोजना के अन्तर्गत सात जिले आते हैं : जैसलमेर,बाड़मेर,बीकानेर,जोधपुर,चुरू,हनुमानगढ़ और श्री गंगानगर। इस नहर के आने से यहाँ का परिदृश्य और लोगों का जीवन ही बदल गया है। जब से यहाँ पेयजल और सिंचाई के लिए पानी का मिलना निश्चित हो गया है तब से उत्तर-पश्चिम राजस्थान के बंजर क्षेत्र उपजाऊ खेतों में बदल गए हैं और अब यहाँ साल में दो फसलें पैदा होती हैं। जैसलमेर से 75 किलोमीटर दूर मोहनगढ़ पंचायत में हमीर नाडा की ढाणी के सरपंच हसम खान कहते हैं, "अब हम गेहूँ,ग्वार,सरसों,मूँगफली,जीरा और चने की खेती करते हैं।"

आत्मचिन्तन

पाठ को पढ़ाने के दौरान पूरी कक्षा ने चित्रों व दृश्य-संकेतों के प्रति अच्छी प्रतिक्रिया दी। विचार-मन्थन सत्र और ड्राइंग की गतिविधियों ने विद्यार्थियों को व्यस्त रखा तथा उन्हें टॉपिक के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया (पूर्व-पठन)। अक्षर-विभाजन की प्रक्रिया और मुख्य शब्दों का अर्थ समझाने के लिए चित्रों का उपयोग करने से विद्यार्थियों को शब्दार्थ समझने में मदद मिली। चूँकि यह टॉपिक अमूर्त था इसलिए इसे छोटे अनुच्छेदों में विभाजित किया गया, दृश्य रूप में प्रस्तुत किया गया तथा इसमें गतिसंवेदी कार्यकलाप शामिल किए गए (पठन के दौरान)। रिक्त पूर्ति अनुच्छेद जैसी कई पश्च-पठन गतिविधियों ने मुख्य शब्दों को याद रखने में विद्यार्थियों की मदद की और उन्होंने ऐसा बख़ूबी किया। इन गतिविधियों ने बच्चों को सम्बन्धित अवधारणा के बारे में ज़रा हटकर सोचने का मौक़ा दिया। यहाँ पर प्रश्नों के ऐसे ही कुछ उत्तर दिए गए हैं।

उदाहरण के लिए चर्चा के दौरान विद्यार्थियों द्वारा उठाए गए कुछ प्रश्न इस प्रकार थे (यहाँ इनका शब्दशः उल्लेख किया गया है)।

1. गर्म रेगिस्तान में लोग गोरे होते हैं लेकिन जब आप चेन्नई जाते हैं तो लोग काले होते हैं, क्यों? काला होने के लिए उनके शरीर (रेगिस्तान) में मेलेनिन अधिक होना चाहिए।
2. क्या नखलिस्तान में मछली होती है? मैं जीवित रहने के लिए मछली खाऊँगा।

विद्यार्थियों को समाचार पत्र का विश्लेषण करने वाला भाग थोड़ा मुश्किल लगा क्योंकि उन्हें वहाँ एक अपरिचित गद्यांश पढ़ना था। उन्हें अपरिचित शब्द पढ़ने, समझने और सार प्रस्तुत करने में परेशानी हुई। वाक्यों में प्रयोग करके और प्रश्नोत्तरी के माध्यम से उन शब्दों को समझाया गया ताकि वे स्वयं प्रासंगिक अर्थों तक पहुँच सकें। विद्यार्थियों ने लेख की मूल बातें बिन्दुओं में प्रस्तुत कीं और माइंड मैप के माध्यम से निरूपित किया। चित्र नीचे दिया गया है।

संक्षेपण में विद्यार्थियों को दिक्क़त हुई लेकिन जब शिक्षक ने संकेत देने के लिए प्रश्न पूछे तो विद्यार्थी समुचित उत्तर दे पाए। इन प्रश्नों के बावज़ूद विद्यार्थियों को अपने शब्दों में विचार व्यक्त करना चुनौतीपूर्ण लगा। विद्यार्थियों की सोच-विचार की प्रक्रिया का मार्गदर्शन करने के लिए शिक्षिका ने अपने द्वारा किया हुआ संक्षेपण दिया, विद्यार्थी एक अन्तराल के बाद भी लिखने में सक्षम थे। इस सत्र के समापन के लिए विद्यार्थियों से कहा गया कि वे अनुच्छेद के आधार पर तीन उपयुक्त प्रश्न बनाएँ। नीचे नमूने दिए गए हैं-

नमूना 2 : सरोजिनी नायडू द्वारा रचित अँग्रेज़ी कविता 'द इंडियन वीवर्स' का पाठ्य अनुकूलन।

यह लघु कविता बिम्ब-विधान और अमूर्त विचार की दृष्टि से समृद्ध है। सन्दर्भ के लिए यहाँ कविता का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। बुनकर दिन भर विभिन्न रंग के तरह-तरह के कपड़े बुनते हैं। हर रंग और दिन के विभिन्न समय व्यक्ति के जीवन के विविध चरणों का प्रतीक हैं। भोर के समय नवजात शिशु के लिए चमकदार नीले रंग का कपड़ा बुना जाता है जो बच्चे के जन्म और ख़ुशी का प्रतीक है। दिन/शाम के झुटपुटे में रानी के विवाह के घूँघट के लिए चमकीला बैंगनी और हरे रंग का कपड़ा बुना जाता है जो जीवन के उत्सवों को सूचित करता है। अन्त में रात और शाम को सफ़ेद रंग का कपड़ा/कफ़न बुना जाता है जो मृत्यु को दर्शाता है। रंग विभिन्न भावनाओं, मनोदशाओं और विचारों का प्रतीक हैं, जैसे कि लाल रंग रोमानी मूड या प्रेम और ख़तरे का प्रतीक है। दिन के विभिन्न समय जीवन के विभिन्न चरणों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जैसे सुबह का समय बचपन को, शाम का समय युवावस्था को और रात का समय मृत्यु या जीवन के अन्त को प्रदर्शित करता है।

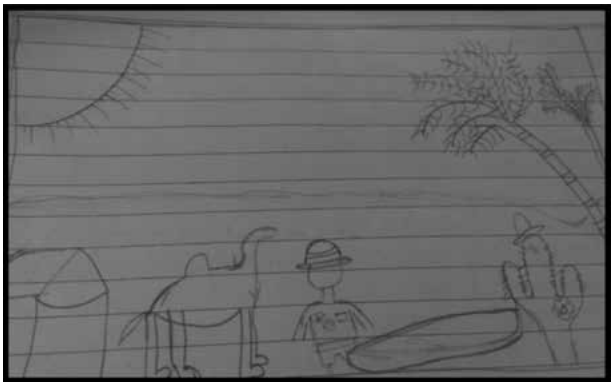

एक विद्यार्थी द्वारा रेगिस्तान का निरूपण। कुछ अन्य विद्यार्थियों ने रेगिस्तान में रेतीले तूफ़ान को चित्रित करने की कोशिश भी की।

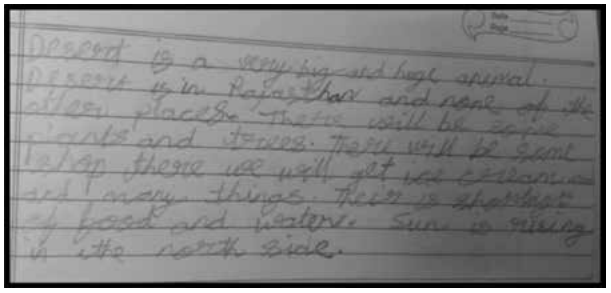

इस बच्चे को रेगिस्तान का कोई अन्दाज़ा नहीं था। हालाँकि अन्य विद्यार्थियों ने काफ़ी अच्छा वर्णन किया।

पाठ्य के अनुकूलन के कारण

विद्यार्थियों की प्रोफ़ाइल और शिक्षण के एक परीक्षण को देखकर यह बात स्पष्ट हो गई कि विद्यार्थियों को समय सम्बन्धी

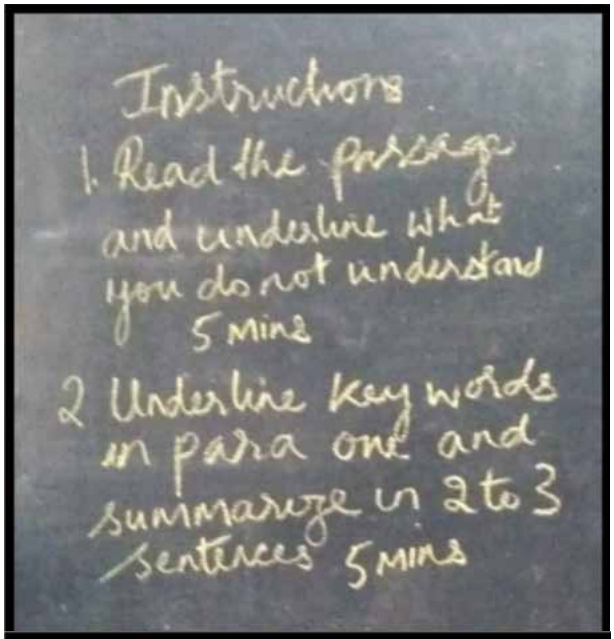

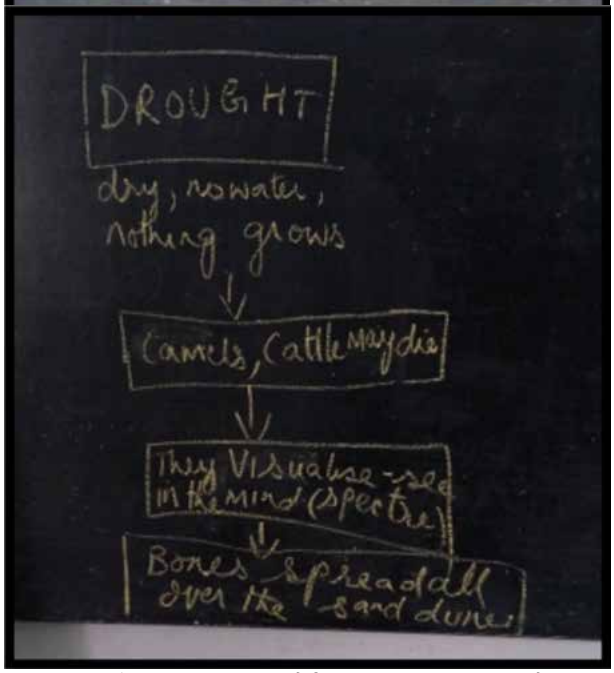

अवधारणाएँ, रूपक व उपमा जैसे समृद्ध शब्द-बिम्ब और कुछ अपरिचित प्रमुख शब्द समझने में मुश्किल हुई। उनके अधिगम को सुविधाजनक बनाने के लिए पाठ्य का अनुकूलन करना आवश्यक था।

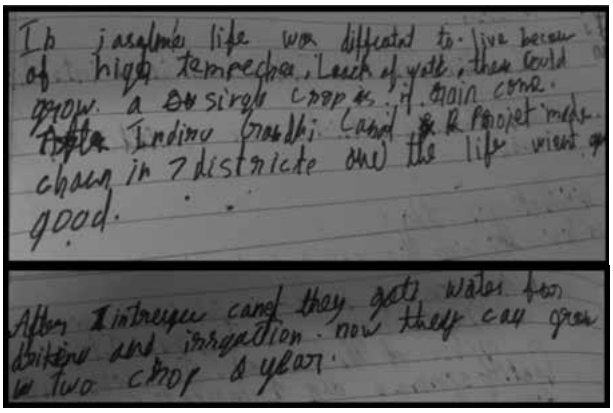

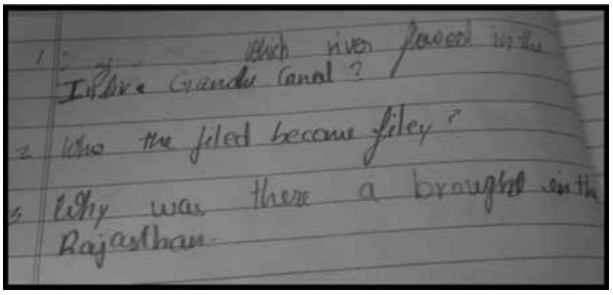

इन चित्रों में समाचार पत्र के लेख का सारांश और उस पर उनके द्वारा तैयार किए गए प्रश्नों का नमूना दिया गया है। प्रश्न 2 में = वास्तव में who का अर्थ 'how' है और प्रश्न 3 में वास्तव में brought का अर्थ 'drought' है (विपर्यय)।

यहाँ अनुकूलन एकदम अलग रूप में इसलिए किया गया ताकि पूरी कक्षा उसे बेहतर तरीक़े से सीख सके। यूँ तो पाठ बहुत लम्बा नहीं था लेकिन अवधारणाएँ जटिल और अमूर्त थीं। इस भाग का फोकस पूर्व-पठन पर है। शब्द भण्डार के निर्माण के लिए शुरू में मानसिक चित्रण और शब्दों को पढ़ने का अभ्यास करवाने की रणनीति अपनाई गई है ताकि विद्यार्थी पाठ में आए शब्दों से परिचित हो सकें। इसका एक उद्देश्य इस ग़लत धारणा को दूर करना भी था कि कविता को समझना कठिन होता है। पूर्व-पठन वाले भाग की पाठ योजना यहाँ दी गई है।

उद्देश्य	गतिविधि और रणनीति	सामग्री	मूल्यांकन
• विद्यार्थियों को चित्र दिखाए जाएँगे • कविता पढ़ी जाएगी • विद्यार्थी मुख्य शब्द पढ़ेंगे • विद्यार्थी मुख्य शब्द और चित्रों का मिलान करेंगे	**रणनीति :** देखिए और बताइए फ्लैशकार्ड **गतिविधि :** शिक्षक द्वारा छन्द पढ़े जाते समय पठन कार्ड दिखाए जाते हैं। प्रस्तुति दिखाते समय शिक्षक के स्पष्टीकरण के साथ पठन कार्ड दिखाए जाते हैं।	पॉवर पॉइंट प्रस्तुति पाठ्य पठन कार्ड छन्द-1Break of Day, New Born, Halcyon छन्द-2Fall of night, plumes, Marriage veil छन्द-3Shroud, Night, moonlight chill	फ्लैशकार्ड- मुख्य शब्द पढ़ना। पठन कार्ड पर दिए हुए शब्द,विद्यार्थियों को सम्बन्धित चित्रों को लेबल करने में सक्षम होना चाहिए।
• विद्यार्थी दिन की समय रेखा अनुक्रमित करेंगे • विद्यार्थी पाठ्य में रंगों के साथ भावनाओं की मैपिंग करेंगे।	**रणनीति :** स्पर्शी अधिगम छाँटना चर्चा- दिनचर्या **गतिविधि :** विद्यार्थी शब्द पढ़कर दिन से सम्बन्धित शब्द छाँटेंगे	पठन कार्ड विशिष्ट/अलग चित्र कैंची और गोंद	पठन कार्ड और चित्र का प्रयोग करना,विद्यार्थियों को दिन की समय रेखा अनुक्रमित करने में सक्षम होना चाहिए।

उद्देश्य	गतिविधि और रणनीति	सामग्री	मूल्यांकन
• विद्यार्थी पाठ्य में रंगों के साथ भावनाओं की मैपिंग करेंगे।	**रणनीति :** रोल प्ले शिक्षक द्वारा उतार-चढ़ाव के साथ आदर्श पठन **गतिविधि :** उल्लिखित भावना का मूकाभिनय छोटा-सा एक अनुच्छेद पढ़ा जाता है और विद्यार्थियों को भावना का नाम बताने को कहा जाता है।	रंगीन कार्ड पठन कार्ड - मुख्य शब्द पठन कार्ड - भावनाएँ तीन वाक्यों के अनुच्छेद,उदाहरण के लिए - Raja missed all his busses back home. He met a close friend who offered to drop him home.	एक भावना का प्रदर्शन किया,विद्यार्थियों को पाठ पर आधारित भावना शब्द का उपयोग करने में सक्षम होना चाहिए,उचित पठन कार्ड दिखाना चाहिए। विद्यार्थी को भावना वाले पठन कार्ड को देखकर सम्बन्धित रंग कार्ड से उसका मिलान करने में सक्षम होना चाहिए और रंग कार्ड देखकर सम्बन्धित भावना वाले कार्ड से उसका मिलान करने में सक्षम होना चाहिए।

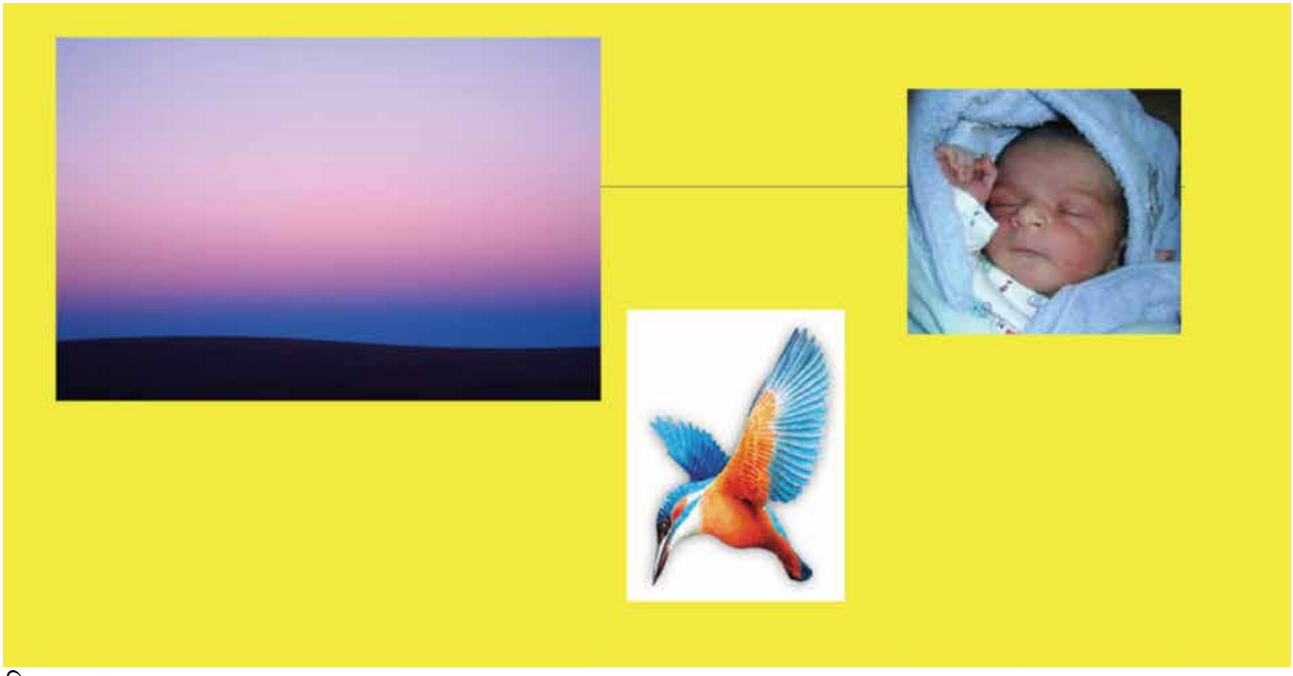

चित्र- 1

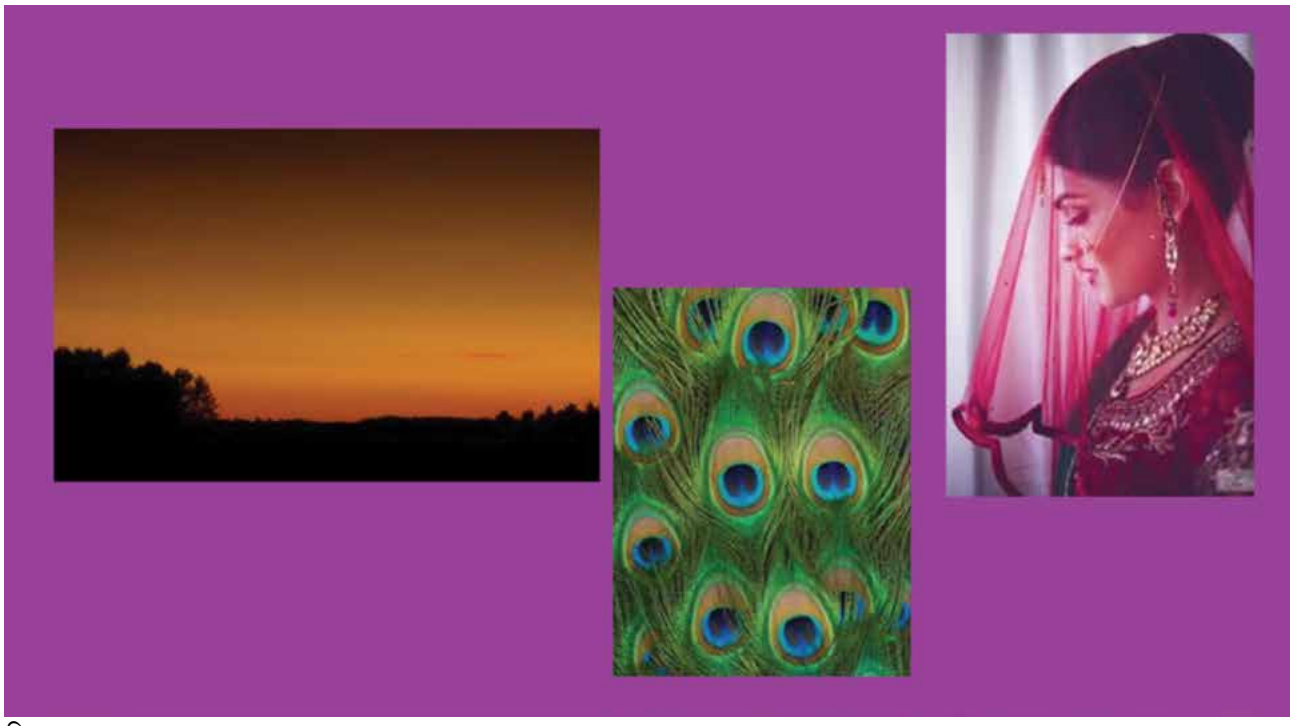

चित्र- 2

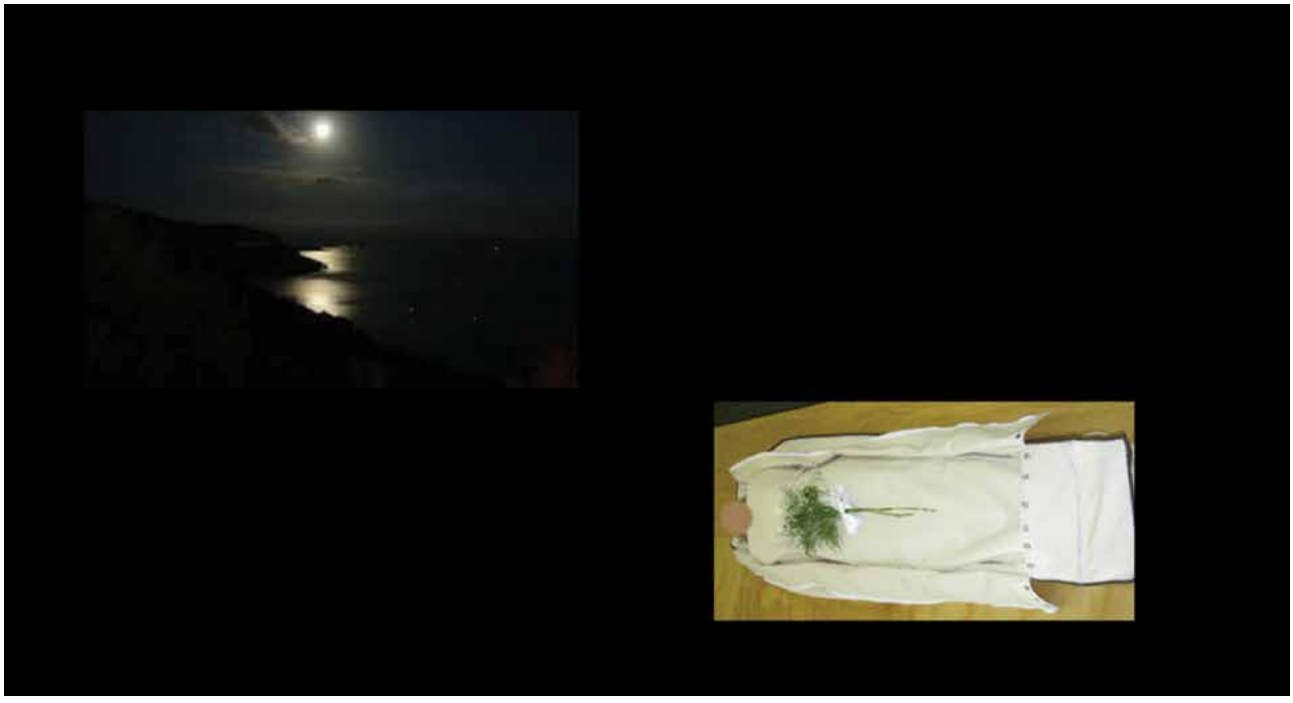

चित्र- 3 : चित्र दिखाने से शब्द भण्डार और अवधारणा विकसित करने में मदद मिली।

पाठ्य निरूपण :

Indian Weavers: Sarojini Naidu

DURING READING: 1

POEM Word	Meaning
break of day	dawn
garment	cloth
new-born	baby
fall of night	dusk
plumes	feather

Objectives : Should know – poem, rhyming , emotions
Will understand – main idea via pictures, table – compare & contrast, explanation

Weavers, weaving at break of day,
Why do you weave a garment so gay?
Blue as the wing of halcyon wild
We weave the robes of a new-born child.

Weavers, weaving at fall of night,
Why do you weave a garment so bright?
Like the plumes of a peacock, purple and green
We weave the marriage veils of a queen

Weavers, weaving solemn and still
What do you weave in the moonlight chill?
White as a feather and white as a cloud
We weave a dead man's funeral shroud.

Stage of life	Time of day	cloth	colour	Compared to	emotion	Occasion	Person
1. Birth	break of day	robe	blue	Halcyon	Gay	birth	new born
2. Youth	fall of night	veil	purple & green	Peacock	Excitement	wedding	queen/bride
3. Death	moonlight	shroud	white	Feather & cloud	Solemn & still	funeral	dead man

चित्र-4 *: पूरी कविता को उपर्युक्त चित्र में दिखाई गई तालिका के अनुसार पेश किया गया। पाठ पढ़ने और स्पष्टीकरण के दौरान इस प्रकार के निरूपण, पूर्व में दिखाए गए चित्र और अनुच्छेद को छोटे टुकड़ों में विभाजित करने से काफ़ी सहायता मिली। लेकिन इन सबके बावजूद एक विद्यार्थी पाठ को नहीं समझ पाया। शब्दों की बौछार से उसे कोई समस्या नहीं हुई पर पाठ्य की नकल करके उसे तालिकाबद्ध करने में उसे कठिनाई हुई। उसने अगली गतिविधि में बेहतर प्रदर्शन किया जिसमें समझ के साथ सुनना शामिल था।*

Indian Weavers: Sarojini Naidu

During Reading 2- Read each stanza. Discuss questions that follow:

Weavers, weaving at break of day,	*Weavers, weaving at fall of night,*	*Weavers weaving solemn and still*
Why do you weave a garment so gay?	*Why do you weave a garment so bright?*	*What do you weave in the moonlight chill?*
Blue as the wing of halcyon wild	*Like the plumes of a peacock, purple or green*	*White as a feather and white as a cloud*
We weave the robes of a new-born child.	*We weave the marriage veils of a queen*	*We weave a dead man's funeral shroud*
1. Who is the poet addressing?	1. State the time mentioned in this verse	1. Mention the time of reference
2. When are they weaving the cloth?	2. What type is being woven here?	2. What is the colour of the cloth?
3. What is being compared?	3. What is the colour of the plumes?	3. What is the weaver's reply?
4. What is the weavers' reply?	4. What is the veil?	4. Trace the words in the stanza that mean
		a) calm b) serious

चित्र-5 *: शिक्षक द्वारा आदर्श पठन और प्रश्नोत्तर करने पर सभी विद्यार्थी मुख्य शब्दों के साथ चित्रों की मैपिंग कर पाए और उन्होंने इन साधनों का उपयोग, समझ के साथ पढ़ने को बढ़ावा देने के संकेतों के रूप में किया।*

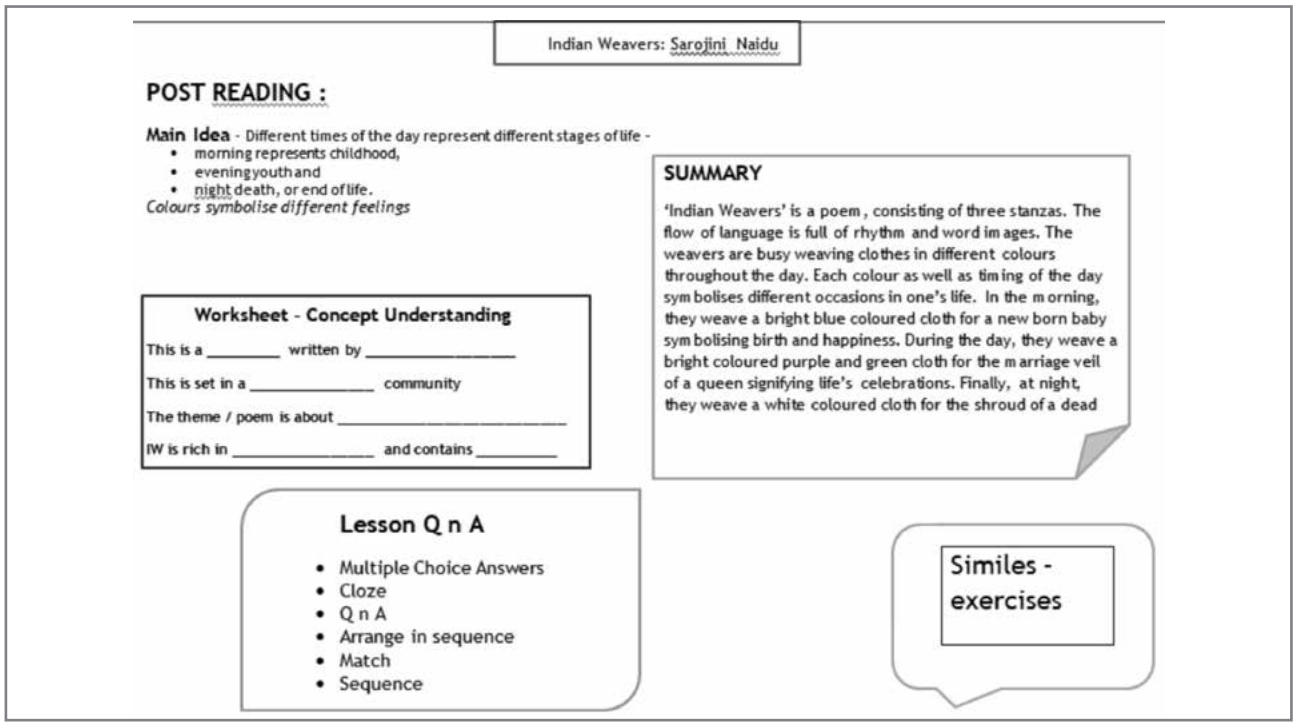

***चित्र-6** : यह पश्च-पठन सम्बन्धी कार्यों की रूपरेखा है जो मूल्यांकन की ओर ले जाएगी। बृन्दावन में हम विद्यार्थियों को प्रश्न पत्रों के प्रश्न पढ़ना और समझना भी सिखाते हैं। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (NIOS) के प्रश्न अधिकतर अनुप्रयोग पर आधारित होते हैं। इसलिए निर्देशों को समझने पर ज़ोर देना समझ के साथ पढ़ने के कार्यक्रम का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि इसी से सही परिणाम मिलते हैं।*

References:

Beck, Isabel L, and Margaret G McKeown. *Improving Comprehension With Questioning The Author.* New York, N.Y., Scholastic, 2006,.

Coiro, Julie. 'Predicting Reading Comprehension On The Internet.', *Journal Of Literacy Research*, vol 43, no. 4, 2011, pp. 352-392. *SAGE Publications*, doi:10.1177/1086296x11421979.

Israel, Susan E, and Gerald G Duffy. *Handbook Of Research On Reading Comprehension, Second Edition*. New York, Guilford Publications, 2016,.

Kieffer, Michael J., and Nonie K. Lesaux. 'Breaking Down Words To Build Meaning: Morphology, Vocabulary, And Reading Comprehension In The Urban Classroom.' *The Reading Teacher*, vol 61, no. 2, 2007, pp. 134-144. *Wiley-Blackwell*, doi:10.1598/rt.61.2.3.

Rose, Terry L. 'Effects Of Illustrations On Reading Comprehension Of Learning Disabled Students.' *Journal Of Learning Disabilities*, vol 19, no. 9, 1986, pp. 542-544. *SAGE Publications*, doi:10.1177/002221948601900905.

'Teaching Reading Comprehension', *Bellarmine.Edu*, 2017, https://www.bellarmine.edu/docs/default-source/education_docs/Reutzel_Cooter_Comprehension_TCR_5e_2.aspx.

Vellutino, Frank R. et al. 'Differentiating Between Difficult-To-Remediate And Readily Remediated Poor Readers.' *Journal Of Learning Disabilities*, vol 33, no. 3, 2000, pp. 223-238. SAGE Publications, doi:10.1177/002221940003300302.

"Francis Bacon Quotes." BrainyQuote.com. Xplore Inc, 2017. 24 December 2017. https://www.brainyquote.com/quotes/francis_bacon_399408

APA Style Citation
Francis Bacon Quotes. (n.d.). BrainyQuote.com. Retrieved December 24, 2017, from BrainyQuote.com Web site: https://www.brainyquote.com/quotes/francis_bacon_399408

वीना वीना वेंकटराम् बृन्दावन एजुकेशन ट्रस्ट, बेंगलूरु के सीनियर सेंटर में समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने माध्यमिक स्तर पर अँग्रेज़ी, गृह विज्ञान, अर्थशास्त्र और बिज़नेस स्टडीज़ जैसे कई विषय पढ़ाए हैं। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर भी अर्थशास्त्र और बिज़नेस स्टडीज़ जैसे विषय पढ़ाए हैं। पिछले 17 वर्षों से वे बृन्दावन के साथ हैं। बृन्दावन में आने से पहले वे 15 वर्षों तक मुख्यधारा वाले स्कूल में पढ़ाती रही हैं। उन्होंने अर्थशास्त्र में एमए के अलावा एमएड की डिग्री भी प्राप्त की है। उनसे Brindavan.srcentre@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

श्वेता चन्द्रशेखर बृन्दावन एजुकेशन ट्रस्ट बेंगलूरु के सीनियर सेंटर में समन्वयक और विशेष शिक्षिका के रूप में कार्यरत हैं। पिछले 9 वर्षों से वे बृन्दावन के साथ हैं। इससे पहले उन्होंने N.I.E. के साथ काम किया। वे संचार और मनोविज्ञान में बीए, अँग्रेज़ी में एमए और समावेशन एवं विशेष शिक्षा में एमए की डिग्री प्राप्त कर चुकी हैं। उनसे cshekhar.shweta@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

नेहा पन्त लगभग एक साल से बृन्दावन एजुकेशन ट्रस्ट, बेंगलूरु में कार्यरत हैं। वे पूर्व-NIOS, एसएसएलसी और उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए विशेष शिक्षिका के रूप में कार्य करती हैं। वे बिज़नेस स्टडीज़, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और जनसंचार जैसे विषय पढ़ाती हैं। वे विषय-आधारित गतिविधियाँ भी आयोजित करती हैं जो क्रोध-प्रबन्धन और जीवन कौशल के विकास में सहायता करती हैं। बृन्दावन में आने से पहले उन्होंने दो साल तक एक समावेशी व्यवस्था में कार्य किया। वे मनोविज्ञान, समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र में बीए, पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्र में विशेषज्ञता के साथ शिक्षा में एमए और विशेष शिक्षा में डिप्लोमा प्राप्त कर चुकी हैं। उनसे np101091@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल

Printed and Published by Manoj P on behalf of Azim Premji Foundation for Development; Printed at Suprabha Colorgrafix (P) Ltd., No. 10, 11, 11-A, J.C. Industrial Area, Yelachenahalli, Kanakapura Road, Bangalore 560062.

Published at Azim Premji University Pixel B Block, PES College of Engineering Campus, Electronics City, Bangalore 560100;
Editor: Prema Raghunath

अगला अंक

शिक्षा में शासकीय नवाचारी पहल

Earlier Issues of the Learning Curve may be downloaded from **http://teachersofindia.org/en/periodicals/learning-curve** or **http://www.azimpremjifoundation.org/Foundation_Publications or http://azimpremjiuniversity.edu.in/SitePages/resources-learning-curve.aspx**

No. 134, Doddakannelli
Next to Wipro Corporate Office
Sarjapur Road, Bangalore - 560 035. India
Tel: +91 80 6614 4900/01/02 Fax: +91 80 6614 4903
E-mail: learningcurve@azimpremjifoundation.org
www.azimpremjifoundation.org

Also visit Azim Premji University website at
www.azimpremjiuniversity.edu.in

Azim Premji University

A publication from
Azim Premji University

For suggestions or comments and to share your views or personal experiences, do write to us at **learningcurve@azimpremjifoundation.org**